दो सूर्यों का सामना

आचार्य श्री रामलालजी म.सा.

©

राम चमक रहे भानु समाना

प्रकाशक

साधुमार्गी पब्लिकेशन

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

दो सूर्यों का सामना

आचार्य श्री रामलालजी म.सा.

प्रथम संस्करण : अप्रैल, 2020 प्रतियाँ 5,000

मूल्य : 100/–

ISBN 978-93-86952-77-6

प्रकाशक :

साधुमार्गी पब्लिकेशन

अन्तर्गत– श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग

श्री जैन पी.जी. कॉलेज के सामने, नोखा रोड

गंगाशहर, बीकानेर 334401 (राज.)

दूरभाष : 0151-2270261, 3292177, 0151-2270359

visit us : www.sadhumargi.com

मुद्रक :

सांखला प्रिंटर्स

विनायक शिखर, शिवबाड़ी रोड

बीकानेर 334003 (राज.)

सूर्य नगरी में 'सूर्य'

जैन धर्म में एक ऐसी घटना घटी है जिसमें दो वासुदेवों का साक्षात् मिलन न होते हुए भी मिलन माना गया है। यह मिलन माना गया है कृष्ण वासुदेव और पद्मनाथ वासुदेव का। वस्तुतः यह उनका साक्षात् मिलन नहीं था। दोनों के शंखनाद को ही उनके मिलन की संज्ञा दे दी गयी है। हालांकि इस प्रकार के मिलन को भी आश्चर्य माना गया है क्योंकि जैन धर्म की मान्यतानुसार इनका मिलन संभव है ही नहीं। जैन शास्त्रों की मान्यता है कि दो तीर्थंकर, दो चक्रवर्ती, दो वासुदेव, दो बलदेव और दो प्रतिवासुदेव कभी एक साथ नहीं होते।

यदि व्यवहार में भी देखें तो कभी ऐसा अवसर नहीं आता जब दो सूर्य या दो चन्द्र एक साथ दिखते हों। इन दोनों के आमने-सामने आने की घटना कभी सुनी या देखी भी नहीं गयी। कलियुग में भी जुलाई, 2019 के पहले तक ऐसा नहीं देखा गया। लेकिन जुलाई, 2019 में ऐसा हुआ। यह मिलन हुआ राजस्थान के जोधपुर शहर में। जोधपुर यानी सूर्य नगरी। इस सूर्य नगरी में एक और सूर्य का आगमन हुआ था। दूसरे सूर्य को लोक व्यवहार में आचार्य रामलाल जी म. सा. के नाम से जाना जाता है। संसार के प्राणियों के लिए आचार्य श्री की भूमिका भी सूर्य से कम नहीं है।

जिस तरह नभ में स्थित सूर्य संसार को प्रकाशित करता है, उसी तरह आचार्य श्री रामलाल जी भी पृथ्वी पर रहने वाले लोगों के अंतर्मन को प्रकाशित करते हैं। ऊपर वाला सूर्य बाहरी अंधकार को समाप्त करता है तो जोधपुर में विराजित सूर्य सम आचार्य रामलाल जी भीतर (हृदय में) उजियारा फैलाते हैं। सूर्य की किरणें शारीरिक ऊर्जा और उष्मा प्रदान करती हैं तो चतुर्विध संघ का नेतृत्व करने वाले आचार्य प्रवर की वाणी सूर्य की किरणों के समान लोगों के अंतर्मन को प्रकाशित कर उर्जित और उष्मित करती है।

सूर्य नगरी में आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. की उपस्थिति की साक्षी बने लाखों लोग। इनमें से बहुत सारे लोगों ने इनकी वाणी का लाभ

लेकर अपने अंतर्मन को प्रकाशित किया। इस प्रकाश ने बहुतों को सही राह दिखायी जिससे वे लोग सही दिशा में कदम बढ़ा सके।

ऊपर का सूर्य पूरे संसार को प्रकाशित तो करता है लेकिन यह भी सच्चाई है कि जिस समय वह धरती के एक हिस्से को प्रकाशित कर रहा होता है, उसी समय दूसरा हिस्सा अंधकार में डूबा रहता है। इसी तरह जब धरती के सूर्य आचार्य रामलाल जी जोधपुर में लोगों के अंतर्मन में ज्ञान का प्रकाश फैला रहे थे उस समय बहुत से लोग अपनी मजबूरी वश या अंतराय कर्मों की वजह से उससे वंचित थे। उन वंचित लोगों तक भी उनकी वाणी को पहुंचाने के लिए उस दौरान फरमाये गए व्याख्यानों को हम संकलित करके लाए हैं। इस संकलन का नाम है 'दो सूर्यों का सामना'।

दो सूर्यों का सामना पढ़िए और अपने परिचितों को पढ़ाइए। पढ़िए ही नहीं वरन् इसमें कही गयी बातों पर चितंन-मनन कीजिए और अपने जीवन में उतारिए। जो भी ऐसा करेगा, उसका जीवन ऊर्ध्वगामी बनेगा। वह अपना आत्म कल्याण करेगा। वह मोक्ष की दिशा में गति करेगा। वह बार-बार जन्म-मृत्यु के बंधन से छुटकारा पा सकता है।

इसके प्रकाशन में गलतियों से बचने का तो पूरा प्रयास किया ही गया है, भाव भी वही रखने का प्रयास है, जो आचार्य श्री ने व्याख्यान फरमाते हुए व्यक्त किये थे। सारी सतर्कता के बावजूद आचार्य श्री के भावों को जस-का-तस व्यक्त करने में हमसे कोई चूक हो गयी हो तो यह हमारी कमी है। अपनी इस कमी के लिए हम क्षमा प्रार्थी हैं। क्षमा के साथ हम यह भी चाहेंगे कि पाठक हमारी गलतियों को हमें बतायें, जिससे भविष्य में हम उन गलतियों से बच सकें। हम उनके आभारी होंगे जो किसी भी प्रकार की त्रुटि से हमें अवगत करायेंगे।

संयोजक

साधुमार्गी पब्लिकेशन

अन्तर्गत श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

संघ के प्रति अहो भाव

हे पितृ तुल्य संघ! हे आश्रयदाता संघ!

संसार के प्रत्येक जीव की रक्षा के लिए सतत प्रयत्नरत संघ! तुम्हारी शीतल छांव तले हम अपने परिवार के साथ तप-त्याग से युक्त आध्यात्मिक, सुखद जीवन जी रहे हैं। तुम्हारे ही आश्रय में रहकर हमने अपने नन्हे चरणों को आध्यात्मिकता की दिशा में बढ़ाया है। तुमने ही हमें आत्मा के अन्वेषण हेतु प्रेरित किया। तुम्हारी ही प्रेरणा से प्रेरित होकर हमने अपने जीवन को सन्मार्ग की ओर बढ़ाया है। इस हेतु हम संघ का अभिवादन करते हैं।

संघ ने हम अकिंचन को इस पुस्तक '**दो सूर्यों का सामना**' के माध्यम से सेवा का अनुपम अवसर प्रदान किया। इस हेतु हम अपने आपको सौभाग्यशाली समझते हैं। अन्तर्भावना से संघ का आभार व्यक्त करते हुए यह विश्वास करते हैं कि भविष्य में भी परम उपकारी श्री संघ शासन हमें सेवा का अवसर प्रदान करता रहेगा।

अर्थ सहयोगी

कुशलराज गौतम चंद कोठारी
ब्यावर–चेन्नई

॥ सेवा है यज्ञकुण्ड, समिधा सम हम जलें॥

अनुक्रमणिका

1.	साथी हमारे साथ है	7
2.	खोल हिये की आंख	14
3.	उपेक्षा की अपेक्षा क्यों?	23
4.	पंचाक्षरी मंत्र	34
5.	साधना की सुरम्यता	46
6.	आंख में अंजन	56
7.	कठिनाई में शहनाई की गूंज	69
8.	रणभेरी बाज रही	83
9.	उठो! बढ़ो और बढ़ते रहो...	92
10.	सदा सुखदाई गोद धर्म की	99
11.	ज्वाला जला सकी ना ज्योति	120
12.	यह है अन्तर का राज	139
13.	प्रवाह नहीं पराक्रम	159
14.	सजे आत्म सुसाज	182
15.	ऐसी हो अन्तर की आवाज	197

11

ज्वाला जला सकी ना ज्योति

'शांति जिन एक मुज विनति'

एक गुण व्यक्ति को बहुत ऊंचा बना सकता है। एक गुण व्यक्ति को बहुत ऊंचाइयां दिला सकता है और एक दुर्गुण व्यक्ति को पतन के गर्त में डालने वाला हो जाता है। महान् यदि हमको बनना है। महापुरुष बनना है तो एक गुण की आराधना कर ली जाए। 'एके साधे सब सधे, सब साधे सब जाये।' एक को साध लो तो सारे सिद्ध हो जाएंगे। सब जगह हाथ मारने लगोगे तो न एक ही पूरा प्राप्त हो पाएगा और न सारे हाथ आ पाएंगे। मतलब एक में भी निपुण नहीं हो पाएंगे। अतः एक में योग्यता हासिल करें। एक में निपुणता हासिल करें। उस एक गुण को सही तरीके से समझ लिया—सही तरीके से जीवन में आ गया तो हमारी महानता में कोई बाधा नहीं पहुंच सकती। कोई बाधक बन नहीं सकता। मन में जिज्ञासा हो रही है कि एक गुण कौन-सा बता रहे हैं, हम झट से ले लें। सुनना एक बात है और उस गुण को जीवन में उतारना! वह बहुत कठिन है। 'धीरज मन धरी सांभलो', धीरज रखें वह गुण भी आएगा और वह गुण धीरज ही है। धैर्य ही है। कठिन परिस्थिति में व्यक्ति यदि धैर्य रख लेता है तो उसे कोई जीवन में हरा नहीं सकता। 'धीरज धर्म मित्र अरु नारी, आपत्ति काले परखिये चारी' कहा है कि धैर्य की परीक्षा करनी है तो विपत्ति के समय देखो कि मन चंचल होता है, डांवांडोल होता है या अडोल बना रहता है। विपत्ति के क्षणों में मन को अडोल बनाए रखने वाला गुण धैर्य होता है और उसकी जड़ें जितनी गहरी होगी, उतना ही व्यक्ति सुदृढ़ रहेगा। अटल रहेगा, अडोल रहेगा। दृढ़ बना रहेगा। विपत्तियां आएंगी और ऊपर से निकल जाएंगी। उसका कुछ भी बिगाड़ नहीं कर पाएगी। और यदि धैर्य नहीं है तो छोटी-छोटी बातें भी हमें डांवांडोल बना देंगी।

बातें न तो कोई छोटी होती हैं और न कोई बड़ी होती हैं। हम जिसको चाहें उसको बड़ा बना सकते हैं और जिसको चाहें उसको छोटा बना सकते हैं। जिससे मेरा प्रेम-अनुराग है वो कितने भी चांटे लगा दे तो भी उसको लाड़ लडाएंगे। पूज्य गुरुदेव कई बार इस बात को फरमाया करते थे कि एक बार एक बादशाह/सम्राट ने प्रश्न पूछ लिया कि यदि कोई मेरे चांटा लगा दे भरी सभा में, तो उससे कैसा बर्ताव करना चाहिए? लोगों ने अलग-अलग जवाब दिए। किसी ने कहा, उसको फांसी के फंदे पर चढ़ा देना चाहिए। किसी ने कहा कि उसको मार देना चाहिए। किसी ने कहा—उसको पीटना चाहिए। बहुत सारे जवाब आए किंतु एक सधा हुआ उत्तर आया कि उसको गोद में उठाना और प्रेम करना, लाड़-प्यार करना चाहिए। सारे लोग कहने लगे, क्या सम्राट को, बादशाह को चांटा जड़ने वाले को गोद में लेना चाहिए! यह कैसा जवाब है? बहुत स्पष्ट है कि भरी सभा में बादशाह को चांटा लगा कौन सकता है? वह शहजादा होगा। पोता-पड़पोता होगा जो गोद में बैठ जाएगा। गोद में बैठकर चांटा लगाएगा तो फिर क्या उसे मारना-पीटना, धक्का देना चाहिए? क्या करना चाहिए? वह कितने भी चांटे लगा दे वे हमें मंजूर हो जाएंगे क्योंकि उसके पीछे 'मेरे मन में वात्सल्य का भाव है। अपनेपन का भाव है। तो मैं उसकी बड़ी से बड़ी बात को भी नगण्य कर दूंगा। वे बातें बड़ी नहीं बन पाएंगी। 'हां, मन में यदि प्रद्वेष के भाव हैं, थोड़ा भी प्रद्वेष है तो वहां से निकलने वाली छोटी-सी बात भी विस्तार ले लेगी।'

'गीली लकड़ी में लगी हुई चिनगारी सफल नहीं होगी। बुझ जाएगी। पत्तों में, तृणों में, घास में, सूखी लकड़ी में वही चिनगारी गिरे तो प्रचंड ज्वाला का रूप ले सकती है, वैसे ही प्रद्वेष की चिनगारी कहीं भी लगेगी उस बात को बहुत विस्तार दे देगी। बहुत विस्तृत कर देगी।' हम यदि देखना चाहें द्रौपदी की एक बात कि 'अंधे के अंधे होते हैं'। यह एक बात दुर्योधन को चुभ गई और वह भीतर इतनी पीड़ा पैदा करने लगी कि मन में द्वेष की भावना बन गई। बदला लेने का भाव बन गया और उसी का परिणाम महाभारत के रूप में दुनिया को देखना पड़ा। दूसरी तरफ हम देखते हैं—रामायण में मंथरा का पार्ट, कैकेयी के द्वारा वरदान की मांग। वरदान की याचना और राम का वन गमन। बात बहुत बड़ी थी, वहां तो द्रौपदी ने केवल इतना ही कहा था कि अंधे के अंधे होते हैं और यहां तो 'यू केन गो', तुम यहां से जाओ। राम को अयोध्या से हटा देना। राजगद्दी मिल रही थी उससे वंचित कर देना। फिर

भी राम ने उस बात को छोटी माना या फिर बड़ी बात बनाई? उन्होंने उस बात को महत्त्व दिया ही नहीं। 'जो बात महत्त्व में आ जाती है वही विस्तार पा जाती है। और जो बात महत्त्व नहीं पाती वह यूं ही पड़ी रह जाती है। वह गुमनामी में खो जाती है।'

घटनाएं दोनों तरफ हुई थी—एक ने महाभारत रच दिया और दूसरी ने रामायण। राम ने इतनी तवज्जुह ही नहीं दी। विचार ही नहीं किया कि कैकेयी ने मेरे साथ ऐसा क्या कर दिया। यदि वह बात उनको चुभी होती, उनके मन में प्रद्वेष पैदा हुआ होता तो बहुत संभव है कि उसका प्रतिकार होता। उन्होंने कोई प्रतिकार नहीं किया। किंतु समय ने सारी चीजें अपने आप परिष्कृत कर दी। परिष्कार कर दिया। राम का मान घटा या बढ़ा? (प्रत्युत्तर—बढ़ा) हमें कौन-से पदचिह्नों पर चलना चाहिए? दुर्योधन के पदचिह्नों पर चलकर...। बात को खींचते-खींचते, खींचते-खींचते मरने तक उस बात को नहीं छोड़ेंगे? उसे तो नहीं छोड़ूंगा। मार दूंगा उसको। मैं मर जाऊंगा पर उसको नहीं छोड़ूंगा। मैं नरक में चला जाऊंगा किंतु सामने वाले को जिंदा नहीं रहने दूंगा। उसका बदला लेकर रहूंगा—ऐसे भी विचार आदमी के मन में आ जाया करते हैं। यह एक प्रकार से रौद्र ध्यान का भाव हो गया। वैर का अनुबंध करना—इसका बदला लेकर रहूंगा। यह वैर का अनुबंध करना है और इस प्रकार से कर्मों का बंधन होगा। उन परिणामों से क्लिष्ट कर्मों का बंध होगा फिर उसको भोगे बिना छुटकारा मिलना कठिन हो जाएगा।

भगवान महावीर ने त्रिपृष्ठ वासुदेव के भव में जो शीशा डलवाया था जिसके कानों में, उस समय उसकी ताकत नहीं थी कि वापस प्रतिकार कर सके। बदला ले सके। लेकिन उसके मन में ये भाव पैदा हुए और वही व्यक्ति कानों में कीलें ठोक रहा है। बदला ले रहा है या नहीं ले रहा है? इसलिए बदले की भावना को बनने मत दो। ये बड़ी भयंकर है। मन में कभी नहीं आये कि इसका बदला लेकर रहूंगा और वह बात बार-बार घर कर गई मन में तो आर्त ध्यान से बढ़कर रौद्र ध्यान में चली जाएगी। दूध घर में लाया जाता है। लाया ही जाता है क्योंकि वर्तमान में गाय-भैंस घर में है नहीं तो बाहर से लाया जाता है। हो सकता है कुछ घरों में आज भी गाय-भैंस हो। दुधारू जानवर होंगे। घर में गाय-भैंस का दूध या दुधारू पशु जो भी है, उनका दूध है या कैसे भी बाहर से लाए उसको गर्म किया जाता है। एक तो गर्म किया जाता है और एक औटाया जाता है। दो प्रकार से प्रक्रिया होती है। एक तो गर्म करते

हैं। जब उसमें उफान आ गया तो उसे नीचे उतार, ढककर किनारे रख देते हैं। और दूसरा होता है औटाना। औटाना होता है तो उसको रड़ाना पड़ेगा। उसको हिलाते रहना पड़ेगा नहीं तो नीचे से जल जाएगा। वैसे ही एक बात को बार-बार दिमाग में लेते रहेंगे मेरे साथ ऐसा किया कि भूल नहीं सकता। जिंदगी भर मैं याद रखूंगा। रात में सोता है और जब भी नींद खुलती है। बात याद आ रही है। यह औटाना हो रहा है। रड़ाना हो रहा है। गाढ़ा बनाना हो रहा है। उसे जितना औटायेंगे– जितनी बात बढ़ाएंगे उतना ही संक्लेशपूर्ण कर्मों का बंध होने लग जाएगा। और वह रौद्र ध्यान के भाव में चली जाएगी। जिस समय उसका उदय होगा उस समय हमारे परिणाम कितने रौद्र होंगे?

अभी सुन रहे थे सोमिल ब्राह्मण को। वह ब्राह्मण था। ब्राह्मण शांत स्वभाव का होता है। एक ब्राह्मण, जन्म से होता है और एक ब्राह्मण कर्म से होता है। कर्म से जो ब्राह्मण होता उसके लिए बताया गया है कि वह बहुत शांत होता है। समभावी होता है। समाधि में रहने वाला होता है वह! उत्तेजना में नहीं आता।

'वस्तुतः, जो तत्त्व को समझ लेता है वह उत्तेजना में क्यों आएगा? वह जान लेता है कि उत्तेजना मेरा स्वभाव नहीं यह विकार है। उत्तेजना के क्षणों को भी वह टालने का प्रयत्न करेगा।'

दो प्रकार के लोग होते हैं। एक व्यक्ति देखता है कि कब मौका मिले और कब आग लगायी जाए। वह आग लगाने का काम करता है। आग लगाने की तैयारी में रहता है। उसको मौका चाहिए और वह कोई-न-कोई बात को उठाएगा। मतलब क्रोध को पैदा करने के अवसर को डिफाइन करेगा। क्रोध पैदा करने के अवसर को ढूंढ़ेगा और वह प्रसंग को उकसाना चाहेगा। चाहे वाणी से, चाहे शरीर से– ऐसा प्रयत्न करेगा कि सामने वाले के मन में आग पैदा हो जाए। क्रोध पैदा हो जाए। वह बात बढ़े और बढ़ते-बढ़ते बढ़ती जाए। यानी एक आदमी उसको बढ़ाने की फिराक में रहता है। और दूसरा व्यक्ति? यदि आग लग रही है, लगने की तैयारी में हो तो उसके कारणों को हटाने का प्रयत्न करेगा। मतलब बुझाने का काम करेगा। आग को बढ़ने नहीं देगा। आग को बढ़ने से रोकेगा।

यह सोच मनुष्यों की है। दोनों विचार मनुष्यों के हैं। एक विचार संक्लेशी जीव का है और एक विचार शांत जीव का है। जिसको संक्लेश प्रिय होता है वह संक्लेश के अवसर ढूंढ़ा करता है। मौका मिलना चाहिए, चाहे परिवार

हो और चाहे समाज हो, जहां पर बैठा है वह मौका नहीं चूकेगा। आग लगाने वाला और आग बुझाने वाला, दोनों में से पाप किसे ज्यादा लगेगा? (प्रत्युत्तर– लगाने वाले को) आप बोल रहे हो लगाने वाले को। क्यों भाई? आग लगाने वाला भी तेउकाय के जीवों की हिंसा करता है और तेउकाय के जीवों की हिंसा आग बुझाने वाला भी कर रहा है! दोनों तेउकाय के जीवों की हिंसा कर रहे हैं। जो आग लगा रहा है वह तेउकाय के जीवों को मारेगा और जो बुझा रहा है वहां भी तेउकाय के जीवों की हानि होगी। हमको क्या प्रिय है? आप लोग आग लगाने वाले हो या आग को बुझाने वाले हो? (प्रत्युत्तर– बुझाने वाले) आप लोग बोल रहे हो कि बुझाने वाले हैं। बोलने में क्या बोल रहे यह बात अलग है। हमारा मन क्या कहता है? हम मन में बात बढ़ाने की करने वाले हैं या घटाने-बुझाने की बात करने वाले हैं? आग बुझाने से भी तेउकाय के जीवों की विराधना तो हुई। किंतु यदि जलती रहती तो कितना विस्तार लेती और कितनी हिंसा होती? उसमें कितने-कितने जीव घमासान हो जाते, जल जाते? वह बहुत सारी प्रक्रिया रुक गई। आग लगाने वाले से आग बुझाने वाले को कम पाप करने वाला बताया गया है। आग लगाने वाला तो महापाप करने जैसी स्थिति में आ जाता है– परिणाम कैसे हैं उसके आधार पर। यदि परिणाम खूंखार हैं, सोमिल ब्राह्मण जैसे परिणाम हैं तो उसके कर्मबंधन कैसे होंगे?

एक सब्जी बनाई। हलका-सा ऊपर से नमक डाला। वही सब्जी है और अच्छा नमक डाल दिया और फिर एक बार और अच्छा नमक डाल दिया। जितना नमक डालोगे तो खारापन और बढ़ेगा। तीखापन उतना ही ज्यादा आएगा। वैसे ही हमारे जैसे संक्लेश परिणाम होंगे उससे कर्मबंधन वैसा ही होता है। उसके अनुरूप होता है। हलके परिणाम हैं तो हलका बंध होता है और जटिल परिणाम है तो कर्मबंधन भी वैसे ही होंगे। उनको भोगते हुए वे उसको उसी प्रकार का परिणाम देने वाले बनेंगे। गजसुकुमाल का वृत्तांत हमने अभी अंतगडदसाओ सूत्र के माध्यम से सुना और बहुत बार सुन चुके हैं। बहुत सारी बाते हैं यदि लेना चाहें तो जीवन व्यवहार में हमारे लिए उपादेय हो सकती है। सबसे पहली बात मां के कर्तव्य की करते हैं, माता का क्या कर्तव्य होता है संतान के प्रति? जन्म देना ही पर्याप्त नहीं है। उसे संस्कारित करना, सुंदर संस्कार देना। वीरता के, धीरता के संस्कार देना। बालक को भय नहीं दिखाना चाहिए। बालक बहुत कोमल होता है। बहुत

कोमल मस्तिष्क होता है बच्चे का। यदि उसके सामने भय की बातें की गईं तो वे उसके मस्तिष्क पर जाकर आघात करती हैं और ऐसा वहां पर घाव होता है कि जिंदगी भर वह घाव मिट नहीं पाता। ठीक नहीं हो पाता। उसके भीतर भय के संस्कार जम जाते हैं और वे उसकी उन्नति के रास्ते में बाधक बन जाते हैं। उसको खुलने-घुलने नहीं देते हैं। अरे! कुछ हो जाएगा। उसके मन में डाउट, भय-शंका बनी रहेगी। इसे सबसे बड़ी बात समझनी चाहिए। थोड़े से अपने कार्य को निकालने के लिए बच्चे के साथ जैसा व्यवहार कर लिया जाता है वह उचित नहीं। उसको खिलौना मत समझो। मैंने पहले भी जंबू कुमार के प्रसंग से बात बताई थी कि वह राष्ट्र की एक धरोहर है। वह धर्म-जगत् की एक धरोहर है। राष्ट्र के लिए वह बहुत कुछ करने में समर्थ है। धर्म के लिए बहुत कुछ करने में समर्थ है।

झगड़ूशाह पेथड़शाह आदि जो महापुरुष हैं इनके नाम लिए जाते हैं। क्या कार्य उन्होंने किये कि लोग आज तक उनको याद करते हैं? वस्तुतः, किसी रूपवान को, धनवान को आदमी याद नहीं करता है। किंतु समाज के लिए जिसने जीवन समर्पित कर दिया—अपने धन को, मन को, मान-सम्मान को—सबको समर्पित कर दिया उन्हें याद करते हैं। बोलने में आज भी हम बोलते हैं किंतु करते कितना हैं? मैं नहीं कह सकता। अभी दो मुस्लिम देशों में भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को सर्वोच्च सम्मान दिया गया। दो जगह दिया ना? (सभा—तहत्ति) और मोदी ने क्या कहा? मोदी ने कहा कि यह सम्मान भारत की 130 करोड़ जनता को समर्पित है। कुछ वर्षों के बाद में इसकी और चर्चा करना, ध्यान रखना, वापस याद दिलाना। कभी-न-कभी नरेंद्र मोदी की जीवनी देखना उसमें इन दोनों सम्मानों की बात होनी नहीं चाहिए कि वहां-वहां पर सम्मान मिला। होगा या नहीं होगा (प्रत्युत्तर—होगा) आप लोग बोल रहे हो कि इसका जिक्र होगा तो जब समर्पित कर दिया तो उनका रहा कैसे? जब 130 करोड़ की जनता को समर्पित कर दिया तो उनकी चीज़ रही नहीं है। हम भी बोलते ज़रूर हैं कि यह गुरु चरणों में समर्पित है। मासखमण कर किसको समर्पित किया? गुरुदेव को समर्पित किया। तपस्या की, मासखमण किया उन्हें जब गुरु को समर्पित कर दिया तो फिर कठे रयो मासखमण? गुरुदेव के चरणों में डाल दिया तो अब थाणो कठे रयो?

अब सौंप दिया इस जीवन का, सब भार तुम्हारे चरणों में...।

बोलते हैं, बापजी मांगलिक सुना दो। 'चत्तारि सरणं पवज्जामि...' अरिहंतों की शरण को स्वीकार कर रहे हैं। सिद्धों की शरण को स्वीकार कर रहे हैं। किंतु कभी अरिहंत की शरण को स्वीकार किया? 'सिद्धे सरणं पवज्जामि' कभी सिद्ध भगवान की शरण को स्वीकार किया? 'अरिहंते सरणं पवज्जामि, सिद्धे सरणं पवज्जामि, साहू सरणं पवज्जामि।' कितनी बार सुन ली मांगलिक? एक बार भी हमने समर्पण किया? एक बार भी मन की गांठें हमने छोड़ दी? अब मेरा है ही नहीं। अष्टावक्र ऋषि की बात कुछ समय पहले कही थी कि जनक के यहां पहुंचे और वहां उन्होंने कहा– यहां तो सब चमार ही चमार हैं। ये चमड़ी को देख रहे हैं और चमड़ी के आधार पर किसी की कीमत कर रहे हैं। मतलब चमार चमड़ी की कीमत करता है। राजऋषि जनक को लगा यह आदमी खरा है। जनक ने कहा– ऋषिवर! मैं आत्मा के दर्शन करना चाहता हूं। मैं ब्रह्म के दर्शन करना चाहता हूं। क्या आप मुझे करा सकते हो? ऋषि बोले, Okay ओके, एकदम करा सकता हूं। जनक ने पूछा, कितना समय लगेगा? समय कितना लगेगा? बंधुओ! यह बताओ कितना समय लगेगा? एक महीना लगेगा या दो महीना?

आपके मन की बात बताओ कि आपको वैराग्य कब आ जाएगा? आप में से एक भाई बोल रहा पांच साल में आ जाएगा। पांच साल में पक्का है ना? पांच साल के बाद वैराग्य आ जाएगा ना? आप बोल रहे हो कि 99 प्रतिशत आ जाएगा। उसके बाद अपनी धर्मपत्नी से आज्ञा लेंगे? वैराग्य आने में एक क्षण लगता और वैराग्य आ जाता है। एक क्षण! जिनको भी वैराग्य आया एक क्षण ही लगा। प्रैक्टिस से नहीं आया। वैराग्य प्रैक्टिस से नहीं आता वह तो जगता है। गजसुकुमाल को वैराग्य आया तो कितनी देर में आया? सुने बार-बार व्याख्यान? कृष्ण वासुदेव ने कितने व्याख्यान सुने? गजसुकुमाल ने एक व्याख्यान सुना और आ गया वैराग्य। पूर्व की पुण्याई के योग बिना ये काम इतना आसान नहीं है। हां, कभी-न-कभी शुरुआत भी होती है। कभी-कभी वैराग्य इसी जन्म में भी आता है। कभी पूर्व कर्म से आ रहा है यानी पूर्व की पुण्याई काम आ गई। किंतु कभी-न-कभी तो नया वैराग्य आया ही। नहीं आया क्या? मेघ कुमार के जीव को पहली बार सम्यक्त्व रत्न मिला। पहली बार वैराग्य आया। भगवान महावीर को सम्यक्त्व कब आया? नयसार के भव में थे उस समय सम्यक्त्व के, संवेग भाव जगे। संवेग के पुष्प खिल उठे कि मुझे आत्मा का उद्धार करना चाहिए।

कभी-न-कभी शुरुआत होती है। किंतु कोई तो एक छलांग लगा लेते हैं और उसी से तर जाते हैं और कोई जन्मो-जन्मों तक इकट्ठा करता रहता है! किंतु जब जगता है, पहले की प्रैक्टिस भले कुछ रही होगी किंतु जगने में तो एक क्षण लगता है। दीये में तेल भरने में कितना टाइम लगा होगा और माचिस लगाने में? माचिस की रगड़ लगती है और एक क्षण में ज्योति प्रकट हो जाती है। ऋषि ने जनक को कहा कि एक छलांग लगाकर घोड़े पर बैठने में आपको जितना टाइम लगता है उतने टाइम में मैं आत्मा के दर्शन करा सकता हूं। जनक ने कहा कि मैं तैयार हूं। कहा, सोच लो। जनक ने कहा कि तैयार हूं मुझे आत्मा के दर्शन करने हैं। कहा कि एक संकल्प करो। ब्राह्मण संस्कृति में एक संकल्प की विधि है। क्या विधि है संकल्प की? हाथ में पानी देते है और उसके बाद कुछ संकल्प कराते हैं—यह संकल्प कराने की विधि है। अलग-अलग जगह की विधियां अलग-अलग होती हैं। उन्हें संकल्प कराया गया कि 'अब से मेरा कुछ भी नहीं है। अब से मेरा नहीं कुछ भी।' कहा कि तुम्हारा जो भी है वह दान दे दो। जो कुछ है मुझे दे दो। सब कुछ आपको दे दिया। वैदिक संस्कृति में दान बिना दक्षिणा फलीभूत नहीं होता है।

हरिश्चंद्र राजा ने राज्य दान में दे दिया। उन्हें कहा गया कि अभी तुमने दक्षिणा नहीं दी तो दान सार्थक कैसे होगा? जैसा दान वैसी दक्षिणा! एक रुपये का दान दिया तो दक्षिणा 10 रुपये की नहीं होगी। एक हजार का दान दिया तो दक्षिणा क्या होगी? जैसा दान होता है वैसी ही दक्षिणा होनी चाहिए। दक्षिणा देने के लिए राजा हरिश्चंद्र, चांडाल के यहां खुद बिकने के लिए पहुंच गए। बिकना मंजूर किंतु सत्य से मुकरना, मंजूर नहीं है। जनक को कहा गया कि अब दक्षिणा दो। जनक ने आदेश दिया कि तिजोरी में से/राज खजाने से इतने पैसे ले आओ। ऋषि ने कहा, अभी तुमने क्या बोला था? अभी तुमने मुझे सारा समर्पित कर दिया। आपने सब कुछ मुझे दे दिया—राज्य को, खजाने को मुझे समर्पित किया है। अब दक्षिणा के लिए क्या दोगे? कहां से आएगा? यह राज्य तो दे चुके हो। ऋषि ने कहा, अब राज्य तो मेरा है। दक्षिणा दो। ऐसी किंवदन्ती है या कहा जाता है कि छत्रपति शिवाजी से उनके गुरु रामदास जी ने भिक्षा मांगी तो उन्होंने राज्य समर्पित कर दिया। रामदास ने कहा, शिवा! मैं राज्य का क्या करूंगा। मैं तो संन्यासी हूं। शिवाजी ने कहा—गुरुदेव! मैंने तो इसे समर्पित कर दिया

है। अब आप सोचें कि आप इसका क्या करेंगे? गुरुदेव ने कहा, ठीक है, अब राज्य मेरा है। मैं तुमको इसकी सुरक्षा करने का दायित्व सौंप रहा हूं। इसकी रक्षा करने का दायित्व तुम्हारा है। और वे सुरक्षा करने के दायित्व को लेकर चलते रहे। प्रोपर्टी किसकी है? प्रोपर्टी किसकी है और रक्षा कौन कर रहा? आज हमने चेरिटेबल ट्रस्ट बनाए हैं। बहुत-सी सम्पत्ति के ट्रस्टी हैं। वह ट्रस्ट हमने बनाया है। ट्रस्ट ईमान से बनाया है समझ लो किंतु उसमें बेईमानी हम कर लेते हैं। पैसे उसमें से दान दिए जाते हैं और दान देने वाला कौन? नाम किसका लिखाते हैं? चेरिटेबल ट्रस्ट का नाम लिखा दिया हो। ट्रस्ट का नाम लिखा दिया हो तो थोड़ी ईमानदारी रहेगी। यदि ऐसा सोचो कि ट्रस्टी भी घर का आदमी है। वही सबकुछ देने वाला है और वह अपना नाम लिख पैसे देता है तो वह किसमें से देता है? पैसे तो ट्रस्ट में से देता है तो यह क्या कहा जाएगा? क्या यह धोखाधड़ी नहीं है? बेईमानी है या नहीं है? बेईमानी-धोखाधड़ी और क्या है? यह धोखा हम अपने आपसे करते जा रहे हैं। यह हम क्यों करते जा रहे हैं? क्योंकि मुझे अपनी प्रशंसा प्रिय है। मुझे प्रशंसा प्रिय है इसलिए सारे खेल हो जाते हैं। एरण की चोरी करे और करे सूई का दान...। पहले टैक्स में चोरी करता है। चोरी किए हुए का दान करता है। फिर देखता है देवलोक से कोई विमान आ जाए। किने वास्ते आई? देवलोक में सुनयाड़ कोनी। सुनयाड़ कोनी कि सगलां ने भर्ती कर दो। उसको पहले परखना पड़ेगा। देख-देखकर लोगों को लेना पड़ेगा। हर किसी के लिए वहां ऐसे स्थान खाली नहीं मिलेगा। किंतु आज ये सारी धांधलियां चलती है। समझने की बात है। हमारे पास में पांच पैसे हैं तो पांच पैसों का दान भी बहुत है। हम किसी ट्रस्ट के ट्रस्टी हैं और हम ट्रस्टी हैं तो उस ट्रस्ट की संपत्ति? वह हमारी नहीं है।

छत्रपति शिवाजी केवल उस राज्य को धरोहर समझकर उसकी सुरक्षा करते हैं। जैसा भरत ने किया। बहुत लंबी कहानी है वो तो। इतना समय नहीं है। किंतु भरत ने राम की खड़ाऊं ली और लेकर सिंहासन पर रख दी। चौदह वर्षों तक वे उस सिंहासन के पास में बैठे रहे। किंतु एक बार भी सिंहासन पर बैठने का उनका मन नहीं हुआ कि एक बार बैठकर देखूं तो सही कैसा लगता है। कैसा आनन्द आता है यहां पर बैठने का। बना क्या उनका मन? कितनी बड़ी तपस्या की! कितनी बड़ी तपस्या! हमने उपवास किया और कोई लपटें आ रही हैं? क्या लपटें आ रही हैं? अरे कोई भी मिठाई, कोई भी बढ़िया

पदार्थ या भोजन के पास गए तो उसकी महक आ रही है। खाने का मन हो रहा है और मुंह में थोड़ी लार भी पड़ने लग जाती है। कभी मन होगा कि एक उठा लूं क्या? कोई देख तो नहीं रहा है? कोई देख तो नहीं रहा? (सभा में– लोगों ने सिर हिलाया) अरे भाई, माथा मत हिलाओ। दुनिया में सब एक जैसे नहीं हैं। मन डिग जाता है। एक चीज ली और ऊँह (मुंह में रखने का एक्शन) और फिर फटाफट मुंह को साफ कर लिया। (मुंहपत्ती पर हाथ फेरते हुए) किसी को लगा हुआ मालूम नहीं पड़ना चाहिए। किंतु ऊपर जो सैटेलाइट है वह देख रहा है या नहीं देख रहा है। अरे, जो भगवान का सैटेलाइट है– सिद्ध भगवान का, अरिहंत भगवान का सैटेलाइट है वह देख रहा है। क्या उस केवलज्ञानी से बच रहे हो? किंतु वहां आदमी का मन चंचल हो जाता है। आदमी का चित्त हिल जाता है। थोड़ा-सा पदार्थ देख डगमगाने वाले हो जाते हैं और ऐसे यदि चित्त डगमगाने वाला होगा तो बताओ 'अरिहंत सरणं पवज्जामि, सिद्ध सरणं पवज्जामि, साहु सरणं पवज्जामि' वह क्या काम आएगा? काम नहीं आएगा।

जनक कहते हैं कि मैं दक्षिणा लेकर आऊंगा। कहां से लाओगे दक्षिणा? क्या है तुम्हारा? अब बताओ, क्या है? सबकुछ ले लिया है, अब दक्षिणा कहां से लाओगे? मैं कुछ काम करके, कुछ मेहनत करके– किसी का कोई काम निकालकर, मजदूरी करके– पैसे इकट्ठे करके लाता हूं। ये शरीर किसका है, ये मन किसका है? किस मन से काम करोगे? किस शरीर से काम करोगे? है कुछ बही-खाता कि ये-ये चीज मेरी है? सबकुछ तो तुमने दे दिया है! ये आंखें भी किसकी हैं? किसकी हैं? जब आपने सब सौंप ही दिया है तो फिर किसकी है? बोलो, किसको आत्मा के दर्शन करने हैं? किसको वैराग्य उठाना है? है किसी के मन में वैराग्य की मन्नत कि हमारा वैराग्य उठ जाए। सब मौन हो गए हैं। इतनी बड़ी सभा में कोई ऐसा लाल नहीं है जिसकी मां ने उसको अपना दूध पिलाया है? "आज बता दूँ, मेरी मां ने कैसा दूध पिलाया?" बता दो, बता दो कि कैसा दूध पिलाया है? बता तो दो कि कैसा दूध पिलाया है? बकरी का दूध पिलाया या भैंस का दूध पिलाया? मां ने खुद का दूध पिलाया होता तो ये बातें नहीं होती। खुद का पिलाया होता तो उसका जोश अलग होता। उसकी रूपरेखा कुछ अलग ही बनती। किंतु व्यक्ति बोलने में तो बहुत बोल जाता है। बोलना तो आसान है किंतु करना बहुत कठिन।

एक बात मैंने बताई है कि हम अपने जीवन में क्या-क्या ले सकते हैं? माता का कर्तव्य क्या होता है? गजसुकुमाल की मां ने कैसे संस्कार दिए कि जिसको बचपन में भी, जवानी में भी कोई भय नहीं। कोई डर नहीं था। वीरता, धीरता और गंभीरता उसके जीवन में कहां से आए? हो सकता है कि उसके स्वयं के पूर्व जीवन के संस्कारों से या ईश्वरीय देन हो। पूर्व जीवन के संस्कार तो थे ही किंतु पूर्व जन्म के संस्कारों में इस जन्म के संस्कार भी मिल गए थे। और उन संस्कारों को पुनः जगाने का काम किसने किया? दीया था उसमें बाती भी थी और तेल भी था किंतु लाइटर का स्पर्श जब तक नहीं मिलता उसमें प्रकाश प्रकट नहीं होता। लाइटर-माचिस का स्पर्श पाते ही उसमें ज्योति पैदा हो गई।

अच्छा ये बताओ, किसी बात को घुमा-फिराकर कहना चाहिए या साफ-साफ कहना चाहिए? 'साफ-साफ कहना और सदा सुखी रहना।' किंतु आदमी साफ-साफ कहने की बजाय उस बात को घुमा-फिराकर/थोड़ा नमक लगाकर, थोड़ी मिर्ची लगाकर, थोड़ी शक्कर लगाकर, चाशनी चढ़ाकर कहता है ताकि मेरी बात स्वादिष्ट लगे। मधुर लगे। ठीक लगे। जितनी घुमा-फिराकर बात होती है वह उसको ही घुमाने वाली बन जाती है। उसको गुमराह करने वाली बन जाती है। कितनी ही साफ-सुथरी बात है किंतु उससे विवाद खड़ा होना होगा तो होगा ही। और यदि किसी बात से ऐसा बड़ा विवाद खड़ा होता है भले ही कितनी भी साफ-सुथरी बात है तो उसको गौण कर देना चाहिए। हमें उसके परिणाम को हमेशा देखना चाहिए कि इसके कहने से आग लगेगी या फिर आग बुझेगी। आग लगाने वाली हो तो ऐसी बात नहीं कहने में सार है और कहनी भी पड़ जाए तो इतनी मधुरता से कही जाए कि जो आग लगी हुई है वह भी बुझने वाली हो जाए।

यह हो गई एक बात। दूसरी बात, वैराग्य का स्वरूप। वैराग्य कैसा होना चाहिए? आप लोग कहते हो कि महाराज, भावना तो बहुत होती हैं। मन तो बहुत है। घरवाले आज्ञा दे दें तो आज ही तैयार हूं। व्यर्थ की बातें मत करो। ये सारी दिखावे की बातें हैं। ये सारे हाथी के दीखने वाले दांत हैं। ये सारी महाराज को राजी करने की बातें हैं। मेरा मन है तो फिर रोकने वाला कौन है? 'थोड़ा आटा गीला और थोड़ा मियां जी ढीला।' कोई नहीं है। कईं ठा, कईं ठा है? 'नाच न जाने आंगण टेढ़ा' अरे, नाचणो तो मन्ने आवे। मैं तो घणो चोखो नाचूं पर लागे कि आंगण टेढ़ो है। आंगण टेढ़ो है जणे नाचीजे

कोनी। नाचणो तो आवे पर नाचीजे कोनी।' जब नाचना ही नहीं आता है तो आंगन टेढ़ा है या कुछ भी बहाना कर लो। आप कहते हो कि मैं तो दीक्षा लेने को तैयार हूं लेकिन घरवाले आज्ञा दें तो। और बिना आज्ञा के ही ले सकते हो दीक्षा, तब तो तैयार हो? (प्रतिध्वनि– हां) कौन बोला? पीछे से कोई भी बोल रहा है कि तैयार हैं। पहले अच्छे से सोच लेना। सोच-समझकर कोई बात बोलना। यहां सभी प्रकार की बात चलती है। अर्जुनमाली को भगवान महावीर ने दीक्षा दी तो किसकी आज्ञा ली? किसने दी उसको आज्ञा? जो घर में अपने आप का स्वयं मालिक है वह स्वतंत्र है। हम लोग खाली व्यवहार के लिए ले लेते हैं– अनुमति। एक कागजी कार्यवाही। फॉरमल्टी करनी होती है तो कर देते हैं। मदन जी! आप खड़े होकर दीक्षा लेना चाहें तो पत्नी या बेटे से पूछने की क्या जरूरत है? घर का मालिक कौन है? घर के मालिक आप स्वयं है या पत्नी? या लड़का है? तो फिर किसकी आज्ञा चाहिए? (जोर देते हुए) आज्ञा किसकी चाहिए बताओ तो सही? किसका मुंह देख रहे हो? मेरा मुंह देखो ना। मुंह नीचा क्यों करना। मैं यह बता रहा था कि आप लोगों को मां ने कैसा दूध पिलाया।

एक बात सोचो। विचार करो कि वैराग्य कैसे जगता है? गजसुकुमाल के भीतर वैराग्य जगा और वे देवकी महारानी के पास में आए और कहा कि मैं दीक्षा लेना चाहता हूं। देवकी महारानी बेहोश हो गई। क्या-क्या भाव संजोये थे! क्या-क्या भावनाएं थी, क्या-क्या कल्पनाएं नहीं की। क्या-क्या सपने संजोये थे कि आठ-आठ बेटों को जन्म दिया है। लेकिन लालन-पालन करने के लिए भी एक ही बेटा हाथ में आया। पहले के सात बच्चों को प्यार भी नहीं दिया और वह प्यार भी अब किसके लिए ढुल रहा है? मां का सारा ममत्व का बरतन/उसका हृदय किसके लिए खुला है? गजसुकुमाल के लिए। और वो यदि बोले कि मां मैं दीक्षा लेना चाहता हूं तो मानो कोई सोट पड़ा हो उसके माथे पर! अरे, इतना प्रेम, इतना लाड़, इतना प्यार जिसके लिए और जिगर का टुकड़ा, वह कहे कि दीक्षा लेनी है तो माता पर क्या बीतेगी? सोचो। ऐसा सुनकर माता धड़ाम से नीचे गिर जाती है। कहते हैं कि माला के मोती एक धागे में पिरोये हुए होते हैं और वह धागा टूट जाए तो जैसे मोती बिखरते हैं वैसे ही वह माता बिलखती है। वैसे ही उसकी आंखों से आंसू टप-टप करके टपकने लग गए। किंतु गजसुकुमाल का दिल कुछ भी हिला नहीं चट्टान बन गया। क्योंकि आरसीसी का वैराग्य आ गया।

वह वैराग्य जिसमें आरसीसी लग गई। अब मोह का तंतु रहा ही नहीं। इस जीवन-संसार में कोई मेरा नहीं है। कौन है मेरा?

तू भूल के अपने आप, रहा कर पाप, ओ चेतन प्यारा,
दुनिया में कौन तुम्हारा।

किसको कहेंगे कि वह मेरा है? कौन है आपका? ये देखना आपके गले में जो है वह किसका है? चलो आज काउंटर से मोबाइल लेने का त्याग। (सभा में– हंसी, कुछ लोग बोले, तहत्ति) अरे! पांच-दस आदमी बोलें तो क्या होगा? जिन लोगों को जाना है, भागना है वे मोबाइल यहां छोड़कर जाएंगे कैसे? किसके भरोसे छोड़कर जाएंगे? किसको कहूं कि मेरा? कौन है मेरा? जिस समय अनाथी मुनि से पूछो कि कौन था उनका? नमिराजर्षि जिनके शरीर में वह दाहज्वर उठा। जो दुःख-दर्द शरीर में आया तो कौन बना उनका? किसने उस देह की वेदना को, ज्वाला को बंटाया? अनाथी मुनि के आंख की वेदना को किसने ठीक कर दिया? इलाज के लिए बड़े-बड़े डॉक्टर आ गए। दूर-दूर से चिकित्सक आ गए। सबने कहा कि ये कर लो, वो कर लो। किसी ने क्या किया, किसी ने क्या किया। सारे ताम-झाम कर लिए। सारी दवाइयां दे दी। सबकुछ कर दिया। किंतु क्या वह बीमारी शांत हुई? एक संकल्प जगा कि यदि यह बीमारी शांत हो जाती है तो 'खंतो दंतो निरारंभो, पव्वइए अणगारियं'– अणगार धर्म को स्वीकार कर लूंगा। और बिजली चमकती है ना, उसमें कितना समय लगता है? इतना-सा समय भी नहीं लगा और पीड़ा ऐसी दूर हुई कि आराम की नींद आ गई। ये घटना तो बहुत बार सुनी है। पढ़ी है। पूज्य जवाहराचार्य ने पूरे चातुर्मास में व्याख्यान दिए हैं और जिसको हम 'अनाथ भगवान' के रूप में पढ़ते रहे होंगे।

गजसुकुमाल को भी वैराग्य जगा तो माता ने कितने ही भाव प्रकट किए। कितना ही समझाया कि ये क्या बातें कर रहे हो बेटा! क्या इसी दिन के लिए मैंने तुम्हें जन्म दिया? मैंने तुम्हारे लिए ये किया, वो किया। तुम्हारे लिए क्या-क्या सपने नहीं देखे? गजसुकुमाल कहता है कि माता! ये सारे सपने ही हैं। कोई आंखें बंद करके सपना देख रहा है और कोई आंख खोलकर सपना ले रहा है। तुम मेरी मां हो तो यह भी सपना है और मैं बेटा हूं तो भी स्वप्न ही है। ये सबकुछ सपना ही तो है। मैं, मां तुमको देख रहा हूं सपने में और तुम मुझे बेटा मान रही हो तो भी सपने में ही मान रही हो

क्योंकि वस्तुतः, कौन किसका है? सारी आत्माएं स्वतंत्र है। ऐसी कोई भी आत्मा नहीं है जिसका आपस में कोई रिलेशन नहीं हो। वह ये सब कह रहा है और इतने में कृष्ण वासुदेव वहां आ गए। उन्होंने अपनी भाषा में अपने भाई को समझाया किंतु परिणाम कुछ नहीं निकला। अन्ततोगत्वा उन्होंने कहा कि मैं कम-से-कम एक बार तुम्हें राजा बनाना चाहता हूं। राजा बना हुआ देखना चाहता हूं। ये लास्ट परीक्षा की बात थी। कहा कि तुम दीक्षा लेना चाहते हो! चलो कोई बात नहीं किंतु एक बार राजा बनाना चाहूंगा। और उन्हें राजा बनाया गया। फिर उनसे पूछा गया, बताओ राजन्! क्या आदेश है। क्या संदेश है हमारे लिए। क्या संदेश है राष्ट्र के नाम पर? संदेश प्रसारित कीजिए। उन्होंने कहा कि ओघा, पातरा लाओ। नाई को बुलाओ मैं दीक्षा लेना चाहूंगा। वैराग्य जगने में कितने दिन लगे? माता और भाई को समझाने में कितने दिन लगे? एक क्षण (अल्प समय) लगा। और हमको वर्षों लग जाते हैं। आप कहते हो कि माने कोनी बापजी! घरवाला माने कोनी। माने कोनी? मनाने वाला कितना जान रहा है ये बताओ? मनाने वाला जान जाए तो फिर कौन नहीं माने? हमारे ही अंतर में मोह है तो बात अलग है। वह जब तक नहीं टूटे तो कौन मानेगा? किंतु जब वैराग्य खरा हो तो कितने ही आंटे दे दो वैराग्य को इधर से उधर मोड़ नहीं सकते। यह वैराग्य की बात आ गई।

एक है मनुष्य मन की कमजोरी। मनुष्य का मन कितना कमजोर होता है? अरिष्टनेमि भगवान से पूछा कृष्ण वासुदेव ने कि गजसुकुमाल मुनि कहां है? भगवान ने कहा कि उनका तो कार्य सफल हो गया है। पूछा कृष्ण वासुदेव ने कि कैसे हुआ और महाराजश्री फरमा ही गए कि ऐसे हुआ। कृष्ण वासुदेव के मन में क्रोध जग गया। यही मनुष्य की कमजोरी है। हमारे मन के प्रतिकूल होते ही मन भभक जाता है। भीतर से भभक जाता है। लवण समुद्र का पानी जंबू द्वीप में नहीं आ जाए इसलिए बहुत सारे देवता चारों तरफ से लहरों को दबाते रहते हैं, दबाते रहते हैं। पूछा गया भगवान से कि ये देवता पानी को रोक पाने में क्या समर्थ होंगे? भगवान ने कहा कि यह तो यहां के उन लोगों की पुण्याई, उन लोगों का त्याग-तप है। जब तक सत्य-अहिंसा है, संयम है तब तक यह लवण समुद्र का पानी जंबू द्वीप में प्रवेश नहीं कर पाएगा। किंतु हमारे भीतर भभकने वाले उस क्रोध को लोग कितना ही दबाना चाहें, हम अपने आप में कितना ही उसे दबाना चाहें तो भी कहीं-न-कहीं से कोई

पिचकारी छूट जाती है। छूट जाती है या नहीं छूट जाती है? और उसका बड़ा दुष्कर परिणाम होता है। इसलिए कहते हैं–

ओ क्रोध बड़ो चंडाल, कोई मत करजो जी

ये एक बहुत बड़ा चांडाल है। एक जमाने में चांडाल से लोग छुआछूत करते थे। किंतु इस चांडाल को आज लोग घर में बढ़ाते रहते हैं और यह भभक जाता है। कृष्ण वासुदेव भी एक मनुष्य थे और उनमें भी यह कमजोरी थी। बहुत बार यह देखा गया है कि जो बहुत समर्थ होता है वह दूसरों की बात को सुनने में समर्थ नहीं होता। शरीर से युद्ध में बलप्रयोग करने में समर्थ है। हजारों सुभटों को जीतने में समर्थ है किंतु अपनी आत्मा को/मन को जीतने में समर्थ नहीं होता है। वहां उसके घुटने टिक जाते हैं। वहां भगवान को कहना पड़ा कि कृष्ण तुम द्वेष मत करो। प्रद्वेष मत करो कोई फायदा नहीं है। उसने तो गजसुकुमाल को सहायता पहुंचाई है। ये ज्ञानी के वचन हैं। हमारी सोच कैसी है? विचार करो। 'हैं, थारे लिए ऐसो बोल्यो, छोड़नो नहीं उने। तुमको उसने ऐसा बोल दिया! तो अब उसको छोड़ना मत। विने चढ़ावनो या उतारनो' लोग किसी को चढ़ाने का या उतारने का काम करते हैं। आज हम चढ़ाने का काम कर रहे हैं या उतारने का काम कर रहे हैं। क्यों चढ़ाना? क्यों चढ़ाना किसी को? चढ़ाने वालों ने तो राम को भी चढ़ाने की कोशिश की होगी। राम को भी कहने वाले मिले होंगे कि कौन होती है कैकेयी। क्या उनके ऊपर हमला बोल देते? वे चाहते तो कह सकते थे कि तुम बोलने वाली कौन हो? साथ में लोग भी तैयार हो सकते थे कि आप थोड़ा-सा इशारा करो सब काम हो जाएगा। आप बोल तो दो ओके, पता ही नहीं चलेगा कि हड्डी-पसली कहां गई। आज ये खेल बहुत खेलते हैं। थोड़ा-सा कोई कुछ कह दे तो उसको भड़का कर कहां से कहां तक ले जाते हैं? किंतु राम इन सब में फंसने वाले नहीं थे। ये खेल तमाशा राम ने नहीं खेला। उनके मन में थोड़ा-सा भी विचार नहीं आया कि ऐसा कुछ करें। हमें क्या सीखना चाहिए? ज्ञानी वचन/अरिष्टनेमि भगवान कहते हैं कि प्रद्वेष मत करो।

और एक बात, महान् व्यक्ति का महत्त्व क्या होता है? वहां एक वृद्ध पुरुष एक-एक ईंट उठा रहा और घर में रख रहा था। कृष्ण वासुदेव ने यह देख एक ईंट उठा ली और उसके घर पहुंचा दी। कोई जरूरी था क्या? कोई जरूरी था कि कृष्ण वासुदेव उठावें? ये मन की बात है। ये महत्त्व की बात है। ये महापुरुषों की महानता की बात है। 'बिना महानता के उदारता

आ नहीं सकती। हम ताकते रहेंगे पर उदारता पैदा नहीं होगी। कहीं-न-कहीं हमारा स्वभाव, हमारा अहंकार, हमारा गर्व और हमारी अपनी थिंकिंग (सोच), जो भी समझ लीजिए वह रोकती रहेगी। नहीं-नहीं, हाथ खराब हो जाएगा। ईंट से हमारा हाथ खराब हो जाएगा। जब मन में उदारता का भाव आता है तो उस समय खराब और अच्छा नहीं दिखता है। हमने कई बार सुना-पढ़ा है। पुस्तकों में भी पढ़ा है कि अब्राहम लिंकन जा रहे थे संसद में और बीच में एक सूअर, जो कीचड़ में फंसा हुआ था उसको देखा। वे उसको निकालने का प्रयत्न करने लगे। सूअर ने अपना सिर हिलाया और कीचड़ के छींटे किसको लगे? अब्राहम लिंकन के कपड़ों पर लग गए। उसी हालत में ही वे संसद में चले गए। सभा में चले गए क्योंकि समय कम था। लोगों ने पूछा कि क्या हुआ? तो बोले कि ऐसा-ऐसा हुआ और ज्यादा समय नहीं था तो ऐसे ही आ गया। हमारी गाड़ी दौड़ती है तब कितने लोग फंसे हुए होते हैं? कितने लोग कठिनाई में होते हैं? हमारा दिल क्या बोलता है? हमारे में शम (सम), संवेग, निर्वेद, अनुकंपा और वह आस्था सचमुच में है क्या? अनुकंपा कहां गई? यदि अनुकंपा नहीं है तो धर्म कहां निपजेगा। भूमि ही यदि उपजाऊ नहीं है तो फल कहां से प्राप्त होगा? अनुकंपा का मतलब है कि हमारी भूमि उपजाऊ होनी चाहिए। मन में अनुकंपा के भाव हैं तो वह उपजाऊ है और यदि अनुकंपा के भाव नहीं हैं तो मनो-भूमि का उपजाऊ होना, वह कठिन है।

एक अंतिम बात, हमने देखा और शास्त्र भी कहते हैं कि उनके लाखों भवों के जो पूर्वकृत कर्म थे गजसुकुमाल के, उन कर्मों को भोगाने में वह (सोमिल) सहायक बना। सहयोगी बना। उनके लाखों वर्षों के जो कर्म थे वे उदय में आए। इसका मतलब अपने किए हुए कर्म कौन भोगता है? अपने किए हुए कर्म जब तक नहीं भोगेंगे तब तक छुटकारा मिलेगा नहीं। यदि कोई विपत्ति आ जाए! कोई कठिनाई आ जाए तो हाय-हाय करने की आवश्यकता नहीं है। आज कर्म भोगने हैं तो मुझे भोगने और कल भोगने हैं तो भी मुझे ही भोगने हैं। न तो कोई कल उनको भोगने के लिए आने वाला है और न ही आज भोगने के लिए आने वाला है! कोई दूसरा सहयोग देने वाला नहीं है। मेरे कर्म मुझे ही भोगने हैं। गजसुकुमाल मुनि! उनके भीतर में कहीं से कहीं तक सोमिल ब्राह्मण के प्रति कोई द्वेष की भावना नहीं आई। इसीलिए हम कहते हैं कि–

अंगारे सिर पर धधक रहे,
समभाव से गजसुकुमाल सहे,
सिद्धत्व ज्योति प्रकटाए हैं, वैराग्य भाव सरसाये हैं॥

आहा! आहा! अनुभव करो कैसा लग रहा है। ज्योति मिल रही है या ज्वाला मिल रही है। यदि द्वेष भाव प्रबल होंगे तो ज्वाला का रूप बनेगा। यदि द्वेष के भाव होंगे तो वे अंगारे ज्वाला का रूप लेंगे। और यदि आत्मीय भाव है, आपके भावों में न राग है न द्वेष–समभाव है, मैत्री भाव है, शत्रु और मित्र दोनों के प्रति एक समान भाव हैं तो वहां पर ज्योति प्रकट होगी। ज्वाला प्रकट नहीं होगी। हमारे को थोड़ा-सा ईंधन मिलता है और हम भभक जाते हैं। इसका मतलब है कि हमारे भीतर वह मैत्री भाव विकसित नहीं हुआ है। अभी वह समभाव विकसित नहीं हुआ है। अभी शरीर के प्रति ममत्व नहीं हटा है। ये मेरा शरीर है कहीं जल नहीं जाए! इसको ज्वाला नहीं लग जाए! यह शरीर के प्रति ममत्व भाव रहा हुआ है जब तक शरीर का ममत्व बना रहेगा तब तक वह ज्योति नहीं जगेगी। गजसुकुमाल मुनि तो अन्तर में देह से उपरत हो गये थे–

'जहां देह अपनी नहीं, वहां न अपना कोय' इदं न मम।
हाड जिले जिम लाकड़ी, केश जले जिम घास,
जलती दुनिया देख के, हुए कबीर उदास॥

उदास हो गये। उदासीनता आ गई। वैराग्य आ गया, विरक्ति आ गई। यही विरक्ति के भाव हैं। गजसुकुमाल मुनि का अन्तर देह उपरत हो गया था। ये शरीर मेरा नहीं है। शरीर भिन्न है आत्मा भिन्न है–ये भाव, ये विचार हमारे भीतर ज्योति पैदा करने वाले होते हैं। हमें उस ज्योति का अनुभव करना है। हमारे मन में सबके प्रति मैत्री भाव रहे। शत्रु को भी मित्र बनाने वाला होता है, 'बुद्धिमान्।' और अपने मित्रों को भी शत्रु बनाने वाला... (मूर्ख)। अब हमें विचार करना है कि कौन-सी श्रेणी के अंदर हमारी गिनती हो रही है? हम बुद्धिमान् हैं या हम मूर्ख हैं इसका निर्णय कौन करेगा? हम यदि शत्रुओं को मित्र बना सकते हैं। शत्रुओं को मित्र बनाने की कला हमारे भीतर है तो हम बुद्धिमान् हैं और मित्रों को भी, मित्रों को ही, क्या बना लेते हैं? हम यदि मित्रों को भी शत्रु बना लेते हैं तो हम मूर्ख हैं। यदि हम ऐसा करते हैं तो हमारा मन, हमारी सोच वह किस कोटि में रहेगी? दुर्योधन ने

पांडवों को शत्रु बना लिया। किंतु रामायण में भरत ने शत्रु नहीं बना लिया। भरत ने राम को शत्रु नहीं बनाया। वह उनकी बुद्धिमानी थी। वह बुद्धिमानी थी और दुर्योधन ने जो किया क्या वह बुद्धिमानी थी?

यह पर्व-पर्युषण हमें क्या सिखा रहे हैं? हम क्या सीख रहे हैं? हमें ज्योति बनना है या हमें ज्वाला बनना है? हमें मूर्ख बनना है या बुद्धिमान्? हम कहने के लिए कहते हैं कि हमें बुद्धिमान् बनना है। किंतु कितना बुद्धिमान् बनना है? बुद्धिमत्ता के कुछ बिंदु हैं। कुछ क्राइटेरिया है, बिंदु हैं। उन बिंदुओं का पालन होगा तो हम बुद्धिमान् बनेंगे। हमारे भीतर शत्रु को मित्र बनाने की कला है। हम शत्रु को मित्र बनाने के लिए तैयार रहेंगे तो हमें कोई कह सकता है कि तुममें बुद्धि है। तुम मेधावी हो। इसी प्रकार शरीर के प्रति यदि हमारा ममत्व हट गया। हमने शरीर को अपना नहीं समझा। बड़े रूप में केवल जी रहा हूं– अनुभव से, ध्यान से, आत्म-रमणता से यह भाव पैदा हो कि आत्मा में रमण करना है। बाकी ये हमारा शरीर तो एक खोखा है। ये शरीर खोखला है। यह तो एक हेतु भर है। हमें जीवन जीने के लिए केवल एक खोखे की जरूरत है और यह शरीर उसका कार्य कर रहा है। इससे प्रेम क्यों? एक कल्पना करना है। ये कल्पना की कि शरीर पर तेल लगाया। बालों में तेल लगाया। खूब शृंगार किया लेकिन वह क्या काम आएगा? कितना ही मल लिया क्या काम आएगा? ये शरीर लकड़ियों में जाने वाला है। एक दिन ये चित्त नहीं रहेगा। यह चिता पर आरूढ़ होने वाला है।

बंधुओ! हम विचार करें, चिंतन करें ये पर्व-पर्युषण जो हमें एक संदेश देने के लिए प्रस्तुत है। संदेश प्रतिदिन हमें मिलता है। यह संदेश हमारे जीवन के हर क्षण में हमको मिलता है। हम संदेशों को अपने आप में उतारने के लिए तैयार रहें। उतारने की उतनी ही हमारी तैयारी होगी तो हर पल, हर क्षण हमें संदेश देने वाले बनेंगे। हमें बुद्धि देने वाले बनेंगे। शिक्षा देने वाले बनेंगे। हम स्वयं से शिक्षा लें। घटनाओं से शिक्षा लें। ऐसी शिक्षा लेकर हम धन्य बनेंगे और अवश्यमेव पर्व-पर्युषण की सम्यक् आराधना में अपने आप को लगाने में समर्थ बना पाएंगे।

अभी पर्युषण-पर्व चल रहा है और इस पर्व में कई तपस्याएं चल रही हैं। कई तपस्याएं संपन्न होने जा रही हैं। कई मासखमण की तपस्याएं भी चल रही हैं। कई बहिनें मासखमण के रथ पर आरूढ़ हो चुकी हैं और कई होने की तैयारी कर रही हैं। कई बहिनें हैं जो मासखमण के बारे में विचार कर रही

हैं। हम तपस्या नहीं कर सकते हैं तो कोई बात नहीं। किंतु हम यह संकल्प अवश्य करें कि हम किसी के साथ धोखाधड़ी नहीं करेंगे। आप लोग अपनी कापी में लिखो, 'ईमान'। लिखो, विचार मत करो। लिखो ईमान। इसका इस्तेमाल आगे कैसे करोगे? ईमानदारी हमारी होनी चाहिए। ईमेल होता है ना उसमें ई का निशान क्या होता है? वैसे ही ई-मान, ई आ गया और पीछे रह गया मान। ईमान हम रखेंगे तो मान हमारा अपने आप आ जाएगा। मान हमेशा रहेगा। ईमान है आपके पास तो कौन आपके मान को घटा सकता है? कौन मान को लूट सकता है? यदि ईमान में से हम ई को हटाना चाहें तो पीछे मान रह जाएगा और वह मान किसी काम का नहीं है। ईमान में से ई हटा दिया और उसमें अप जोड़ दिया तो अपमान हो जाएगा। इसलिए ईमान है तो मान रहेगा। ई रहेगा तो मान भी रहेगा। वह नहीं हट पाएगा। ई हटेगा तो मान घटेगा। इसलिए क्या करना चाहिए? क्या रखना है? ईमान रखें तो मान मिलेगा। ईमान रखेंगे तो मान को अलग से मांगने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। क्या रखना है हमें? (प्रत्युत्तर– ईमान) क्या रखना है? ईमान के साथ हम मान रखेंगे तो मान सदा मिलेगा। इतना ही कहकर अपनी वाणी को विराम देता हूं।

30 अगस्त, 2019
(पर्युषण पर्व का चौथा दिन)

12

यह है अन्तर का राज

शांति जिन एक मुज विनति...

पर्युषण-पर्व चल रहे हैं और आज उसका छठवां दिन है। हमारी आत्मा पर भी छह शत्रु हैं। उन छह शत्रुओं को जीतना हमारा लक्ष्य होना चाहिए। वे शत्रु हैं– काम, क्रोध, मद, मत्सर, तृष्णा और मोह। कृष्ण वासुदेव के समय ऐसा बताया गया कि इनके प्रतीक रूप थे– शिशुपाल, दुर्योधन, कंस, पूतना, जरासंध... एक एक अपने-अपने दुर्गुण में माहिर थे। इन दुर्गुणों को हम कैसे जीतें? कैसे इन पर विजय प्राप्त करें? यह हमें विचार करना जरूरी है। मुद्गरपाणि यक्ष की पूजा कर रहा था अर्जुनमाली, यह हम अंतगडदसाओ सूत्र में सुन गये हैं। छह गठीले पुरुषों ने अर्जुन को बांधा और वहां जो कुछ कार्य किया। जैसे उन गठीले पुरुषों ने अर्जुनमाली को बांधा, वैसे ही हमारी आत्मा को ये 6 शत्रु बंधन में डाले हुए हैं। बांधने वाले हैं। संसार में रोककर रखने वाले हैं। काम अर्थात् विषय वासना। जब तक पांच इन्द्रियों के विषय में हमारा मन गमन करता रहेगा संसार से मुक्ति संभव नहीं है। विषयों की अनुरक्ति हटेगी तो विरक्ति के भाव बढ़ेंगे। अब तक संसार में हमने इतने भोग भोगे कि कोई अंत नहीं है। और भी भोगते रहेंगे तो भी तृष्णा शांत होने वाली नहीं है। उसकी प्यास बुझने वाली नहीं है।

आचारांग सूत्र का स्वाध्याय करते हुए एक सूत्र आया, 'जस्स नत्थि पुरा पच्छा, मज्झ तत्थ कुओ सिया' जिसके पहले नहीं है, बाद में नहीं है मध्य कहां से होगा? सामान्य अर्थ यह बनता है। किंतु यह बहुत मार्मिक सूत्र है। इसमें जो कहा गया है उसका जीवन से गहरा सम्बन्ध है। वह, यह कि जिसके अतीत के भोगों की इच्छा शांत हो गई है। अतीत के संस्कार जिसने हटा दिए और भविष्य की कोई इच्छा, अभिलाषा नहीं है उसको वर्तमान में

विकल्प क्यों पैदा होंगे? उसको वर्तमान में विचार क्यों पैदा होंगे? ऊहापोह क्यों होगी? अर्थात् नहीं होगी। बहुत सुंदर सूत्र है। बहुत मार्मिक सूत्र है। इस संदर्भ में श्रीमद् भगवती सूत्र का एक पाठ याद आता है कि अतीत का प्रतिक्रमण करो अर्थात् भूतकाल को भुला दो। भूतकाल को विस्मृत कर दो। जो मैल आत्मा पर लगा हुआ है उसको धोकर, साफ कर दो। 'अइयं पडिक्कमामि', वर्तमान का संवर और भविष्य के लिए प्रत्याख्यान। यह त्रिपुटी बतायी गयी जिसे हम बोलते हैं कि गये काल का प्रतिक्रमण, वर्तमान का संवर और भविष्य काल का पचक्खाण। कोई भी व्रत, नियम स्वीकार करने के पहले यदि अतीत का प्रतिक्रमण नहीं है। पहले के संस्कारों की सफाई नहीं की। उसकी धुलाई नहीं की है तो वर्तमान में संवर की आराधना मुश्किल है। वर्तमान में बिना ऊहापोह के जीना फिर कठिन है।

ऊहापोह–दिमाग में कुछ के कुछ विचार चलते रहना। यदि कुछ के कुछ मस्तिष्क में विचार चलते रहते हैं इसका मतलब है कि पिछले संस्कार हमने साफ नहीं किए हैं। पिछले संस्कारों को हमने धोया नहीं है। हमने आलोचना, प्रतिक्रमण के माध्यम से उस मन की धुलाई नहीं की। उसे परिष्कृत नहीं किया इस कारण से वे संस्कार हमारे भीतर बने हुए हैं। यदि ऐलोपैथिक चिकित्सा की अपन बात करें तो कैंसर के रोगी का इलाज करते हैं। इलाज करते समय उसमें एक जर्म्स भी बाकी रह गया, एक भी कीटाणु बाकी रह गया तो आपरेशन सक्सेस (सफल) नहीं रहेगा। एक भी कीटाणु कैंसर का यदि बना रह गया तो थोड़े दिन में वह पुनः अपनी संतति को इतना तैयार कर लेगा, इतना जल्दी वह फैलेगा कि कुछ कहा नहीं जा सकता। जैसे एक कीटाणु यदि बना रहता है तो वह कीटाणु, बहुत से कीटाणुओं को पैदा कर देता है। वैसे ही हमारी दबी हुई इच्छाएं, हमारी अभिलाषाएं-आकांक्षाएं जब तक शांत नहीं होंगी, जब तक उनको हम हटा नहीं देंगे तब तक हमारा मिशन सफल नहीं होगा। सार्थक नहीं होगा। यदि सच्चे मायने में हम आत्मिक सुख प्राप्त करना चाहते हैं–शांति और समाधि का अनुभव करना चाहते हैं तो हमें पिछले सारे संस्कार भुलाने पड़ेंगे। किस ने मेरे साथ क्या व्यवहार किया है? किसने मुझे गालियां दी हैं। किसने मेरी प्रशंसा की है–न प्रशंसा को याद रखना, न गालियों को। और अतीत में जो भी संस्कार मैंने भीतर डाले हैं मुझे उनको हटाना है। दूर करना है। और अवश्य दूर होते हैं।

जैसे शरीर पर या वस्त्र पर मैल लग जाता है। वस्त्र मैला हो जाता है तो उसको धो कर साफ किया जाता है और धोने से उस वस्त्र में से मैल निकल जाता है। वैसे ही हमारी आत्मा पर लगे हुए मैल– आशा और आकांक्षाओं को– हम दूर करेंगे तो ही वर्तमान में सुखी रह पाएंगे। अन्यथा हम केवल ऊपर-ऊपर की धर्म क्रियाएं करते रहेंगे और नीचे आंच बनी रहेगी। दूध में उफान आया और पानी के छींटे डाल दिए। पानी के छींटे डालने से उफान रुक गया किंतु दो मिनट, पांच-दस मिनट के बाद फिर वापस दूध में उफान आएगा। क्यों आएगा? किसलिए आ रहा है वापस उफान? नीचे की आंच हमने हटाई नहीं है। नीचे की आंच जब तक बनी रहेगी ऊपर से पानी के छींटे कितने ही दे दो किंतु जब तक नीचे की आंच नहीं बुझेगी तब तक दूध में आता हुआ उफान नहीं रुक पाएगा। हम भी जब तक अतीत का प्रतिक्रमण नहीं कर लेते हैं, अतीत का शुद्धीकरण नहीं कर लेते हैं, अतीत की धुलाई नहीं कर लेते हैं तो वर्तमान में चाहे सामायिक करें, चाहे पौषध करें, चाहे प्रतिक्रमण करें, ये उतने सार्थक नहीं होंगे। हमारी स्थिति यथावत् बनी रहेगी। सामायिक से पहले जो स्थिति थी वही बाद में है। पौषध के पहले जो हमारा स्वभाव था वैसा ही बाद में है। अर्थात् उसमें कोई बदलाव नहीं आया। अंतगडदसाओ सूत्र बहुत ही महत्त्वपूर्ण शास्त्र है, जिससे इतनी प्रेरणा मिलती है और एक-एक वृत्तांत बड़े ही महत्त्वपूर्ण हैं।

हमने सेठ सुदर्शन को सुना। कैसे उसके जीवन में इतनी दृढ़ता आ गई? कोई भय नहीं है। कोई चिंता नहीं है। कोई शंका नहीं है। यह कब होता है? यह कैसे होता है? हम सोच रहे हैं कि यह चौथे आरे की बातें हैं। चौथे या तीसरे आरे की बातों से मतलब नहीं है। ये यथार्थ बातें हैं। और जैसा सेठ सुदर्शन जीया वैसे यदि हम जी लें तो हमारे साथ वैसा ही घटेगा। हमें कहीं कोई भय नहीं होगा। अन्यथा काम, क्रोध, मद, मत्सर, तृष्णा, मोह– ये हमें सताते रहेंगे। इनकी चपेट में हम आते रहेंगे। कभी काम हमारे पर हावी होगा कभी क्रोध हमारे पर हावी होगा। कभी अहंकार हमारे पर हावी होगा तो कभी ईर्ष्या की भावना बलवती हो जाएगी। और तृष्णा, जिसको लोग कहते हैं कि कभी बुझने वाली नहीं है, अमर धन की तरह है। जितना उसको देते जाओ वह चाहेगा और, और, और, और, और का कहीं छोर नहीं होता। आग में जितना ईंधन डालो। आग में जितना घी डालो। आग में जितनी चंदन की लकड़ियां डालो। आग में जितने नारियल की भेंट चढ़ाओ सारे क्या होते

जाएंगे? (सभा– स्वाहा) आग बुझ जाएगी क्या? आग बुझेगी क्या इनसे? आग बुझ नहीं पाती है बल्कि वह और अधिक जाज्वल्यमान होगी। वैसे ही हम सोचते हैं कि सामने वाला मेरे पर क्रोध कर रहा है! मैं उससे पीछे क्यों रहूं? क्रोध से क्रोध को मिटाया नहीं जा सकता है। क्रोध को क्रोध से दबाया जा सकता है। किंतु वह दबी हुई बीमारी फिर पैदा होती रहेगी। यदि दवाइयां लेकर एक बार बीमारी को दबा दिया तो वह बीमारी वापस कभी-न-कभी उभरेगी। चाहे उस रूप में उभरे। चाहे अन्य रूप में हो उसके भीतर में पड़े हुए वे कीटाणु कभी-न-कभी उभरेंगे। वैसे ही हमारे भीतर काम-क्रोध के कीटाणु, जो हमने दबा दिए वे कभी-न-कभी उभरेंगे। एक प्रश्न खड़ा होता है कि दबाना भी नहीं प्रकट भी नहीं होने देना। फिर आखिर में क्या किया जाए? 'संशोधन, सुधार।' सुधार प्रक्रिया को स्वीकार किया जाए और वह सुधार प्रक्रिया यदि सक्रिय हो जाएगी तो हम हमारे काम, क्रोध, मद, मत्सर इन सारे भावों को हटाने वाले बनेंगे। वे हट जाएंगे। नहीं हटें ऐसी बात नहीं है। कपड़े पर पड़े हुए दाग को हम प्रक्रिया की स्थिति में ले जाते हैं तो वे धुलकर साफ हो जाते हैं। दाग हट जाते हैं। जैसे कपड़े के दाग हट जाते हैं वैसे ही हमारे जीवन पर लगे हुए दाग भी, हमारी आत्मा की चादर पर लगे हुए दाग को हम धो सकते हैं। बशर्ते धोने का पूरा मन बन जाए और मन बन जाता है तो सफलता मिलती है।

अर्जुनमाली जिसका हम अभी वृत्तांत सुन रहे थे, 1141 व्यक्तियों की घात करने वाला। अपनी चद्दर को इतनी मैली करने वाला। किंतु कितने दिनों में उसने अपनी चद्दर को धो डाला? छह महीने में चद्दर को धो डाला। यह हमारे सामने आगमिक प्रत्यक्ष प्रमाण है। दूसरा सेठ सुदर्शन, जिसमें किसी प्रकार का भय नहीं। आतंक से मुक्त। उसके मन में ऐसा क्या था कि जिसके कारण उसके मन में भय पैदा नहीं हुआ? इस राज को कौन समझे? उसका मन समाहित था। श्रद्धा युक्त, समाधि युक्त था। उसके मन में ऊहापोह नहीं था, उसके मन में किसी प्रकार की शंका नहीं थी। डाउट नहीं था कि क्या होगा और क्या नहीं होगा। जो होना है हो जाएगा। यदि कोई विपत्ति आ भी गई तो मुझे मेरा कल्याण करना है और वे सागारी संथारा स्वीकार कर लेते हैं। 'णमोत्थु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स'– श्रमण भगवान महावीर को नमस्कार करके। नमस्कार में भी बहुत बड़ी ताकत है। बहुत बड़ी ताकत है हम भले समझें या नहीं समझें।

आचार्य पूज्य गुरुदेव श्री नानालाल जी म.सा. उदयपुर में विराज रहे थे यह पहले चातुर्मास की बात है। अंतिम नहीं पहले वाला। पहले वाले की बात कर रहे हैं। उस चातुमार्स के दरमियान दीपचंदजी भूरा ने एक प्रश्न पूछा। रात्रि के समय की बात है। प्रश्न था कि गुरुदेव! नमस्कार महामंत्र के नीचे चूलिया में लिखा है कि 'एसो पंचणमुक्कारो, सव्वपावप्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं'—इन पांच पदों को किया गया नमस्कार सारे कर्मों का क्षय करने वाला होता है। हम तो इतने नवकार मंत्र बोलते हैं। रोज नवकार मंत्र बोलते हैं फिर हमारे पापों का क्षय क्यों नहीं हो गया? उस दिन सोमवार होने से गुरुदेव के मौन था तो दूसरे दिन व्याख्यान में गुरुदेव ने इस विषय को स्पष्ट किया कि द्रव्य संधियां 14 बताई गई हैं और बारीकी से देखें तो 72 हजार संधियां हमारे शरीर के भीतर में रही हुई हैं। हम उन सारी संधियों को कितना झुका पाते हैं? बड़े रूप में ये 14 संधियां होती हैं, बारीकी से गिनें तो जो 72 हजार होती हैं—उन सारी संधियों को नमाना, झुका देना। कहीं पर भी वे संधियां खड़ी नहीं रहे। अभी हमारा शरीर भी पूरा झुक नहीं पाता है। कुछ तो हमारे कारण होंगे? कुछ हमने कारण बना लिए हैं। यदि हम चाहे तो कर सकते हैं ऐसा मैं विश्वास करता हूं। किंतु हम भविष्य की चिंता से डरते हैं। अरे! ऐसा कर दिया तो घुटने का दर्द बढ़ जाएगा। कमर का दर्द बढ़ जाएगा। ज्यादा चिंता पालेंगे वह दिमाग में भार रहेगा और वैसी ही परिणति होती रहेगी। यदि क्रियाविधि करते रहें तो हो सकता है कि मूवमेंट करते रहने से स्थितियां बदल जाएं। उसको जितना अंवेर-अंवेर कर रखेंगे वे मांसपेशियां उतनी ही सख्त होती चली जाएंगी और कठिनाई पैदा करने वाली बनेंगी।

जो कुछ भी है, हम द्रव्य रूप में 14 संधियों को/बड़ी संधियों को नहीं झुका पाते हैं तो 72 हजार संधियों को कैसे झुका पाएंगे? हमारे में से बहुतों को तो ज्ञान भी नहीं होगा 72 हजार संधियों का। केवल कागजी कार्यवाही है। उनको कैसे झुकाया जाए? श्रीमद् आचारांग सूत्र की बात करें तो एक सूत्र बड़ा महत्त्वपूर्ण सूत्र है, 'जे एगं नामे से बहुं नामे' जो एक को नमा लेता है वह बहुतों को नमा लेता है। एक अहंकार को जिसने नमा लिया उसका क्रोध नम जाएगा। उसकी माया नम जाएगी। उसका लोभ नम जाएगा। एक को तो नमाओ। हम वंदना जरूर करते हैं किंतु एक भी कषाय को हमने नमाया या नहीं नमाया? एक भी कषाय हमारा झुका या नहीं झुका? यदि

एक भी कषाय को नहीं झुका पाये तो हमारा नमस्कार सार्थक कैसे होगा? हमने कहानी सुनी है बहुत बार, मगध सम्राट श्रेणिक जिसने एक बार विचार किया कि मैं सभी मुनियों को वंदन-नमस्कार करूं और एक बार सभी मुनियों को वंदन-नमस्कार किया और उसका शरीर शिथिल हो गया। शरीर क्लान्त हो गया। शरीर थक गया। इतना सशक्त शरीर था उसके उपरांत भी पसीना आने लगा।

कहते हैं कि गौतम स्वामी भगवान महावीर से पूछते हैं कि इन्होंने जो इस प्रकार वंदन नमस्कार किया भगवान इन्हें क्या लाभ हुआ? क्या फायदा हुआ? हमने पढ़ा कि भगवान महावीर कहते हैं इन्होंने 6 पृथ्वियों के बंधनों को तोड़ दिया। एक बार का नमस्कार कितना लाभदायी हो गया? यह तो बहुत स्थूल बात है। किंतु ग्रंथकार कहते हैं कि "इक्को वि णमुक्कारो, जिणवंरवसहस्स वद्धमाणस्स" एक भी नमस्कार। दो नहीं, तीन नहीं, चार नहीं, "इक्को वि णमुक्कारो", एक भी नमस्कार सच्चे दिल से करो भले ही वह ऋषभदेव भगवान से लेकर भगवान महावीर तक किसी भी तीर्थंकर को किया गया। वह एक नमस्कार हमारे सारे कर्मों का नाश करने वाला है। नमस्कार सही करें तो बात बने। यहां पर नमाने की बात कही है 'नमो अरिहंताणं' मुंह से बोलते हैं हम! नमते नहीं हैं। नमो अरिहंताणं करते हुए हमने क्या नमाया? किसको नमाया? हमको ध्यान ही नहीं है बोल रहे हैं, इसलिए बोलते जा रहे हैं। बोलने के साथ हमारे भीतर जो क्रिया घटित होनी चाहिए, हमारे भीतर जो स्पंदन पैदा होना चाहिए वह स्पंदन नहीं हो पाता और जब तक वह स्पंदन नहीं होता है तब तक हम कार्य सिद्धि में आगे नहीं बढ़ पाते हैं। नमो यानी नम जाना। हमारा मान पूरा ही नम जाए। मद पूरा ही नम जाए। जैसे मदोन्मत्त हाथी को अंकुश से वश में किया जाता है वैसे ही 'नमो' हमारे लिए अंकुश है और हमारे कषायों को जिताने वाला है। हमारे कषायों को वश में कराने वाला है। किंतु हम सही प्रक्रिया नहीं जानते हैं।

अरिहंताणं, बड़े रूप में कह देते हैं। अरि मतलब शत्रु, हन्ताणं मतलब नष्ट करने वाला। किंतु इसका सही अर्थ/शाब्दिक अर्थ है जिसके भीतर अर्हता-योग्यता प्रकट हो गई उसको नमस्कार है। उसके लिए नमस्कार है। उसकी दिशा में नमस्कार है। नमता मैं हूं, मैं नमस्कार कर रहा हूं। मैं अपनी आत्मा को नमा रहा हूं किस ओर? किसके लिए और किसलिए? मैं आत्मा

को नमा रहा हूं। मैं मन को नमा रहा हूं। किसलिए नमा रहा हूं? (जोर देते हुए) किसलिए नमा रहा हूं? मैं वंदना कर रहा हूं। किसके लिए वंदना कर रहा हूं? मैं वंदना कर रहा था और महाराज तो निकल गए! मेरी तरफ ध्यान भी नहीं दिया। मुझे नमस्कार करने ही नहीं दिया। महाराज के लिए नमस्कार कर रहा हूं। अरे! नमस्कार किसके लिए कर रहे हो? म.सा. के लिए कर रहे हो या अपने लिए कर रहे हो। किसके लिए कर रहे हो? यदि अपने लिए कर रहे हो फिर म.सा. निकल गए तो उससे आपके वंदना में क्या कमी आ गई? हमारी वंदना में/मन में कमी क्यों आ गई? वंदना मुझे करनी थी। नमस्कार मुझे करना था मैं कर रहा हूं। खाना मुझे है पुरसकारी करने वाला पुरसकारी करके चला गया। क्या जरूरी है कि आपके पास में रहने वाले मकान मालिक जिसने आमंत्रण दिया है वह सामने खड़ा रहे और हमें खाना खिलाता रहे। बातें करता रहे, खाना खिलाता रहे तो भोजन करना रुचिकर लगता है। नहीं तो मन मारकर, मन मसोसकर भोजन करना होता है।

वस्तुतः, नमस्कार बहुत महत्त्वपूर्ण है। किंतु किसके लिए? फायदा किसको? हम नमस्कार किसके लिए कर रहे हैं? और किसको कर रहे हैं? नमस्कार करने के पीछे हमारा लक्ष्य होना चाहिए कि मैं उस योग्यता को प्राप्त करने के लिए नमस्कार कर रहा हूं। डॉक्टरी पास करने हेतु डॉक्टरी में एडमिशन लेने के लिए पहले प्रवेश परीक्षा होती है। शायद पी.एम.टी. परीक्षा होती है। डॉक्टर साहब बताओ क्या नाम है उसका? आप लोग बोल रहे हो अब नाम परिवर्तन कर दिया गया। अब उसका नाम नीट कर दिया गया है। या जो भी होगा। पहले पी.एम.टी परीक्षा होती थी डॉक्टरी में प्रवेश लेने के लिए। जो भी परीक्षा हो, परीक्षा होने के बाद वह डॉक्टरी लाइन में जा सकता है। डॉक्टरी क्षेत्र में जाने के लिए वह काबिल है। वह डॉक्टर बन सकता है। वैसे ही अरिहंताणं, यह पीएमटी परीक्षा है सिद्धत्व की। इस परीक्षा में जो उत्तीर्ण हो जाएगा उसको सिद्ध बनने से कोई नहीं रोक सकेगा। हमारे भीतर यह भावना होनी चाहिए नमस्कार करते हुए कि मैं अपनी योग्यता प्रकट करूं। नमो अव्यय है। नमो– यह अव्यय है। अव्यय उसको कहते हैं जो कभी व्यय नहीं होने वाला। जो कभी व्यय नहीं होता है– सदा बना रहता है, उसको प्राप्त करने की योग्यता! वह मेरे भीतर प्रकट हो जाए। इसके लिए मेरा नमस्कार है। किसको है? किसको नमस्कार है? हम बोल देते हैं कि अरिहंत भगवान को नमस्कार। किंतु हमारा नमस्कार अरिहंत भगवान

के लिए कोई काम का नहीं है। सार्थक नहीं है। वह नमस्कार हमारे लिए है। नमस्कार किसके लिए है? हमारे ही लिए।

हम केवल अपने आपको अरिहंत की दिशा में झुकाते हैं। योग्यता की तरफ अपने आपको झुकाते हैं। जैसे कुएं में बालटी डाली। रस्सी हमारे हाथ में है। यदि बालटी को नहीं नमाया गया। रस्सी को हिलाया नहीं गया तो क्या उस बालटी में पानी आएगा? घड़ा लेकर तालाब में गए और घड़े को पानी में ऊपर रख दिया। कितनी देर में, कितने दिनों में, कितने महीनों में वह घड़ा पानी से भर जाएगा? नहीं तो क्या करना पड़ेगा? घड़े को पानी से भरने के लिए क्या करना पड़ेगा? घड़े के मुंह को पानी की ओर झुकाना पड़ेगा पानी लेना है तो पानी की तरफ घड़े को झुकाना पड़ेगा। पानी की तरफ घड़ा झुकेगा तो पानी भर जाएगा। हम भी अरिहंत की दिशा में– योग्यता की दिशा में, सिद्ध बनने की दिशा में– अपने आपको नमाएंगे। कैसे नमाएंगे? यह गर्दन नमती है या नहीं नमती है? या दर्द करती रहती है। खड़ी रहती है? गर्दन नहीं झुक रही तो हमारा मान झुकेगा कैसे?

शास्त्रकार कहते हैं कि एक को नमा लेंगे तो बहुतों को नमा लेंगे। जो एक को नमा लेता है वो बहुत को नमाने वाला हो जाता है। एक तो नमे। एक को नमाया तो बहुत नम जाएंगे। एक सेनापति को नमा लिया तो सारी सेना नम जाएगी। एक सेनापति को जीत लिया तो सारी सेना जीती जा सकेगी। एक सम्राट को जीत लिया तो सम्राट के राज्य पर अधिकार किसका हो जाएगा? सम्राट को जीत लिया तो जीतने वाले का अधिकार पूरे राज्य पर हो जाएगा। अतः एक को नमाओ। एक को नमाने का प्रयत्न करो और यदि एक क्रोध को नमा लिया तो भी चलेगा। एक अहंकार को नमा लिया तो भी चलेगा। क्रोध को, माया को, मान को, लोभ को– इन चारों में से किसी एक को नमा लेंगे, एक को अपना बना लेंगे फिर दूसरे पर विजय प्राप्त करना आसान हो जाएगा। दूसरे शब्दों में कहें तो एक अनन्तानुबन्धी चाक को नमा लिया तो अन्यों को नमाना आसान होगा। सरकारी कामकाज में देखें कई लोग अपराधी होते हैं। उसमें से पुलिस यह प्रयत्न करती है कि वहां कोई एक साक्षी ही गवाह बन जाए। एक भी अपराधी को फोड़कर उसने गवाह बना लिया तो सारे अपराधियों को पकड़ लेगी या नहीं? उसको उसने अपना बना लिया। इतनी मोहब्बत दी, इतना संबंध रखा कि वह पुलिस का बन गया। फिर धीरे-धीरे वह सबके राज उसके सामने खोल देगा और पुलिस को बड़ी

सुगमता होगी दूसरे अपराधियों को पकड़ने में। आसानी हो जाएगी। इसलिए किसी एक को भी नमाया। एक नम गया तो अन्य कषायों को हम नमाने में समर्थ हो जाएंगे और एक को नहीं नमा पाए तो वे ज्यों-के-त्यों रह जाएंगे। एक को अपना नहीं बना पाए तो सारे ज्यों-के-त्यों बने रह जाएंगे।

सेठ सुदर्शन, जिसने वह विधि जानी थी। भगवान महावीर की दिशा में नमस्कार करता है और अपना कनेक्शन भगवान महावीर की देशना से जोड़ लेता है। भगवान महावीर की महावीरता, उनकी महाधीरता से हमारा लगाव हो गया। उससे प्रेम हो गया और जिसने संबंध जोड़ लिया तो पावर प्राप्त होगी। जैसे पावर हाउस होता है उससे बिजली का कनेक्शन लिया जाता है। घर में सारी फिटिंग हो चुकी है। कनेक्शन ले लिया है। फिर पंखे का स्विच ऑन करते हैं तो हवा आती है। ठंडक मिलेगी या नहीं मिलेगी? यदि प्रकाश का साधन है तो प्रकाश मिलेगा। हवा चाहिए तो हवा मिलेगी। एसी को ऑन करेंगे तो एसी की ठंडक मिलेगी। किससे मिलेगी? यदि पावर हाउस से हमने कनेक्शन ले लिया! यदि उससे संबंध नहीं जोड़ा पर घर में फिटिंग बढ़िया की हुई है तो वह फिटिंग किसी काम की नहीं है।

हम फिटिंग तो बहुत करते हैं। एक घर में मेहमान आए। श्रीमती जी, श्रीमान् को कहती है कि नाथ! घर में मेहमान आए हैं। पुराने संबंधी हैं। अच्छा जिनके साथ संबंध रहा है। इस बार लंबे समय से आए तो इनका स्वागत अच्छी तरह से होना चाहिए और कुछ नहीं तो हलवा तो होना ही चाहिए मिठाई बने या नहीं बने। इसलिए थोड़ा आटा, गुड़ और घी लेकर आना है बाजार से। ये चीजें बाजार से लेकर आ जाओ। श्रीमान् जी खुश हुए और चले। चलते-चलते सोचने लगे, आटा, गुड़, घी ये सब बाजार से नई चीजें ला रहे हैं लेकिन हलवा जिसमें बनाना है, उसके लिए बरतन पुराने हैं तो हलवा अच्छा बने इसके लिए नए बरतन ले लूं। तो बढ़िया बरतन लेने के लिए दुकान में चले गए। एक-दो बरतन खरीदे। फिर विचार करने लगा हलवा अकेला क्या काम का? आटे से, गुड़ से हलवा बनाया जायेगा और थोड़े ड्राइ फ्रूट–काजू, पिस्ता, किशमिश, बादाम, दाख जो भी हैं वे भी थोड़े पड़ने चाहिए हलवे में तो हलवा अच्छा बनेगा। एक दुकान में गया और ड्राइ फ्रूट के पैकेट्स ले लिए। किंतु मन में विचार आया कि खाली मिठाई खाएं अच्छा नहीं लगेगा। थोड़ी नमकीन होनी चाहिए। और एक ही तरह की नमकीन रहेगी तो घर की अच्छी नहीं लगेगी। गया दुकान में और

दो-तीन तरह की नमकीन के पैकेट्स ले लिए और इस तरह इकट्ठा करता है सारे सामान को। बहुत सारा सामान इकट्ठा हो गया। अब भार इतना था कि चलने में भी परेशानी हो रही है। इसलिए घर की ओर बढ़ गया। जैसे ही घर पहुंचा और श्रीमती के सामने सारे मटीरियल रखे श्रीमती जी ने कहा, इतनी सारी चीजें क्यों लाए? हलवे में थोड़ा बादाम, दाख-किशमिश और क्या-क्या होना चाहिए? नहीं मालूम? जैसे भी आप समझ लो। अपने-अपने क्षेत्र में हलवे में क्या-क्या डालते हो? और उसने ये सारे पैकेट खोल-खोलकर दिखाये। श्रीमती जी बोली कि आप सारा सामान तो लेकर आ गए किंतु आटा, गुड़ और घी तो है ही नहीं—काजू, बादाम, दाख, किशमिश—ये तो ले आए। सब लेकर आ गए किंतु मूल घटक कहां है? आटा, गुड़ घी तो लाए ही नहीं। वो कहां पर है? अरे! बोलो, क्या किया फिर? बोलो, क्या किया?

संवत्सरी को 11 सौ पौषध करना है। आप लोग सोचते हो कि कह दिया महाराज ने तो अब मन ऊंचा-नीचा नहीं कर सकते। ऊंचा-नीचा हो तो भी करना ही पड़ेगा। आठ प्रहर का नहीं हो तो...! देखते हैं कैसे-क्या रहेगा? पानी भी नहीं लिया है तो आठ नहीं तो पांच प्रहर का कर लेंगे। लेकिन आठ प्रहर का फाइनल है तो? फाइनल है तो कर लेंगे। लोग विचार करते हैं कि थोड़ी गर्मी हो गई है। थोड़ी ऊमस हो रही है। रात को प्यास लग जाती है। भयंकर हालत हो रही है तो रात कैसे निकलेगी? किसने क्या-क्या विचार कर लिए? मेरे से होगा या नहीं होगा? मैं करूं या नहीं करूं? वह सोचता रहेगा तो सोचता ही रहेगा। हमने सब कर लिया। पर्युषण मना लिया। हमने संवत्सरी का प्रतिक्रमण कर लिया। अंतगडदसाओ सूत्र सुन लिया। अर्जुनमाली को सुन लिया। अतिमुक्त कुमार को भी सुन लेंगे अवसर रहा तो। यह सब कुछ कर लिया। प्रतिक्रमण भी कर लिया। किंतु मूल में जो कषाय नमाने थे, जिन कषायों को शमित करना था, जिन कषायों को हटाना था उनको नहीं हटाया। जो चद्दर धोनी थी। चद्दर का मैल साफ करना था वह नहीं किया और चद्दर को रंगने के लिए नए-नए रंग लेकर आ गए। उस रंग में कैमिकल भी डाल दिया कि और चमक आ जाए। क्या उसमें चमक आएगी? उसमें दाग लगे हुए हैं तो वहां चमक आयेगी क्या? सब चीजें डाल दी। रंग लगा दिया। कैमिकल भी डाल दिया। किंतु कपड़ा जो मैला था उसको धोया ही नहीं। मैले कपड़े को नहीं धोओगे तो क्या रंग चढ़ेगा? रंगरेज, एक अच्छा रंगरेज! वह कभी भी मैले कपड़े को बिना धोये

रंगेगा नहीं। वह जानता है कि यदि मैंने इसे रंगा तो मेरे रंग की बदनामी हो जाएगी। किसी घी-तेल के व्यापारी के पास यदि कोई घासलेट और पेट्रोल का डब्बा खाली करके लेकर जाता है तो वह व्यापारी उसमें घी-तेल डालकर नहीं देगा। वह कहेगा कि तू मेरा डब्बा ले जा। डब्बे के पैसे नहीं भी दे तो फ्री में ले जा। वह उस घासलेट के डब्बे में घी या तेल नहीं भरेगा। नहीं तो उसमें उस घासलेट की बदबू आएगी और मेरी बदनामी हो जाएगी। हम कौन से डब्बे में भर रहे हैं घी? अगर हम घासलेट वाले डब्बे में घी भर रहे हैं तो इस मायने में लगता है कि हम ही पागल हैं।

एक दुकानदार बिना सफाई के घासलेट के पीपे में घी भरता नहीं है और हम लोगों को कौन-से पीपे में घी भरना चाहिए? बोलो, अब कौन-से पीपे में घी भरना चाहिए? अब क्या करना चाहिए कल से? कल से व्याख्यान बंद। पहले पीपे की धुलाई कर लो फिर व्याख्यान सुनायेंगे। संवत्सरी आ रही है। अरे, व्याख्यान सुनते रहोगे तो पीपा धोओगे कब? सफाई करोगे कब? और पूरी तरह से धुलाई नहीं होगी और उसमें भर दिया जाएगा तो पहले वाली चीज की दुर्गंध बनेगी या सुंगध रहेगी? घासलेट की, पेट्रोल की गंध आएगी या केसर, कस्तूरी की सुगंध आएगी? हमारे भीतर जो पहले भरा हुआ है, वह नहीं निकलेगा और ऊपर से जो भरा जाएगा तो सुगंध आएगी या दुर्गंध आएगी? सुना है, मेरे खयाल से आपने भी बहुत बार सुना होगा कि मुसलमान लोग जब नमाज पढ़ते हैं तो पहले वुजू करते हैं। वुजू मतलब हाथ धोते हैं। वहीं पर हौद होता है और उसमें से हाथ-पांव धोने की प्रक्रिया करके फिर नमाज पढ़ने की दिशा में जाते हैं। एक बार ऐसा हुआ कि देखा पानी में गंध आ रही है। मालूम पड़ा कि कोई कुत्ते की जाति उस पानी में गिर गई और मर गई उस कारण से दुर्गंध आ रही है हौद के पानी में। सभी गए किसके पास? मौलवी के पास कि मौलवी साहब! पानी गंदा हो गया है। उसमें दुर्गंध आ रही है। मौलवी साहब ने कहा, ऐसा करो कि पानी बदल दो। उन्होंने उस पानी को पूरा खाली किया और नया पानी भर दिया। दूसरे दिन फिर दुर्गंध आ रही थी। गए मौलवी के पास कि आज भी गंध आ रही है। मौलवी ने कहा कि तुमने क्या किया? लोगों ने कहा कि आपने बदलने का कहा, हमने पानी बदल दिया। मौलवी ने कहा, किंतु कलेवर निकाला या नहीं? कुत्ते का जो कलेवर पानी में पड़ा है उसको निकाला या नहीं निकाला? कहा कि वह तो नहीं निकाला। वे लोग कहते हैं कि मौलवी साहब! आपने

पानी बदलने का बोला था हमने पानी बदल दिया। कलेवर तो हमने नहीं निकाला। आपने बोला ही नहीं था। आप लोग कहते हो कि आपने बोलने के लिए कहा हमने बोल दिया। आपने कहा कि प्रतिक्रमण करो हमने कर लिया। किंतु वैर धोना है ये आपने कब कहा? मन का वैर मिटाना है ये कब कहा? कषायों को हटाने के लिए कब कहा? इसलिए कह रहा हूं कि जो एक को नमा देता है वह बहुत को नमा देता है। एक को नमाने के लिए पहला कार्य होगा, 'अइयं पडिक्कमामि' अतीत का प्रतिक्रमण करना होगा। अतीत के वैर भाव को देखना होगा कि मेरा किस-किस के साथ वैर रहा है? किस-किस के साथ मेरी दुश्मनी है? मैं 'खमत खामणा' करता हूं। खमाऊँ सा.! खमाऊँ सा.! अरे क्या खमाऊँ? वचन से बोल रहे हो। किंतु भीतर में मैत्री की धारा प्रवाहित हो रही है या नहीं हो रही है? वह यदि नहीं हो रही है तो फिर क्या होगा? फिर होगा क्या?

सेठ सुदर्शन, जिसने एक को नमा लिया था। अपने कषायों को नमा लिया था और अतीत का प्रतिक्रमण करके जो मन से समाधिस्थ होकर जा रहा है। उसको कोई चिंता नहीं है। कोई भय नहीं है। वह मेरे जीवन को समाप्त कर देगा ऐसा कोई भय नहीं है। आराम से, शांति से, समाधि से जा रहा है क्यों? क्योंकि उसने भगवान महावीर से संबंध जोड़ लिया। भगवान महावीर पर उसकी अटूट श्रद्धा थी। अटूट आस्था थी। हम कहते तो जरूर हैं कि गुरुदेव! आपके नाम में बड़ा चमत्कार है। धर्म में बड़ा चमत्कार है। हमने भगवान का नाम लिया और बड़ा चमत्कार हो गया। एक बार तो ठीक है और दूसरी बार चमत्कार नहीं हुआ तो? नहीं हुआ तो, बताओ क्या होगा? फिर आप लोग कहोगे कि मैं तो ठगा गया। पहली बार में ऐसा कोई चमत्कार होगा और दूसरी बार में नहीं हुआ तो लोग यही कहेंगे कि दम नहीं है। वो महाराज तो यूं ही है। एक बार तो चमत्कार ऐसे ही हो गया था।

'हकीकत में हमारी श्रद्धा जैसे ही डाउन होगी हम वहां से आउट हो जाएंगे। हमको वहां से निकाल दिया जाएगा।'

फिर? जब श्रद्धा ही हमारी पक्की नहीं है तो हमारा मनोयोग कैसे सफल हो पाएगा? सेठ सुदर्शन निश्चिंत है। उसे चिंता नहीं है। डर नहीं है। 'नमो अरिहंताणं, कहकर नमस्कार करते हैं। भगवान महावीर स्वामी से तार जोड़ लिया। भगवान महावीर से, अरिहंत से तार जोड़ लिया। तार जुड़ गया

है, अब वहां क्या भय? मुझे भयभीत नहीं होना। अब भगवान महावीर से संबंध जोड़ लिया है। सिर के ऊपर भगवान का हाथ आ गया है अब भय किसका? यदि भय हो रहा है तो सचमुच में भगवान के हाथ के नीचे हमने सिर नहीं रखा है। भगवान के हाथ सिर पर नहीं हैं। क्यों नहीं है सिर पर? हकीकत में श्रीमान् जी सब कुछ ले कर आ गये। किंतु आटा, गुड़, घी तो लाये ही नहीं। मूल घटक जो चाहिए वह नहीं लाया गया। लोगों ने वह पानी तो बदल दिया। एक बार बदला, दो बार बदला, तीन बार भी बदला। किंतु भीतर में रहा हुआ कलेवर नहीं निकाला। वैसे ही भीतर में रहे हुए वैर को, दुश्मनी को हम नहीं निकाल पाएंगे तो कितना ही पौषध-प्रतिक्रमण कर लो, कितनी ही तपस्या कर लो, मासखमण की तपस्याएं कर लो, उसका सार क्या होगा?

ये पर्व पर्युषण जयकारी,
जयकारी मंगलकारी, ये पर्व पर्युषण....।
हिंसा जो निश दिन करता था,
पापों से गगरी भरता था,
वो अर्जुन था मालाकारी, ये पर्व पर्युषण...।
प्रभुवीर आगमन होता है,
सुदर्शन भाव संजोता है,
नहीं घबराया वह प्रियकारी, ये पर्व पर्युषण...।
सम्मुख अर्जुन यूं आता है,
मुद्गर को खूब हिलाता है,
मानों दिन है प्रलयकारी, ये पर्व...।

यह पर्व पर्युषण जयकारी, इस पंक्ति का अर्थ क्या है? ये पर्व पर्युषण हमको जय-विजय दिलाने वाले हैं। जय दिलाने वाले हैं। कौन जीतना चाहता है? कौन विजय प्राप्त करना चाहता है? कौन इस जिंदगी के समर से अपने आप को उत्थान की ओर बढ़ाना चाहता है? दूसरी बात है जयकारी, मंगलकारी। जय कब होगी? जब मंगल होगा तब जय होगी। मंगल का अर्थ जो मेरे पापों को नाश करे। जिससे मेरे पाप नष्ट हो जाएं वह मंगल होता है। जो मेरे पापों को गलाता है। जो मेरे पापों को नष्ट करता है वह मांगलिक है। पापों को कैसे गलाएगा? वह पापों को कैसे नष्ट करेगा?

एक मोमबत्ती है और एक माचिस की डिबिया है। हमने दोनों को पास-पास में रख दिया। आठ दिन तक आरती उतारते रहे। वह मोमबत्ती कितनी पिघली? मोमबत्ती कितनी गल गई? मोमबत्ती के ऊपर के भाग पर जो एक धागा होता है उससे माचिस की तीली को प्रज्वलित करके स्पर्श कराया तो मोमबत्ती कितने समय में गल जाएगी? कितने समय में वह पिघल जाएगी? यदि माचिस का स्पर्श नहीं कराता है तो क्या लाभ? मोमबत्ती भी हमने रख दी और माचिस भी रख दी। किंतु गलाने के लिए क्या करना पड़ेगा? वैसे ही हमारे पापों के लिए क्या कहा गया है? पापों के लिए कहा गया है कि–

पाप पराल को पुंज बण्यो है, मानो मेरु आकारो,
तो तुम नाम हुताशन सेती, सहजे प्रज्वलत सारो।

मेरे पाप मेरु पर्वत के समान हैं। मेरु के समान मैंने अपने पापों का ढेर लगाया है। मेरे दोष कितने हैं? एक चौबीसी में गाते हैं ना कि कितने पाप हो गए?

'मैंने बहुत किए अपराध, नाथ मोहे कैसे तारोगे...।'

कैसे तरेंगे? तरेंगे कैसे? तरने का कोई चांस नहीं है। तरने का कोई जोग नहीं है। यदि तैरना नहीं आता है तो कैसे तिरोगे? यदि नौका में आरूढ़ नहीं होना है तो कैसे पार पहुंचोगे? तिरने के लिए कुछ करना पड़ता है। यदि हाथ-पांव नहीं चलाओगे तो डूबोगे या तिरोगे? हाथ-पांव चलाना जानते तो हैं। किंतु संसार से तरने के लिए हाथ-पांव कितने चलाए? किसी से मारपीट करनी हो या लड़ाई-झगड़ा करना है तो वहां पर हाथ-पांव चलना शुरू हो जाता है। किंतु हमारे हाथ किसी की रक्षा के लिए, किसी की भलाई के लिए कितने तैयार होते हैं?

आचार्य पूज्य गुरुदेव श्री नानालाल जी म.सा. की जन्म शताब्दी है जिसमें बहुत सारे आयाम हैं। संघ ने एक आयाम यह भी रखा है कि सौ कसाइयों को कसाई कार्य से मुक्त कराना है। कभी पढ़ा है? कभी आया पढ़ने में यह? आया क्या? आप लोगों ने पढ़ा भी है तो सोचा होगा कि अपना काम थोड़ी है। अपना काम है ही नहीं। तो फिर किसका काम है? किसका काम है? कौन आएगा करने के लिए? घर का मालिक जागरूक नहीं है तो चौकीदारी कौन करेगा? किस-किस ने प्रयत्न किया इसके लिए बताओ? पीपलिया कलां का एक मुस्लिम भाई है सलीम। उस एक भाई ने प्रतिज्ञा ली और उसने

कहा कि मैं दस भाइयों को मुक्त करवाऊंगा। गुरुदेव की जन्म शताब्दी पर मैं दस लोगों को कत्लखानों से मुक्त करवाऊंगा। उसने भाई पंकज जी शाह से कहा कि ऐसा है, एक भाई से यह काम छुड़वाना है तो आपको उसको नौकरी या कोई धंधा दिलाना पड़ेगा। रोजी-रोटी के लिए आदमी को कुछ तो चाहिए। पंकज जी शाह ने कहा कि तुम तो काम करो। नौकरी चाहिए तो मैं दूंगा। हमारे यहां पर भरपूर काम है। हमारे यहां काम करने वाले हैं। सौ के साथ 101 हो जाएंगे क्या फर्क पड़ने वाला है? उसने आज एक भाई से कत्लखाने का काम बंद करवा भी दिया। दस को बंद कराने की प्रतिज्ञा ली थी और उसने एक को बंद करवा दिया। यदि एक कत्लखाना बंद हो जाएगा तो कितने जीवों का कत्ल होना बंद हो जाएगा? कितने जीव बच जाएंगे? और आपने कुछ नहीं किया। बस, कहीं पर नौकरी लगवा दी। आप उससे वहां नहीं, अपने यहां पर काम करवाओगे। केवल वहां काम करने के बजाय यहां काम करने लग गया। उसका लाभ, उसकी दलाली का लाभ आपको मिलेगा या नहीं मिलेगा? हमने क्या कार्य किया? हमने कितने कत्लखाने वालों से बात की? हमने एक भी कत्लखाने वालों से बात की? हमने एक से भी बात की? क्या कर रहे हैं हम, बताओ? आप बोलते तो हो, 'नाना गुरु, नाना गुरु'। नाना गुरु के गीत भी आप गाते हो। क्या गीत गाते हो?

नाना गुरु दर्श दिखा जाओ, भक्तों का दिल यह बोल रहा...

अभी यहां पर तो खाली संतों का दिल बोल रहा है। भक्तों का दिल कहां बोल रहा है? क्या हो रहा है? आवाज कहां आ रही है? सूर्यनगरी वालों पर तो काम का बोझ है इसलिए उनकी आवाज कम पड़ गई हो। और बाहरवाले? बाहरवालों को क्या हुआ? उनकी आवाज क्यों नहीं आ रही है? बाहरवालों ने खा-खाकर गला भारी कर लिया होगा या फिर तपस्या में बोली निकल नहीं रही होगी? एक बार और बोला जाएगा। एक बार और बोलाने का विचार कर रहे हैं। किंतु शर्त यह रहेगी कि जो नाना गुरु के सचमुच में दर्श करने की भावना रखते हैं वे ही बोलेंगे। बाकी, दूसरे फालतू की आवाज नहीं करेंगे।

नाना गुरु दर्श दिखा जाओ, भक्तों का दिल यह बोल रहा...

कौन-कौन नहीं बोला? जो नहीं बोला वह हाथ खड़ा कर दे। मतलब सभी दर्श चाहते हैं। पीछे आवाज कहां तक आ रही है? मेरी आवाज कहां तक पहुंच रही है? आखिरी लाइन वालों को कहां तक समझ में आ रही है?

मैं यह पूछना चाह रहा हूं कि नाना गुरु के दर्श कौन-कौन करना चाहता है? एक बार हाथ खड़े करो। कौन-कौन दर्श करना चाहते हैं? (सभा में लगभग सभी ने हाथ खड़े किए) जीते जी दर्शन नहीं किए थे क्या जो अब बाकी रह गए! जो दर्श करना चाहते हैं, वे जीते-जी दर्शन नहीं कर पाए, वो अब क्या कर लेंगे। अभी नाना गुरु ने दर्श दे भी दिया तो कर लोगे? पहले मैं बोला था कि मोमबत्ती को जब तक माचिस से नहीं लगाओगे वह मोमबत्ती गलेगी नहीं। ज्योति मिलेगी नहीं। आप लोगों ने गीत गा दिया। हाथ ऊपर कर दिया तो नाना गुरु दर्श क्यों देंगे? फालतू बैठे हैं क्या? क्यों आएंगे? क्यों दर्शन देंगे? फुरसत है क्या उनको? हम यदि हाथ-पांव चलाएंगे तो अपने आप उनके दर्शन हो जाएंगे। मुद्गरपाणि यक्ष की आराधना अर्जुनमाली ने की और वह अर्जुन के सामने आकर खड़ा हो गया। वही शक्ति आप में होनी चाहिए कि नाना गुरु के दर्श हो जाएं। यदि हमने, इतने लोग यहां पर बैठे हुए हैं, एक-एक ने संकल्प ले लिया कि एक-एक कसाई को, कत्लखाने का काम हम बंद करवाएंगे तो नाना गुरु के दर्शन होंगे या नहीं होंगे? (सभा की धीमी आवाज– होंगे) वह आवाज तो नहीं आई। हमारे भीतर विश्वास ही नहीं तो आवाज कहां से आएगी। विश्वास कहां बोल रहा है? ये आपकी जुबान बोल रही है। विश्वास कहां बोल रहा है? आपका विश्वास बोलना चाहिए।

हां, खड़े हो जाओ। कौन-कौन खड़ा होगा कि एक कसाई को काम बंद करवाएंगे। आप लोग बोल रहे हो कि पहले किया। कसाईखाने को बंद करने का प्रयत्न किया है। गई जो बात गई। अब की बात चल रही है। पहले वाली बात जाने दो। पहले जो हुआ सो तब की बात है। अभी सामने क्या है? मतलब बात क्या करनी है वह बात करनी है। कौन-कौन एक-एक कसाई को बुरा कार्य बंद करवाएगा? बीस लोग खड़े हुए हैं तो बीस लोगों को ही नाना गुरु के दर्शन होंगे और उनको अलग से दर्शन करवाने पड़ेंगे। बीस लोग ही दर्शन करने के इच्छुक हैं? लोढ़ा* जी! आप भी खड़े हो जाओ। बैठे क्या हो? बीजेपी के कार्यकर्ता हो तो एक आदमी को संभाल ही लोगे। बोलो, बंद कराएंगे या नहीं? गीता में भी यह लिखा है कि कर्म करना मेरा अधिकार है। एक बात ध्यान रखना कि एक बार, दो-तीन बार चोट पड़ते-पड़ते क्या हो जाता है? अरे चोट पड़ते रहने से तो पत्थर भी मूर्ति बन जाता है। चोट पड़ते-पड़ते

* इन्द्रचन्दजी लोढ़ा, डोंगरगाँव (श्री दिव्यदर्शन मुनिजी के पिताश्री)

तो पत्थर भी मूर्ति का रूप ले लेता है तो हमारी चोट खाली क्यों जाएगी? मन में विश्वास है तो आपकी चोट खाली नहीं जानी चाहिए। आपकी चोट खाली नहीं जा सकती। पक्के विश्वास के साथ काम करोगे तो! 'जो बोले सो अभय, जैन धर्म की (प्रतिध्वनि–जय) जैन धर्म की (सभा–जय)।

आहा! आहा! क्या कहना है। लोगों के मन में लहरें उठ रही हैं। अरे जो सलीम मुसलमान जिसने नाना गुरु की जन्म शताब्दी पर दस लोगों को कत्लखाने से मुक्त करने की बात कही थी और एक को मुक्त करा चुका है। हमको तो एक के लिए कहा जा रहा है। क्या हम एक को भी मुक्त कराने के लिए तैयार नहीं है?

अब ऐसा कौन है? कौन है जो कम से कम दस जनों को कत्लखाने वाले को, कसाइयों को कम से कम दो बार कहेंगे कि कत्लखाने का काम बंद करें। कौन-कौन लोग हैं ऐसे, खड़े हो जाएं। जो कम से कम दो बार कत्लखाने का काम बंद करने की बात कहेंगे। और यदि कोई कहेगा कि काम बंद होने से मेरी रोजी-रोटी बंद हो जाएगी तो उसके लिए पंकज जी शाह से बात कर सकते हैं। या कोई कहे कि भाई कत्लखाने के कारण ही मेरी तो रोजी-रोटी होती है। मेरी रोजी-रोटी का सवाल है तो आप संघ से बात कर सकते हो। संघ में कई लोगों ने आश्वासन दिया है कि कत्लखाना बंद होने से किसी का रोजगार चला जाए तो उसको रोजगार देने के लिए हम तैयार हैं। कुछ लोग कह रहे हैं कि हम अपनी तरफ से रोजगार दिलवा देंगे तो यह तो और भी बढ़िया बात है। अगर वो लोग अपनी तरफ से रोजगार दिलवा सकते हैं तो अच्छा है। नहीं तो संघ से बात करनी पड़ेगी। घर में कोई मेहमान आ जाए और घर में जगह नहीं हो रुकने के लिए तो फिर होटल किराये पर लेनी ही पड़ेगी। आपके घर में जगह हो तो बहुत अच्छी बात है। नहीं तो होटल जाना होगा।

हमें सिर्फ दो बार समझाने की बात है। दो बार समझाने के लिए हमारे पास फुरसत नहीं है तो पर्व पर्युषण की आराधना क्या काम आएगी? पर्व पर्युषण की आराधना की बात चल रही है। एक-एक का नाम लेकर खड़ा करना पड़ेगा। अरे! आप लोग जबरदस्ती कर रहे हो। किसी के साथ जबरदस्ती मत करो। जबरदस्ती नहीं करना है। जिसकी भावना होगी वह अपने आप ही खड़ा हो जाएगा।

अभी पंकज जी कुरान शरीफ के एक अध्याय का हिंदी अनुवाद लेकर आए हैं। उन्होंने हिंदी में अनुवाद करके लिख रखा है। कुरान शरीफ में अहिंसा की बात कही गई है। 'खुदा सारे जगत का पिता है, मालिक है। जगत में जितने प्राणी हैं वे सभी खुदा के पुत्र हैं। बिस्मिल्लाह रहमानुरहम, सभी जीवों पर रहम करो। मुहम्मद साहब के उत्तराधिकारी हजरत अली साहब ने कहा है कि हे मानव! पशु-पक्षियों की कब्र अपने पेट में मत बना। अर्थात् तुम पशु-पक्षियों को मारकर उनको अपना भोजन मत बनाओ। इसी प्रकार दीन-ए-इलाही के प्रवर्तक मुगल सम्राट अकबर ने कहा है कि मैं अपने पेट को दूसरे जीवों का कब्रिस्तान नहीं बनाना चाहता हूं। जिसने किसी की जान बचाई उसने मानो सारे इंसानों की जिंदगी बचा ली है। इसलिए यह मानो कि सारे इंसानों की जान है। कुरान शरीफ 535।' कुरान शरीफ 535 का यह हिंदी अनुवाद है। आपको यदि चाहिए तो पंकज जी शाह से लेकर अपने पास में रख सकते हो। और यह सामने वाले को बता सको कि देखो, ये तुम्हारे कुरान की बात को तो मानो। ये बता रहे हैं कि पांच कसाइयों को छुड़ाओ। जिन पांच कसाई के काम को छुड़ाओगे वे कितने दिन में काम करने के लायक हो पाते हैं? कितने दिन में वे रोजगार पा लेते हैं? हमारा काम है उनको कहना। वह यदि माने तो अच्छी बात है। नहीं तो कम से कम हम कह तो सकते हैं। हम ऐसा विश्वास रखें कि मेरी कही बात को वो जरूर मानेगा। ऐसा विश्वास रखकर कहेंगे कि हम दो कसाइयों को कसाईखाना बंद करने के लिए जरूर कहेंगे।

बहिनें भी आगे आएंगी। अरे! दो बार कहने की ही तो बात है। श्रीमती विजया देवी सुराना (बाद में दीक्षित हुए श्री सुविजेता जी म.सा.) उनका जुनून था। उनको यदि मालूम पड़ जाए। सूचना मिल जाए कि अमुक जगह जीवों की बलि हो रही है। पशुओं की घात हो रही है। हत्या हो रही है तो वे वहां पर पहुंच जाती। जैसे ही वे पहुंचती तो वहां की स्थिति कुछ और हो जाती। वे कहतीं कि पहले मेरी गर्दन को काटा जाए फिर इन जीवों की बलि होगी। मैं इन पशुओं की बलि नहीं होने दूंगी। जगह-जगह पर उन्होंने कत्लखाने बंद करवाए हैं। हम क्या कमजोर हैं? हम भी उन्हीं के पदचिह्नों पर चलें। हमारे भीतर ये कायरता नहीं आनी चाहिए। यदि पांच-दस महिलाएं मिलकर जाती हैं तो क्या कुछ नहीं हो सकता है? महिलाओं के अधिकार ही अलग हैं। उनका वर्चस्व अलग ही बन जाता है। नारी, शक्ति-स्वरूपा मानी गई है।

अन्यथा आज से ये नारा बंद करो कि गुरु तुम्हारे मंत्र को घर-घर में पहुंचाएंगे। हम करने को तैयार कहां हैं? कहां हम मोम को पिघलाने का विचार कर रहे हैं? हमें न मोमबती को पिघलाना है, न दीये को जलाना है। करना-धरना कुछ भी है नहीं। शक्ति क्यों खराब करनी अपनी? और क्या बोलते हैं कि चार चवन्नी चांदी की सारी दुनिया गांधी की या महावीर की। चार चवन्नी से मतलब नहीं है। हमारा कार्य क्या है? हमारा कर्तव्य क्या है? हमारा कार्य अभी नाना गुरु की जन्म शताब्दी पर सकारात्मक कार सेवा करना है। एक भी इंसान, एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं कहे कि मैं कुछ नहीं कर पाया शताब्दी पर। हमें कुछ तो करना ही है ये लक्ष्य रहना चाहिए। तब तो हमारा बोलना सार्थक होगा। नहीं तो ये बातें कि 'नाना गुरु दर्श दिखा जाओ' फालतू की बातें होगी। ये सारी दिखावे की बातें होगी। हम कुछ कार्य करें तो जय-जयकार अपने आप ही हो जाएगी। "नहीं थोथे नाद गुंजाना है, अब करके कुछ दिखलाना है" अब ये थोथे नारे, ये कागजी कार्यवाही नहीं चलेगी। कागजी कार्यवाही से कुछ नहीं होगा। कागज में तो लिख दिया कि वहां पर ब्रिज बनेगा लेकिन वहां पर जाकर देखा तो वहां पर कुछ भी नहीं है। सड़क बनाने के लिए कागज पर लिख दिया लेकिन वहां पर देखा तो एक पत्थर भी नहीं है। हमने लंबा-चौड़ा कागज तैयार कर लिया और यहां आकर बोल रहे हो यह काम नहीं चलने वाला है—करो, करो, करो। बोलो कम और करो ज्यादा। अब तो करने का समय है। बोलो कम और करो ज्यादा। नाना गुरु ने ये सिद्धांत दिया है कि मैं कहता कम हूं और करता ज्यादा हूं। नाना गुरु कहते हैं कि करो ज्यादा और बोलो कम। और आप कहते हो कि हम नाना गुरु के भक्त हैं? लेकिन आप कहते ज्यादा हो। "बतावे सौ और मिले नहीं जीरो", "बतावे सौ और मिले शून्य" ये काम कैसे चलेगा?

कैसे हो कल्याण करनी काली है, नहीं होगा भुगतान हुण्डी जाली है...।

मैंने शुरू में श्रीमद् आचारांग सूत्र के एक सूत्र का उल्लेख किया था उसकी संक्षिप्त व्याख्या भी की थी। तदनुसार अतीत को परिष्कृत करें भावी की चिंता छोड़ें। वर्तमान स्वतः सुखी हो जायेगा। हम पर्व पर्युषण मना रहे हैं तो हमारे दिल में पहले वह रहम की भावना जगनी चाहिए। वह प्रेम की भावना जगनी चाहिए। प्राणी मात्र के प्रति हमारी प्रेम की भावना होनी चाहिए। हमारे मन में ऐसे विचार होने चाहिए कि जगत् में सारे जीव सुख से रहें। सभी को जीने का मौका मिले। अवसर मिले। जीओ और जीने दो। मैं

भी जी रहा हूं और दूसरे को भी जीने का अवसर है। जीने की छूट है—इस प्रकार का लक्ष्य बनाएंगे तो अपने आप में कुछ सफल हो पाएंगे। अर्जुन माली जो भगवान के चरणों में दीक्षित हुआ और अल्प समय में अपने आप को ऐसा साध लिया, ऐसा साध लिया और साधकर सिद्ध, बुद्ध-मुक्त हो गए। हम सुनते हैं किंतु साधते नहीं हैं। सुनने के साथ हमें भी साधने का प्रयास करना चाहिए। 'जे एगं नामे से बहुनामे' एक को नमा लिया तो बहुत का काम हो जाएगा। बहुत को नमाकर हम अपने आपको अरिहंत की दिशा की ओर मोड़ेंगे। हमने इस मानव जीवन को प्राप्त किया है अपने महान् पुण्य से हमें धर्म की प्राप्ति हुई है—इस धर्म की लाज रखने वाले बनेंगे। इस धर्म को बढ़ाने वाले बनेंगे और इस धर्म की आराधना करके शाश्वत सुख को प्राप्त करेंगे।

01 सितम्बर, 2019
(पर्युषण पर्व का पांचवां दिन)

13

प्रवाह नहीं पराक्रम

शांति जिन एक मुज विनति...

अंतगडदसाओ का वाचन निरंतर चल रहा है। प्रतिवर्ष इसका वाचन होता है। हम प्रतिवर्ष इस सूत्र का वाचन सुनते हैं। एक-एक पात्र का वर्णन जिस प्रकार से हमारे समक्ष उपस्थित होता है, हमारे भीतर प्रेरणा जगनी चाहिए। बहुत सारे प्रसंग स्पष्ट होते हैं। अतिमुक्त कुमार के प्रसंग को हम सुने होंगे और हमने विचार भी किया होगा। कई बार बात उठती है कि दीक्षा के लिए कौन-सी उम्र होनी चाहिए? किस उम्र में दीक्षा ली जानी चाहिए? समाज में एक समय यह प्रसंग भी उपस्थित हुआ कि बाल दीक्षा नहीं होनी चाहिए। लोग सोचने वाले कम होते हैं और गतानुगतिक चलने वाले ज्यादा होते हैं। एक व्यक्ति कोई बात बोलता है और लोग हां में हां मिलाने वाले हो जाते हैं; विचारते कम हैं। कुछ वर्षों पहले साबुदाना की बात उठी थी। मेरे खयाल से याद होगा बहुतों को, साबुदाना वाली बात। एक महासती जी, जो उस फैक्ट्री में रुकी और उनके द्वारा जो अभिलेख प्रस्तुत हुआ; लोगों ने सोचा नहीं, समझा नहीं, विचार किया नहीं और अपने-अपने नाम से थोड़े बहुत फेर-फारकर के साथ अखबारों में देना शुरू कर दिया। और थोड़े दिनों में वापस समाधान निकला कि जो बात कही गई थी वह साबुदाना के संबंध में नहीं है। उसका जो वेस्टेज है, उसके संदर्भ की बात है। कुछ वर्ष पहले संथारे का प्रकरण उठा और बहुत लोगों ने अपनी प्रतिक्रियाएं देना प्रारम्भ कर दिया। उसमें सबसे बड़ी बात यह कि जैन कहलाने वाले ही ज्यादा प्रतिक्रिया देने वाले हुए। जबकि उनको मालूम ही नहीं होगा कि संलेखना क्या होती है? कैसे होती है? उसका स्वरूप क्या है? जैसे बरसाती मेढक पैदा होते हैं और टर्र-टर्र करते हैं वैसे ही लोग टर्र-टर्र करने लग जाते हैं।

दीक्षा के संदर्भ में भी कुछ वर्षों पहले आचार्य पूज्य श्री जवाहरलाल जी म.सा. के समय एक हवा थी। एक प्रवाह था कि बाल दीक्षा नहीं होनी चाहिए। जब आचार्य पूज्य श्री जवाहरलालजी म.सा. के पास श्री सिरेमलजी म.सा. अल्प उम्र में दीक्षित हुए तो हवाएं चली कि बाल दीक्षाएं नहीं होनी चाहिए। यदि हम इतिहास उठा कर देखें तो बालवय में दीक्षा लेने वाले, उन लोगों ने जिन शासन की कितनी-कितनी प्रभावना की? वे संयम साधना में प्रखर बने और प्रखर साधना से समाज को भी लाभान्वित किया। बहुत सारे नाम हमारे सामने आ सकते हैं। आचार्य हेमचंद्र अल्पवय में दीक्षित हुए। आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. छोटी उम्र में दीक्षित हुए। श्री सिरेमल जी म.सा. की बात हम बोल गए हैं पहले, जिनको लोग पंडित जी महाराज के नाम से पहचानते थे। आचार्य श्री तुलसी छोटी उम्र में दीक्षा लेने वाले बने। इससे पहले के और भी ढेरों नाम हैं और स्वयं भगवान महावीर के पास दीक्षा लेने वाले अतिमुक्त कुमार भी हैं।

वस्तुतः, यदि विचार करें तो शरीर की उम्र से दीक्षा का इतना गहरा संबंध नहीं है। शरीर प्राप्त किए हुए कितने वर्ष हुए हैं इसका कोई मायने नहीं है। यदि शरीर और उम्र, वह दीक्षा का कारण हो तो अमुक वय में सभी को वैराग्य चढ़ जाना चाहिए। शादी-विवाह के लिए हो सकता है कि उसमें शरीर की वय को/शरीर की उम्र को देखते होंगे कि कितने वर्षों का हो गया और उसकी शादी की तैयारी होने लग जाती है। विचार चालू हो जाते हैं। किंतु दीक्षा के लिए यह बात नहीं है। 'दीक्षा पराक्रम है, प्रवाह नहीं है।' शादी-विवाह प्रवाह है किंतु दीक्षा? यह पराक्रम है। और यह पराक्रम शरीर से नहीं; मन से, बुद्धि से होता है। अपनी प्रज्ञा से होता है और जिसकी ऐसी मति होती है, जिसकी ऐसी प्रज्ञा होती है, ऐसी बुद्धि होती है वही पराक्रम करने में समर्थ होता है। हर कोई वह पराक्रम नहीं कर सकता है। आप देखो अतिमुक्त कुमार थोड़े समय में समझ गया कि 'जो जानता हूं वह नहीं जानता और जिसको नहीं जानता वह जानता हूं।' यह पहेली बड़े-बड़े लोग नहीं जानते। इस पहेली को बड़े-बड़े लोग भी नहीं समझते हैं। इस पहेली का अर्थ किसने समझ लिया? माता के सामने जब यह बात उन्होंने कही तो माता ने कहा, बेटा! पहेली मत बुझा। समझ सकते हैं कि उस उम्र में रही हुई माता भी इसके अर्थ को नहीं समझ पाई और हम लोगों में से बहुत-से लोग शब्दों के अर्थ को जानते हैं किंतु सचाई का स्पर्श हम में से कितने कर पाते हैं? और वे

समझ गए या नहीं समझ गए? समझ ही नहीं गए अतिमुक्त कुमार बल्कि सचाई को उन्होंने स्वीकार करने का पूरा लक्ष्य बना लिया। जन्म लेने वाला मरेगा ही, यह निश्चित है। जन्म लेने वाले की मृत्यु अवश्यंभावी है। किंतु कब मरेगा, कहां पर मरेगा, किस प्रकार से मरेगा ये अज्ञात है। नहीं जानते हम कि कैसे, कहां मरेंगे?

शरीर की वय पर यदि विचार करें तो छेदोपस्थापनीय चारित्र के लिए लगभग नौ वर्ष की उम्र होना बताया है।

कृष्ण वासुदेव के प्रकरण में हम सुने होंगे कि उनकी मृत्यु कहां पर हुई थी। कहां जन्म लिया कहां पर लालन-पालन हुआ? कहां पर राज किया और कहां मृत्यु हुई?

कहां जन्मया, कहां उपन्या, कहां लड़ाया लाड़?
कुण जाने क्या होवसी, कहां पड़ेगा हाड?

यह शरीर कहां गिरेगा इसकी मृत्यु कहां होगी इससे हम अनजान हैं। मरेंगे यह बात फाइनल है और यह भी जानते हैं कि मरने वाले जीव चतुर्गति संसार में नरक, तिर्यंच, देव या मनुष्य– इन चार गतियों में उत्पन्न होते हैं। किंतु कौन-सा जीव कहां उत्पन्न होगा यह जानते हैं क्या? नहीं जानते हैं। नहीं जानते हैं तो फिर हमने जानने का प्रयत्न क्यों नहीं किया? जो चीज हम नहीं जान रहे हैं उसको जानने के लिए प्रयत्न करना चाहिए या नहीं करना चाहिए? प्रयत्न करना तो चाहिए। यह होना तो चाहिए किंतु हम कितना कर पाते हैं और क्या कर रहे हैं? व्यापार कैसे बढ़े उसके लिए हमारा प्रयत्न होता है। व्यापार में लाभ कैसे ज्यादा मिल सकता है, लाभ ज्यादा कैसे कमाया जा सकता है उसके लिए भारी भरकम फीस लेने वाले ट्रेनरों के पास हम ट्रेनिंग भी लेते हैं और निश्चित ही कुछ अंतर पड़ता ही होगा। नहीं तो क्यों जाते किसी ट्रेनर के पास? उनके पास क्यों पहुंचते? चीजें वही होती हैं। थोड़ी बहुत समझ की फर्क के साथ शायद वह सही रूप से हमारी समझ में आ जाती है। पहले वैसे समझ में नहीं आई पर उन्होंने जिस प्रकार से समझाया वह चीज समझ में आ गई।

आत्म कल्याण के लिए हम कितना पुरुषार्थ कर रहे हैं? आत्म कल्याण के लिए हमारा क्या पराक्रम हो रहा है? हम उसके लिए क्या प्रयत्न कर रहे हैं? खाना-पीना, नहाना-धोना– ये सारी क्रियाएं होती हैं। पैसे कमाने की

क्रियाएं होती हैं। उसके लिए बहुत सारे प्रयास होते हैं। किंतु आत्म कल्याण, सही जीवन जीने का तरीका जानने के लिए हमारे पास समय कहां है? प्रयत्न कहां है? जितना भी धन कमाओगे साथ में कुछ भी जाने वाला नहीं है। यह भी हम जानते हैं। कौन यह नहीं जानता है कि कमाया हुआ धन हमारे साथ में नहीं चलेगा? यह कौन नहीं जानता है? कोई जानता है कि कमाया हुआ धन साथ में ले जा सकते हैं? मेरे खयाल से यहां बैठने वाले इस बात को समझ रहे होंगे। इस बात को अच्छी तरह से जान रहे होंगे। कितना भी कमा लो किंतु साथ में कुछ भी जाने वाला नहीं है। 'जे ना चाले संगाथे, तेनी ममता शा माटे' जो तुम्हारे साथ चलने वाला नहीं है उसकी ममता क्यों? और लगाव किससे होता है? लगाव किससे है? (जोर देते हुए) किससे है? जो हमारे साथ जाने वाला तत्त्व नहीं है उससे हमारा लगाव है या जो चीजें हम साथ में ले जा सकते हैं उससे हमारा लगाव है?

श्रीमद् भगवती सूत्र में भगवान से एक प्रश्न किया गया कि भगवन्! ज्ञान इस भव में है, परभव में है या तदुभय भविक है? अर्थात् जो ज्ञान मैं यहां कर रहा हूं इसी भव में रहेगा या आगे भी वह ज्ञान काम में आएगा? वह ज्ञान आगे भी रह सकता है या नहीं रह सकता है? भगवान ने बताया कि वह ज्ञान इस भव में भी है, परभव में भी वह है और आगे के भवों में भी वह ज्ञान रह सकता है। दर्शन के विषय में भी यही उत्तर मिला। चारित्र, तप, संयम– ये केवल इसी भव में है, परभव में नहीं। यहां से हम किसी दूसरे भव में चले गए। हो सकता है मनुष्य जन्म ही प्राप्त कर लिया और हमें साधु बनने का मौका मिल गया। किंतु जन्म से लेकर एक अवधि तक वह संयम नहीं रहेगा। जो निरंतरता होनी चाहिए वह निरंतरता नहीं रहेगी। किंतु ज्ञान, वह निरंतर रह सकता है। दर्शन, जिसको हम श्रद्धा कहते हैं वह श्रद्धा भी निरंतर रह सकती है। किंतु चारित्र, संयम और तप– इनकी आराधना वर्तमान में ही हो सकती है। ये परलोक में हमारे साथ जाने वाले नहीं हैं। किंतु इनसे जो पुण्य उपार्जित होगा; चारित्र की, संयम की आराधना करते हुए जिस पुण्य का लाभ आत्मा को मिलेगा वह पुण्य उसके साथ में जाने वाला है।

संयम की आराधना, सामायिक, पौषध की आराधना किस उद्देश्य से होनी चाहिए? उसका उद्देश्य क्या होना चाहिए? क्या अच्छा पुण्य कमा लें इसलिए तप किया जाय? पुण्य लाभ के लिए तप अज्ञानी करते हैं। जिसने तत्त्व को जान लिया वह जानता है कि तप का उद्देश्य कर्मों की निर्जरा है।

उसके लिए भगवान ने कहा है कि 'नऽन्नत्थ निज्जरट्ठयाए तवमहिट्ठेज्जा' एक मात्र निर्जरा के लिए ही तप किया जाय। मासखमण-मासखमण की तपस्या करने वाले अज्ञानी जीव लोकरंजन, यशकीर्ति या पुण्य-वैभव प्राप्त करने के लिए तप कर लेते हैं। किंतु वे धर्म की 16वीं कला को भी प्राप्त करने में समर्थ नहीं होते हैं। जबकि सम्यक् दृष्टि भाव के साथ एक नवकारसी का तप भी किया जाता है तो वह बड़ा महत्त्वपूर्ण होता है। वह कर्मों की निर्जरा कराने वाला होता है। नवकारसी के विषय में भी बहुत सारी भ्रांतियां चलती रहती हैं। जितने पंथ, मत उससे ज्यादा धारणाएं, परम्पराएं हैं। मेरे दिमाग में कुछ बात आई, उसके दिमाग में कुछ बात आई, किसी और के दिमाग में कुछ बात आई और तर्क के बल पर हमने किसी बात को स्वीकार कर लिया। आगम के आधार पर यदि हम विचार करें तो नवकारसी, रात्रि चौविहार के साथ होनी चाहिए। सूर्य अस्त के साथ चौविहार और रात भर कुछ भी नहीं लेना और सूर्य उदय के बाद 48 मिनट का समय लेना। कभी-कभी हम तर्क लगाते हैं कि उग्गए सूरे-सूर्य उदय का पाठ है इसलिए सूर्य उदय के बाद से पच्चक्खाण है। 6:20 तक दिन उग जाता है और सवा छः बजे तक खा लो, पी लो। फिर रोजा में और आपके उपवास में क्या अंतर होगा? बल्कि रोजा आपसे भारी पड़ जाएगा। आगे बढ़ जाएगा। आप रात में खाना पीना करोगे लेकिन आपका दिन में भी पानी पीना नहीं छूटेगा। आप पानी पी लोगे। किंतु कहा जाता है कि रोजे में दिन में खाना-पीना कुछ भी नहीं होता है। जबकि हम दिन में पानी पी लेते हैं। क्योंकि हिंदू समाज में तथा जैन समाज में दिन में खाने पीने की बात कही और रात्रि त्याग की बात कही है। वहां उलटा मिलेगा। वहां पर मुस्लिम लोग रात्रि में खाएंगे। इस दृष्टि से उपवास से रोजा भारी पड़ जायेगा।

हम लोग सीधे हाथ धोते हैं। वे लोग उलटे हाथ धोते हैं। आप माला कैसे गिनते हो? आप सीधी माला गिनते हो और वे उलटी माला गिनते हैं। यानी आप मनकों को अपनी तरफ (हृदय की तरफ) लेते हो वे मनकों को बाहर की ओर धकेलते हैं। आप लिखोगे इधर से, वो लिखेंगे उधर से यानी वे राइट से चालू करेंगे और लेफ्ट में लिखते हुए जाएंगे। आप लाइन में लेफ्ट से लिखना प्रारम्भ करेंगे और राइट तक लिखेंगे। वे लोग राइट से लिखना प्रारम्भ करेंगे। राइट से शुरू करके लेफ्ट में पहुंचते हैं। ये अंतर है। राम शब्द का उच्चारण करो होंठ बंद होगा या खुलेगा? और दूसरी तरफ अल्लाह का

उच्चारण करो होंठ खुले रहेंगे। आप लोग अब प्रयोग करके देख रहे हो कि होंठ किसमें खुल रहे हैं और किसमें बंद हो रहे हैं। मुंह बंद रहता है या खुला रहता है? यह संस्कृति की भिन्नता है। किंतु यदि हम लें अच्छाइयां कहीं से भी तो देखें कि इसमें उनका रीजन क्या है हम नहीं कह सकते। किंतु हम उसका सही रीजन ले सकते हैं। अपन चाहते हैं बाहर के विकार भीतर नहीं जायें और वे अपने भीतर के विकारों को बाहर निकालेंगे। वे चाहते हैं भीतर के विकार बाहर निकल जाएं। माला के मनकों को बाहर की ओर धकेलते हुए गिनेंगे यानी अपने विकारों को बाहर फेंक रहे हैं।

वस्तुतः, यही रीजन है तो वह एक दृष्टि है। हमारे यहां पर जब हम राम कहते हैं, मतलब बाहर को छोड़ो। अन्दर में प्रवेश करो। आत्मस्थ बनो। इस प्रकार हम राम, अरिहंत और बहुत-से नाम बोलते हैं तब हमारा मुंह बंद होता है। इसका मतलब है कि बाहर के विकारों को भीतर प्रवेश नहीं दिया जाए। तुम अपने भीतर में रमण करो! दोनों को मिला लोगे तो भीतर के विकारों को बाहर निकालेंगे तो भीतर में रमण हो पाएगा। भीतर विकार भरे रहेंगे तो वहां आत्मा का रमण संभव नहीं होगा। खैर, यह तो एक विषय आ गया। बीच में बात आ गई इसलिए कुछ बोल दिया। मूल है नवकारसी आदि तप की समीक्षा। किंतु नवकारसी का तप भी यदि सम्यक् क्रिया के साथ किया जाता है तो वह कर्मों की महान् निर्जरा कराने वाला होता है। बताया गया है कि एक मिथ्यादृष्टि जीव, मान लो एक उपवास करता है और एक सम्यक् दृष्टि जीव उपवास करता है तो दोनों की निर्जरा में असंख्यात गुणा अंतर होगा। एक सम्यक् दृष्टि जो तप कर रहा है, एक व्रतधारी श्रावक उसी तप को स्वीकार कर लेता है तो उसके अध्यवसायों में और भी निर्मलता होगी क्योंकि वह जानने लगा है। उसकी निर्जरा असंख्यात गुणा होगी। उससे प्रमादी साधु की निर्जरा असंख्यात गुणा होगी और अप्रमाद भाव में रहने वाला वही निर्जरा करता है तो उसकी निर्जरा और असंख्यात गुणा होगी। और फिर श्रेणी आरोहण करे उसकी निर्जरा तो क्षण-क्षण में बढ़ती हुई चली जाती है।

जैसे-जैसे हमारे भावों की विशुद्धि होती है। जैसे-जैसे हमारे अध्यवसाय पवित्र होते जाते हैं। जैसे-जैसे हमारे अध्यवसाय शुद्ध होते जाते हैं वैसे-वैसे कर्मों की निर्जरा अधिक होती हुई चली जाती है। मिथ्यात्वी में वे अध्यवसाय नहीं बन पाते हैं। ज्ञान होने के बाद अंतर में प्रकाश प्रकट हो

गया और अंतर में प्रकाश जब प्रकट हो गया तो उस समय जो उल्लास होगा वह अज्ञान अवस्था में नहीं होगा। जैसे एक शब्द हम बोलते हैं। हमें शब्द का अर्थ मालूम नहीं है तो उसमें हमारा उल्लास नहीं बनेगा और शब्द के अर्थों को जान रहे हैं तो उसमें हमारा उल्लास बहुत बढ़ेगा। बढ़ेगा या नहीं बढ़ेगा? एक शब्द होता है, 'अर्चा', क्या अर्थ होता है अर्चा का? लिखो। क्या लिखा? लिखो और अब बताओ अर्चा का क्या अर्थ होता है? बताओ इसका अर्थ क्या है? (प्रत्युत्तर– पुराना धान) आप लोग बोल रहे हैं कि पुराना धान। अर्चा शब्द शरीर के लिए भी प्रयुक्त हुआ है। अर्चा शब्द कषायों के लिए भी प्रयुक्त हुआ है और अर्चा शब्द पूजा-अर्चना के रूप में भी प्रयुक्त हुआ है। कहां से कहां चली गई बात? इसीलिए कहा जाता है कि यथाप्रसंग शब्द का अर्थ लेना चाहिए। खाली शब्द के अर्थ से भी बात गड़बड़ी में पड़ जाएगी।

पूज्य गुरुदेव कई बार फरमाया करते थे कि एक व्यक्ति/एक मालिक भोजन करने बैठा और नौकर से कहा सैन्धव लाओ 'सैन्धवम् आनय'। जो सिंधु देश में पैदा होने वाला होता है उसे भी सैन्धवम् कहते हैं। 'सैन्धवम् आनय'। सेंधव लाओ। सिंधु में तो नमक भी पैदा होता है और घोड़े भी होते हैं। वहां के घोड़े भी बड़े मशहूर हैं। वो भोजन कर रहा है तो अर्थ होगा– सेंधा नमक मांग रहा है। और उसकी जगह पर अगर घोड़ा लाकर खड़ा कर दे तो? समझदारी हो जाएगी क्या? एक योद्धा है। सम्राट है। युद्ध के लिए तैयारी कर रहा है और उसने कहा, 'सैन्धवम् आनय' और उसके सामने कटोरी में नमक भरकर लेकर आ जाये तो...। वहां पर क्या लाना चाहिए? (प्रत्युत्तर– घोड़ा) वहां पर तो घोड़ा लाना था। वह नौकर बोल देगा कि आपने सैन्धव मांगा था तो मैं लेकर आ गया। यदि प्रसंग से अर्थ नहीं लेंगे तो बख्शिश मिलेगी या गालियां मिलेंगी? अरे! नासमझ, इतना भी नहीं समझता है। मैं युद्ध के लिए जा रहा हूं तो इस समय मुझे घोड़े की आवश्यकता है या नमक की? आप लोग बोलोगे कि नमक लेकर आया तो ठीक ही किया। नमक से नजर नहीं लगेगी। डॉक्टर साहब आपने शादी की है क्या? घोड़े पर बैठे तो और भी साथ में कोई बैठा था क्या? अकेले ही बैठे थे? अकेले बैठते हैं या पीछे कोई बैठता है। छोटी बच्ची बैठती है। छोटा बच्चा बैठता है। और क्या करता है वो? नमक अंवारे। क्यों? कांई वास्ते अंवारे? किसलिए? नमक इसलिए अंवारता है ताकि नजर नहीं लग

जाए। युद्ध के लिए जाते हैं तो नमक लेकर आ गए! नजर नहीं लगेगी। वहां नमक का क्या काम है? अर्थ विन्यास करने के लिए भले कह लो कि राजा को नजर नहीं लग जाए। बड़े शूरवीर हैं राजा इसलिए नजर लग जाएगी। इसलिए जहां जाएगा वहां नमक की पोटली साथ बांध दी कि आपको नजर नहीं लगे। यह टोटका है। टोटके की बात अलग है। किंतु सामान्यतः युद्ध के लिए राजा सज-धज कर तैयार है। योद्धागण, राजा, सेनापति सभी हैं तो कर्मचारी उनके लिए घोड़ा लेकर आएगा।

पहले मैंने एक दिन बताया था कि अरिष्टनेमि भगवान शादी के लिए जा रहे थे। उन्होंने सारथि से कहा कि ये पशु-पक्षी किसलिए बंद किए हुए हैं? तो सारथि ने बताया कि आपके विवाह के कारण से। और वैसे ही भगवान के चेहरे पर ऐसा झलका कि मेरे लिए? भगवान ने मुंह से कुछ नहीं कहा और सारथि ने सारे बाड़े और पिंजरों को खोल दिया। पशु-पक्षी चले गए। भगवान के मन की अनुकूल बात हुई या प्रतिकूल बात हुई? मनोगत भावों को जानने वाले व्यक्ति की कीमत क्या सबके समान होती है? नहीं! आईएएस की परीक्षा देने वाले क्या समान रूप से परीक्षा में उत्तीर्ण हुए? प्रतिशत कम ज्यादा होता है किंतु सभी उत्तीर्ण हो गए। किंतु सबकी समझ एक समान होगी क्या? कोई राष्ट्रपति, कोई प्रधानमंत्री के कार्यालय में काम कर रहा है। उसको आमंत्रित करके वहां पर रखा गया और कोई सामान्य अवस्था में ऑफिसर बनकर काम कर रहा है। दोनों में अंतर क्या है? (प्रतिध्वनि—सीनियर, जूनियर) ऐसी बात नहीं है। जूनियर, सीनियर से ज्यादा समझदार हो सकता है। जूनियर को भी मौका मिल सकता है बशर्ते उसकी समझ कितनी गहरी है। उसकी समझ कितनी पैनी है। वह सब बात को इतनी जल्दी भांप लेता है। सामान्यतः, कार्य कराने वाला क्या बोल रहा है उसके बोलने के आशय को समझ लो। उसके कहने का तरीका क्या है? वह आगे क्या चाहने वाला है? ये बातें भांप लेता है तो आदमी की कीमत है।

अकबर बादशाह ने बीरबल से पूछ लिया की सबसे बुद्धिमान् कौन है? कौन होते हैं सबसे बुद्धिमान्?

'आगल बुद्धि बाणियो, पाछल बुद्धि जाट और
तीजी बुद्धि तुरकड़ो, ब्राह्मणो सपमपाट'

और आगे जाने दो, हमको क्या करना है? जो अभी कहा, उसमें बात गहरी है। प्रमाणित करो जो कहा गया उसके पीछे बात गहरी है। ब्राह्मण को

आपके लोक व्यवहार से मतलब नहीं है। जो अध्यात्म में जीता है वह ब्राह्मण है। जो ब्रह्म में जीता है वह ब्राह्मण है। जन्म से कोई भी ब्राह्मण हो गया उससे कोई मतलब नहीं है। किंतु जो ब्रह्म में जीता है वही ब्राह्मण है। जो अध्यात्म में जीता है वह ब्राह्मण है। मुनि को भी ब्राह्मण कहा गया है क्योंकि उसको दुनियादारी से कोई मतलब नहीं है। उसके दिमाग में चतुराई नहीं होनी चाहिए। तिकड़म नहीं होनी चाहिए। उसका दिमाग सरल होना चाहिए। शांत स्वभाव होना चाहिए—एकदम शांत और प्रसन्न। उसको दांव-पेच से क्या लेना-देना? वह क्यों दांव-पेच खेलेगा? दांव-पेच खेलने के लिए दुनिया में बहुत है। इसमें कहा गया सबसे पहली बुद्धि किसकी है? किसमें है? बनिये में। बुद्धि प्रखर है किंतु राग-द्वेष जीतने की बुद्धि सक्रिय नहीं है। राग-द्वेष जीतने की बुद्धि कहां पर है? बाजार में मिलती है क्या राग-द्वेष जीतने की बुद्धि? राग-द्वेष जीतने की बुद्धि हमारी इतनी सक्रिय नहीं है। हमारा स्वार्थ सिद्ध कैसे हो सकता है वह प्रखर है। सामने वाला क्या करेगा और मैं उससे कैसे धन कमा लूं? मैं किसका क्या अर्थ लगाऊँ यह बुद्धि प्रखर है। लोगों ने अपने उत्तर बताये किंतु बीरबल ने कहा कि हुजूर! बनिया लोगों में बुद्धि सबसे प्रखर होती है। सभा में एक बनिया बैठा हुआ था बुलाया उसको। अकबर ने राजकुमार-शहजादे को बुलाया और कहा कि इस शहजादे की कीमत बताओ? कितनी बतानी है? इसकी कीमत आंको? बेचारा व्यापारी परेशानी में आ गया कि क्या आंके? कम आंके तो मुश्किल है और ज्यादा आंके तो भी मुश्किल। कहेंगे कि चापलूसी कर रहा है।

उसने कहा, हुजूर! मुझे 24 घंटों की मुहलत चाहिए। अकबर ने कहा, दिए 24 घंटे। 24 घंटे के बाद तुम्हें कीमत बतानी होगी। अब ऐसी स्थिति में उपवास अपने आप हो जाएगा या करना पड़ेगा? करने की जरूरत होगी क्या? अरे! खाने-पीने की रुचि ही खत्म हो जाएगी। घर पर आया और पलंग पर निढाल होकर गिर गया। घरवालों ने कहा कि क्या हुआ? बनिये ने कहा, बोलो मत, बोलो मत। घर वाले बोले, भोजन तो कर लो। वह बोला कि मेरे खाने-पीने की रुचि नहीं है। मुश्किल से खाना-पीना करवाया। प्राचीनकाल में शाम को हथाई हुआ करती थी गांव में। आज भी ऐसा चबूतरा बना हुआ होता है जहां गांव के लोग आकर 'भळे' होते हैं और दिनभर में क्या-क्या हुआ उसकी समीक्षा करते हैं कि कहां पर क्या हुआ? जम्मू कश्मीर में 370 धारा हट गई तो क्या हुआ? कहां पर क्या हुआ?

कहां क्या हो जाएगा? सेठ जी भी जाया करते थे। उस दिन भी गए लेकिन चुपचाप बैठ गए। जाना तो पड़ता है किंतु आज कुछ भी बोलते नहीं है। एक बुजुर्ग का ध्यान उधर गया। उस बुजुर्ग ने सेठ जी से पूछा कि क्यों भाई! चुपचाप बैठे हो। बोल नहीं रहे हो क्या हो गया? उसने कहा कि आज तो हालत खराब है। क्यों हालत खराब है? आज राजसभा में गया था और वहां पर गले में माला आ गई। बादशाह ने शहजादे को खड़ा कर दिया और पूछा कि इसकी कीमत कितनी है आंको। मेरे को शहजादे की कीमत आंकने को कहा गया। बुजुर्ग ने कहा, अरे! इसमें सोचने की क्या बात हो गई? बड़ी-बड़ी समस्याएं भी हल हो जाती हैं तो यह कौन-सी बड़ी समस्या है? सेठ ने कहा, आपको यह समस्या नहीं लग रही है। मेरे तो प्राण सूख रहे हैं। न किसी काम में रुचि हो रही है और न ही खाने-पीने में रुचि हो रही है। किसमें रुचि है? कहां चली गई रुचि? यह बड़ा मनोविज्ञान है कि किसी को कोई झटका लगे वह भीतर ही भीतर कुछ स्थितियां बनाता रहता है। भीतर ही भीतर कुछ समस्याएं बनती रहती हैं और उसके दुष्परिणाम बहुत खतरनाक होते हैं। और कई बार इतने खतरनाक होते हैं कि डॉक्टर के पास जाओ तो उसकी सारी मशीनें लग जाती हैं लेकिन सारी मशीनें फेल। मतलब उनकी मशीनों में कोई रोग नहीं है किंतु रोगी तो रोगी है। वह बीमार अवस्था में है। किंतु उसका रोग मालूम नहीं होता है।

होमियोपैथिक चिकित्सा पद्धति में इस मनोविज्ञान का भी समावेश है कि आदमी किस समय क्या विचार कर रहा होगा और उसका क्या परिणाम होगा। थोड़ी बहुत जो मुझे याद है, डॉक्टर परमार ने एक बात बताई कि एक औरत उनके पास आई और उसने अपनी समस्या रखी। उससे कहा कि अपनी सारी बात बताओ, हिस्ट्री बताओ। तो उसने सारी हिस्ट्री बताई कि पति नाराज है। बाहर गया हुआ है। अलग हो गया है। डॉक्टर साहब ने पूछा, तुम उससे मिलना चाहती हो या दूर रहना चाहती हो? उसने कहा, मैं चाहती हूं कि हमारा मिलाप हो जाए। उन्होंने कहा कि हो जाएगा। वह न फोन करती है न ही अन्य चेष्टा। किंतु जैसा डॉक्टर साहब बोल रहे थे। जैसा मेरी स्मृति में रहा उन्होंने एक दवा दी और दूसरे या तीसरे दिन उसके पति का फोन उसके पास आ गया। क्या हुआ? कैसे हुआ? हमारी समझ के बाहर की बात है। हमारी समझ में नहीं आएगी। जहां होमियोपैथिक चिकित्सा पद्धति में बताया कि किसी को गहरा सदमा लगा हो। जैसे किसी की आर्थिक स्थिति

डांवांडोल हो रही है या और कोई घटना घट गई हो। आगे जीविका का क्या होगा यह भय पैदा होता है। आदमी में यह भय जिस समय पैदा होता है उस समय उसके भीतर बीमारी चालू हो जाती है। वह बीमारी उस समय ज्ञात नहीं हो पाती है। किंतु वह गंभीर बीमारी समय आने पर प्रकट होती है उसके उद्भव की आप यदि खोज करेंगे तो जिस समय यह झटका लगा था उस समय वह बीमारी चालू हो गई। कितने वर्षों से बीमारी है यह कुछ डॉक्टरों की जांच में बात आ जाय यह अलग बात है। सामान्यतया वह समझ में नहीं आती।

जोधपुर गुरुदेव का चातुर्मास हुआ। चातुर्मास से पहले गुरुदेव का बालोतरा, समदड़ी होते हुए जोधपुर आना हो रहा था। बीच में धुंधाड़ा की या अजीतगढ़ की बात है। एक नदी के इस पार है और दूसरा उस पार। शायद अजीतगढ़ की ही बात है। वहां गुरुदेव का विराजना हो रहा था। वहां एक मस्तमौला व्यक्ति आया। लंबा-चौड़ा, हट्टा-कट्टा और कुछ का कुछ बोल रहा था। एक प्रकार से डिप्रेशन में चला गया था। सामान्य रूप से कहा नहीं जा सकता था कि वह डिप्रेशन में है। उसने कुछ बातें ऐसी बोली हम लोग घबरा गए कि यह क्या बोल रहा है? यह क्या हो रहा है, कैसे हो रहा है? आचार्य श्री ने उसके साथ जो भाई आया था उससे पूछा, क्या इसे कोई सदमा लगा या कोई घटना हुई? और सदमे से पहले उसकी स्थिति क्या थी? उस भाई ने कहा कि ऐसा एक घटनाक्रम हुआ और उसके बाद से इनकी ऐसी स्थिति हो गई है और इस प्रकार परिवर्तन हुआ है। एक ऐसी घटना हुई और वह झटका जो लगा उससे वह डिप्रेशन में चला गया। उससे इसके मस्तिष्क का संतुलन अस्थिर हो गया। हमको नहीं मालूम पड़ता है कि क्या हुआ किंतु ऐसी बहुत सारी घटनाएं हमारे विचारों के कारण घट जाती हैं। हमें यह भी याद नहीं रहता है कि वह घटना किस समय घटी।

एक बीमार व्यक्ति डॉक्टर के पास गया। उसने अपनी हिस्ट्री उसके सामने रखी। डॉक्टर ने कहा कि तुम्हारे मन में यह बात जमी हुई है कि मेरा भाई या मेरी बहिन कोई भी मेरी बात को नहीं मानेगा। तुमको इस बात का भय रहता है कि कोई तुम्हारी बात मानेंगे नहीं। बात आ गई सामने। अब बोलो। डॉक्टर क्या पूछ रहा है कि तुम्हारे मन में ये विचार चलते हैं क्या? वह व्यक्ति बोला कि हां, थोड़ा बहुत ऐसा विचार अवश्य रहता है। ये बीमारी

की जड़ है। ये मनोविज्ञान है जिससे बहुत कुछ बातें ज्ञात हो सकती हैं। आचार्य श्री ने जब उस व्यक्ति से सारी बातें पूछी और ये बात कही तो वह उत्तेजित हो गया। बोला, मैं देख लूंगा। ऐसा सुनकर हम सभी और घबरा गए। रात को सोने के पहले दरवाजे भी चारों तरफ से बंद कर दिए। सब लोग सोच रहे थे कि क्या होगा? कुछ नहीं हुआ। सुबह वह आकर स्वयं ही माफी मांगने लग गया। ये बातें, कुछ ऐसी बातें होती हैं जिनको हम समझ नहीं पाते हैं। इसलिए ज्ञानी जन कहते हैं कि अपने भीतर में इतना झटका मत लो। ये झटका जब आता है तो हम विचार करने लग जाते हैं कि मेरा क्या होगा? मेरी प्रतिष्ठा का क्या होगा? वह प्रतिष्ठा का भय कि मेरी प्रतिष्ठा कहीं खराब हो गई तो? वह भय जैसे ही मेरे भीतर पैदा होता है वह भीतर में कोई गम्भीर बीमारी पैदा कर देता है। धीरे-धीरे वह बीमारी बढ़ती हुई चली जाती है। कारण, वह केवल एक झटका होता है। वह झटका किसी भी रूप में हो सकता है। कभी आर्थिक स्थिति की गड़बड़ियों से हो सकता है और व्यक्ति सोचने लग जाता है कि अब आगे की जिंदगी कैसी होगी? कैसे जीवन कटेगा? मेरी प्रतिष्ठा कैसे बची रहेगी यह भी भय होता है। यह भय हमारे जीवन को संत्रस्त कर देता है। हमारे जीवन को अस्त-व्यस्त कर देता है। ऐसे भयों से बचना चाहिए।

सुपार्श्वनाथ भगवान की स्तुति करते हुए कहा गया है कि–

सात महाभय टालतो सप्तम जिनवर देव ललना।
सावधान मनसा करी, धारो जिनपद सेव ललना।
श्री सुपार्श्व जिन वंदिए।

ये सात महाभय हैं। सात भय यदि छूट जाएं तो जीवन में कोई चिंता नहीं रहेगी। कोई तनाव की बात नहीं। कोई शंका नहीं। एकदम शांत जीवन हो जाएगा और जब हमें ये भय लगे रहते हैं तो आदमी को लगता है न जाने कब क्या होगा। हर समय उसे भय लगा रहेगा। छोटी-छोटी बातों का भय होगा। मैं चल रहा हूं कहीं एक्सीडेंट नहीं हो जाए? एक्सीडेंट हो जाएगा तो क्या होगा? ये हो जाएगा, वो हो जाएगा। कई प्रकार के फितूर आदमी के दिमाग में चलते रहते हैं। ये मत समझ लेना कि इन फितूरों का कोई अर्थ नहीं है। उनकी कोई बात नहीं है। वे हमारे जीवन के आगे प्रश्नवाचक चिह्न बन जाते हैं। उनका प्रभाव हमारे जीवन पर पड़ता रहता है। हमारी समझ में/हमारे मनोभावों में/मनुष्य के जीवन में उनका प्रभाव होता जाता है और ऐसे में

हमारे भीतर में चेंजेज आता है। भीतर में बदलाव आता है। शायद हम नहीं जानते लेकिन उसके परिणाम आ जाते हैं। उसके कारण आदमी चिड़चिड़ा हो जाएगा। उसे कोई भी चीज सुहायेगी नहीं! किसी के साथ या किसी के प्रति मन में प्रद्वेष पैदा हो जाएगा। उसे कोई अच्छी बात भी कहेगा तो वह कहेगा, ज्यादा बोलो मत। ऐसी कई प्रकार की स्थितियां जीवन में होती हैं या उसके जीवन में निर्मित हो जाती हैं जिससे सामुदायिक जीवन भी बड़ा प्रभावित होता है। वह स्वयं भी दुःखी हो जाता है। स्वयं तनावग्रस्त हो जाता है और साथ वाले भी उसके कारण चिंतित हो जाते हैं कि इसको क्या हो गया? हो क्या गया, कारण भीतर में कहीं न कहीं कोई आसक्ति की बात रही हुई। व्यक्ति यह सोचता है कि मेरी एक गहरी समस्या है। वह है, मेरी जैसी प्रतिष्ठा है, मेरा जैसा यश है, मेरा यश कम नहीं होना चाहिए। मेरी प्रतिष्ठा में कमी नहीं आनी चाहिए। वह बनी रहनी चाहिए। मेरे बाहर का जो वातावरण है वह वातावरण एकदम सही रहना चाहिए। बाहरी दिखावे में और भीतरी विचारों में जहां पर द्वंद्व होता है वहां पर ऐसी स्थितियां होती हैं। जिसके जीवन में और बाहर के दिखावे में कोई फर्क नहीं होता है वहां पर सहसा ही ये स्थितियां पैदा नहीं होती हैं। जहां ये द्वंद्व होता है वहां दुविधा होती है। जी कैसे भी रहा है किंतु दिखावे में बाहर तो अच्छा ही दीखना चाहता है। भीतर में और बाहर में अंतर होता है वह सदा अपने को कपड़े से ढका हुआ रखेगा। शरीर में बीमारी है किंतु लोगों को वह दिखाना नहीं चाहता है। गर्मी में भी वह मोटा कपड़ा शरीर पर ढकेगा। गर्मी में भी वह कपड़ा ढके रखेगा क्योंकि लोगों को मालूम नहीं पड़ना चाहिए कि ये बीमारी मेरे शरीर पर है। यदि कभी वह चद्दर/वह कपड़ा हवा के कारण उड़ने लगेगा तो वह सावधानी रखेगा। उसके मन में सदा यह भय बना रहेगा कि ये चद्दर कहीं खुली नहीं रह जाए। ये मेरी चद्दर हट नहीं जाए। इसका परिणाम उसके मानसिक स्तर पर भी और शारीरिक स्तर पर भी होगा। कहीं-न-कहीं वह मानसिक या शारीरिक रूप से रुग्ण रहेगा। किंतु जो ज्ञानी पुरुष होते हैं वे मानसिक रूप से रुग्ण नहीं होते हैं। क्यों नहीं होते? क्योंकि वे ऐसी स्थितियों को नहीं पालते। वे भीतर जैसा जीवन जी रहे हैं वैसा ही उनका बाहर का जीवन होता है। ज्ञानी जन बाहर के जीवन को अलग तरह से दिखाने की कोशिश नहीं करते हैं। बिल्कुल भी कोशिश नहीं करते हैं।

एक भाई आए थे अल्पसंख्यक आयोग के सदस्य श्री पुनीत जी जैन। वे कहने लगे कि महाराज, ये चेहरे बड़े अच्छे लग रहे हैं किंतु जब हमने सर्वे

किया तो ऐसे-ऐसे लोग भी सामने आए जैन समाज में जिनको देखकर आंखों में आंसू आ जाते हैं। उनकी आंखों की हालत भी ऐसी रहती है कि बस आंसू निकलने ही वाले हैं। बड़ी विचित्र दशा है। ऊपर से चेहरे सबके खिले हुए होते हैं। ऊपर से कपड़े सबने अच्छे पहने हुए हैं किंतु भीतर की सारी स्थितियां बिगड़ी रहती हैं। कोई व्यक्ति जल्दी से अपने भीतर की चीजों को बाहर प्रकट करना नहीं चाहता। उन्होंने कहा कि हम बड़ी मुश्किल से समझा पाते हैं। हम ये सारी चीजें अपनी तरफ से नहीं कर रहे हैं। सरकार की तरफ से सारी सुविधाएं दी जाती हैं कि इसका लाभ लो। हम अपनी तरफ से कुछ नहीं कर रहे हैं। उन्होंने यह भी बताया कि एक कार्यक्रम में लगभग 98 लोगों का चयन किया और उनको आर्थिक सहयोग, जो सरकार की नीतियों के अंतर्गत होता है उसका लाभ उनको दिलवाया। पता नहीं कितने लोग ऐसे होंगे जो बाहर की स्थिति, बाहर का स्टेटस अच्छा रखते हैं किंतु भीतर देखें तो...। देखें तो लिफाफा बंद है। भीतर में मजबूरी का लिफाफा है और उस लिफाफे में भी पत्र गायब है। वह पत्र, यानी जानने वाले अपनी-अपनी कठिनाई को जान रहे हैं कि हम कैसे जी रहे हैं? क्या बड़े और क्या छोटे? बड़ों का जो स्टेटस है वह बड़ों के लिए बड़ी दुविधा है और छोटों के लिए छोटी दुविधा होगी। किंतु जीना दुविधा में ही हो रहा है।

साधुओं के लिए भी दुविधा है। यदि बातों में, बातचीत में मन लगाता है तो ज्ञान ध्यान की हानि होती है। बातों में मन लगे तो ज्ञान-ध्यान की हानि होती है। और यदि मन स्थिर नहीं रहे तो प्रतिक्रमण की हानि होगी। बातें तो हम बोल रहे हैं किंतु ये दुविधा क्यों होती हैं? ये दुविधा होनी नहीं चाहिए। यदि हम अपने आप में जीयें तो कोई दुविधा हमें नहीं होगी। और इधर-उधर का कचरा, इधर-उधर की बातें– जैसे क्या हुआ, क्या नहीं हुआ। उसने क्या बोला, क्या नहीं बोला। अरे! किसने क्या बोला, किसने क्या नहीं बोला, क्यों टेंशन पालना? बोला होगा कुछ भी उसने मेरा क्या बिगड़ेगा? किंतु आदमी उन बातों को नहीं सोचकर कुछ और ही सोचता है। कई लोगों की हालत बड़ी खराब होती है। आपस में यदि कोई दो व्यक्ति बात कर रहे होते हैं और बातें करते-करते उसकी तरफ देख रहे होते हैं तो वह यही सोचता है कि हो ना हो मेरी बात ही कर रहे हैं। बात नहीं भी कर रहे होते हैं तो भी वह सोचता है कि मेरी बात कर रहे हैं! ये फालतू की परेशानी है। इसे क्यों मोल लेना? कोई आदमी क्या बात कर रहा है उससे लेना-देना क्या

है। मेरी बात कर रहा होगा, मेरी बात कर रहा होगा ऐसा वह व्यक्ति सोचता ही रहता है। क्या बातें कर रहा होगा? हजारों बातें हैं करने के लिए। फिर भी हमारी भावना बनती है कि मेरी ही बात कर रहा है। क्या मालूम किसकी बात कर रहा है? लेकिन व्यक्ति को यही लगता है कि मेरी बात ही कर रहा है। क्यों डरना? 'जो करना सो अच्छा करना' जो भी करना है अच्छा करना है। और अच्छा कर रहे हो तो फिर क्या डरना है?

जो करना सो, अच्छा करना, फिर दुनिया में किससे डरना॥

कोई कैसी ही बातें करे। भले ही मेरी बात करे। मेरी दस नहीं पचासों बात करे लेकिन मुझे उससे क्या लेना-देना? मेरे से पूछेगा तो मुझे जो जवाब देना है...। सामने वाला भले ही आगे-पीछे की कितनी ही बातें करे सामने करे तो मैं जवाब दे दूंगा। मैं जो भी बात है, जो भी जानकारी है, वह बता दूंगा। अगर मेरे भीतर सचाई है। मैं सही हूं तो क्यों डरना? जो-जो भी होगा बता दूंगा। क्या फर्क पड़ता है? बातों पर ध्यान क्यों देना? कितनी भी बातें करें उससे मुझे क्या लेना-देना? दुनिया में बहुत से लोग होते हैं किसी की भी बात कर सकते हैं। मेरी बात ही क्यों करेगा? यह हमें सोचना चाहिए। और जब हमें कुछ लेना-देना ही नहीं है, कुछ करना ही नहीं है तो भले ही हमारी पचासों बातें करे। कोई भले ही कितनी भी बातें करे किसी की बातों से मेरा कुछ भी बिगाड़ होने वाला नहीं है। सामने वाला भले ही कितनी भी बातें करें हम तो यही सोचें कि ज्यादा बात करने से आदमी की बुद्धि बिखर जाती है। बुद्धि बिखर जाएगी, मन बिखर जाएगा तो जिस कार्य में लगा होता है, जिस कार्य को वह संपन्न करना चाहता है उस कार्य को सही ढंग से संपन्न नहीं कर पाएगा। इसलिए बातें करते हों तो तुम चिंता मत करो। मेरी बात भी कर रहा है तो भले करे। यदि तुमने कुछ किया ही नहीं है तो फिर तुम्हारी बात क्यों करेगा? यदि हमारे भीतर भय है। डर है तो इसका मतलब है कि हमारे भीतर कुछ वैसा है। मतलब दाल में कुछ काला है। और चोर की दाढ़ी में...(प्रतिध्वनि– तिनका है) चोर की दाढ़ी में तिनका है। क्या मतलब हुआ?

एक दिन शायद पहले भी मैंने कहा था। राजनांद गांव में मेरा चातुर्मास चल रहा था और वहां पर संतों की कुछ सामग्री चली गई। मैंने दिमाग लगाया कि क्या हो सकता है? वन, टू, थ्री करके दिमाग लगाया। चातुर्मास के बाद वहां से निकले और विहार करके संयोग से दुर्ग जाना हुआ। वहां पर

व्याख्यान हो रहा था और उस भाई पर मेरी दृष्टि पड़ गई। मैंने व्याख्यान में सारी घटना, सारी बात इस प्रकार से कही कि राजनांद गांव में हमारे संतों का कुछ सामान चला गया और मैं जानता हूं वह व्यक्ति कौन है जो सामान उठाकर ले गया है। वह व्यक्ति अभी इसी सभा में मौजूद है। वह व्यक्ति व्याख्यान के बाद खुद दोपहर में आ गया कि बापजी! क्षमा करो। मेरे से गलती हो गई। दोपहर में वह खुद आ गया मेरे पास। यह सब कैसे हो गया? कैसे हो गया? उस व्यक्ति ने सोच लिया, वह समझ गया कि अब तो पकड़ा जा चुका हूं और वह मेरे पास आ गया। चोर की दाढ़ी में तिनका का भी इसी प्रकार से एक वाकया है। एक बार कहीं सभा चल रही थी। वहां पर पुलिस भी थी और पुलिस की छानबीन चल रही थी। उन्होंने कहा कि हमने चोर को पहचान लिया है और वह चोर इस सभा में मौजूद है। चोर की दाढ़ी में तिनका है। इतना सुनते ही जो चोर था उसका हाथ सहज ही धीरे से दाढ़ी पर चला गया कि कहीं मेरी दाढ़ी में तिनका है तो नहीं। उसका हाथ कहां पर गया? और वह चोर पकड़ा गया क्योंकि मन में भय था। हमारे मन में भी यदि भय होता है कि मेरी बात कर रहे हैं! मतलब आपने कुछ गड़बड़ी की होगी तो भय रहता है। नहीं तो यदि मन में आ भी रहा है कि मेरी बात कर रहे हैं तो अच्छा लगना चाहिए। आप सोचो कि यदि दस लोग मेरी बात कर रहे हैं तो मेरे में और मेरे जीवन में कुछ विशेष बात है। मेरे में कुछ विशेष है तभी तो दस लोग, बीस लोग, पचास लोग मेरे विषय में बात कर रहे हैं। नहीं तो किसी को फुरसत कहां है जो हमारे लिए बात करे। कुछ विशेष है तभी तो हमारे बारे में बात करेंगे और कोई बात करे तो हमें घबराना किस बात से? यदि बात कर रहे हैं तो ये सोचो कि मैं कोई हीरो हूं। मैं हीरो हो गया तभी तो पचास आदमियों में एक सोचने-समझने के लिए बिंदु बना। यदि ऐसा है तो बात से, हमें क्या फर्क पड़ता है? खूब बात करो। बात करने से हमारा क्या जाने वाला है?

यह सभी सोच-सोच का अंतर है। समझ-समझ का अंतर है। आदमी को अपने भीतर के भय की स्थितियों के कारण ऐसा लगता है। वो कहते हैं ना, 'सावन के अंधे को सब जगह हरियाली ही नजर आती है', वैसे ही उसको लगता है कि मेरी बात ही हो रही है। मेरी ही बात हो रही है। अरे! भाई बात तुम्हारी ही क्यों करेंगे। और कर भी रहे हैं तो तुम्हें उससे क्या लेना-देना। यदि तुमसे पूछे तो जो भी बात तुम्हें पता है, जानकारी में है वह बता दो। नहीं तो

लोग इधर-उधर की बातें करते हैं। उनको करने दो हमें क्या फर्क पड़ने वाला है? हम बातें कहां की कर रहे थे और चलते-चलते कहां पर आ गए। बातें किसकी चल रही थीं? क्या बात चालू हुई थी? बीरबल और उस व्यापारी की बात चल रही थी कि क्या हो गया बनिये को? वह बुजुर्ग को सारी बात बताता है और वह बुजुर्ग कहता है कि क्यों चिंता करते हो? क्यों चिंता पाल रहे हो, कोई मतलब नहीं है चिंता करने से। व्यापारी ने कहा कि आप समझते नहीं हो। ये कैसी दुविधा है मेरे लिए। बुजुर्ग ने कहा कि तुम चिंता मत करो। मैं तुम्हारे साथ में चलूंगा और तुम वहां पर सारी बात मुझ पर डाल देना। कहना कि मैं क्या जवाब दूं जब हमारे सामने हमारे बुजुर्ग हैं। मैं इनके सामने बोलूं तो यह ठीक नहीं है और मुझे आगे खड़ा कर देना मैं सारी बात संभाल लूंगा। इतना सुनकर उस व्यापारी के जीव में जीव आया कि मैं तो बच गया। लेकिन फिर भी मन में थोड़ी चिंता थी। कुछ नहीं तो 75 परसेंट दिमाग तो शांत हो गया। अगले दिन वे दोनों दरबार में पहुंचे और बादशाह ने फिर शहजादे को लाकर खड़ा कर दिया और बोले कि इसका मूल्य आंको। क्या है मूल्य? उसने कहा कि हुजूर! मेरे बुजुर्ग यहां पर मौजूद हैं। बुजुर्गों के रहते हुए मैं जवाब दूँ यह उचित नहीं। इसका जवाब बुजुर्ग ही देंगे।

वह बुजुर्ग आया हाथ में डंडा लिए हुए। गांधी जी का गोल-गोल चश्मा, मोटे कांच का लगा हुआ और ठमक-ठमक करते हुए चल रहा है। बोलो, कैसे चला? बोलो, कैसे चला? हड़बड़ी नहीं थी। आराम से चल रहा था। हड़बड़ी नहीं। 'हड़बड़ियां तो गड़बड़ियां'। जो हड़बड़ी करेगा वो गड़बड़ी करेगा। 'धीरज मन धरी सांभलो' 'धैर्य में जो व्यक्ति होता है उसके कदम बड़े सधे हुए चलते हैं।' जो धैर्य में जीने वाला होता है उसका मन-चित्त सधा हुआ होता है। उसके पैरों में चपलता नहीं होगी। वह बड़ा सधा हुआ चलेगा। हाथी भी चलता है और कुत्ता भी चलता है। हाथी की चाल बहुत मस्त/एकदम सधी हुई होती है। कितने ही कुत्ते भौंकें लेकिन वह अपनी चाल से चलता रहता है। वह सोचता है कि कुत्ते भौंकें तो मेरा क्या जा रहा है? हाथी कुत्तों को भौंकने से न रोकता ही है और न उनके पीछे ही भागता है। वह मदमस्त चलता है। भौंकने वाले भौंकते रहो। हम चल रहे हैं और कुत्ते भौंक रहे हैं तो हम कुत्ते को भगाने में कुत्ते के साथ कुत्ता क्यों बन जाएं? हम तो हाथी बनकर चलेंगे। कोई कितना भी भौंकता रहेगा, मेरा क्या बिगाड़ लेगा? इतना विश्वास होना चाहिए या नहीं होना चाहिए?

वह बुजुर्ग ठमक-ठमक करते हुए पहुंच गया शहजादे के पास। शहजादे के मुंह को थोड़ा इधर घुमाया, थोड़ा उधर घुमाया। कभी आगे से देख रहा है कभी पीछे से देख रहा है। कभी किधर से देखता है कभी किधर से देखता है। ऊपर से देखता है, नीचे से देखता है। ये दिखावा भी करना पड़ता है हालांकि उत्तर तो पहले से तैयार था। किंतु परखना है तो परखने के लिए ये दिखावा करना ही पड़ेगा। वह ऐसा सब करके ललाट पर हाथ रखकर कहता है कि हुजूर! शहजादे के भाग्य में क्या है वो तो मैं नहीं कह सकता। बाकी कीमत तो दो टके की है। दो टका कीमत है। भाग्य की बात मैं कुछ नहीं कह सकता। इसका क्या भाग्य है/क्या पुण्य कर्म है बाकी कीमत दो टका ही है। आज यदि मजदूरी के लिए निकालो तो दो टका कमाकर लाना इसके लिए मुश्किल है। इसकी कीमत तो दो टके की है। बादशाह तो एकदम चौंक गये कि ये क्या हो गया। बुजुर्ग कहता है कि मैंने पहले ही बोला था कि इसके भाग्य का/नसीब का मैं नहीं कह सकता। लेकिन जो शरीर है उसकी कीमत सिर्फ दो टका है। आदमी का भाग्य, वह किस समय कैसे पलटेगा यह कोई नहीं जानता, त्रिया चरित्रं पुरुषस्य भाग्यं...। स्त्री की चाल किस समय किस रूप में बदलेगी कोई नहीं बता सकता। देव भी नहीं बता सकते। स्त्री कभी तो पति की मौत की तैयारी कर रही है और कभी पति के सामने आंसुओं की लड़ी की लड़ी बहा रही है कि आपके बिना मेरा क्या होगा। मैं कैसे रहूंगी। और पीछे से कोई सेवइयां बनाने वाली भी होती है। फिर खूब खा-पीकर मौज करने वाली बन जाती है। यह बहुत सारे रूप हैं। 'त्रिया चरित्रं पुरुषस्य भाग्यम्...।' देवता भी एक बार पुरुष के भाग्य को और स्त्री के स्वभाव को पहचानने में समर्थ नहीं होते हैं। वे भी भाग्य को पहचानने में धोखा खा जाते हैं। उसका कुछ कह नहीं सकते। बुजुर्ग ने कीमत आंकी और कहा कि शहजादे की बाजार में पूछो तो कोई दो टके से ज्यादा देने वाला नहीं है। कौन खरीदे? कौन खरीदे? हाथी को खरीदने वाला कौन है? हाथी को खरीदकर करोगे क्या? खरीदेगा कौन? हाथी खरीदेंगे तो रखेंगे कहां पर? और उसको खिलाएंगे क्या? उसको खिलाना भी पड़ेगा। उसके लिए पैसे खर्च करो।

बंधुओ! बात साफ है कि परखने वाले की निगाहें होती हैं। वह चीज को परख सकते हैं। एवंता कुमार/अतिमुक्त कुमार ने परख लिया कि मैं जानता हूं कि जन्म लेने वाला मरेगा ही और यह नहीं जानता कि कहां मरेगा? विभिन्न

गति में हम भ्रमण करते हैं। कौन कहां से आया है और कहां जाएगा ये कोई नहीं जानता। ये बात वे अपनी मां से कहते हैं। मां से कहते हैं कि–

लेऊं लेऊं संयम भार माता मोरी रे,
आज्ञा तो देवो नी म्हाने मोद सूं।
संयम रो रूप कांई समझो म्हारा कंवरा ओ,
खेल खेलो नी थे तो गेंद सूं।
जानू हूं मैं जिसको माता, उसको ही नहीं जानूँ ओ।
नहीं जानूँ उसीको मैं तो जानता,
ऐसा कांई बोलो बोल, पहेलियां बुझावो ओ।
साफ सुनाओ दिल री बातड़ी।

माता ने कहा कि यह पहेली क्यों बुझा रहे हो? क्या कहना है अपनी बात साफ कहो। अतिमुक्त कुमार कहते हैं कि माता बस एक ही बात है कि मैं संयम जीवन स्वीकार करना चाहता हूं। एक तो वह श्रीदेवी माता थी कि बेटे की बात सुनने के साथ हँस दी। और कहा कि संयम स्वीकार करना है। संयम लेना चाहते हो? तुम तो गेंद से खेलो और एक गेंद ला देती हूं कि तुम खेलो। अभी संयम को क्या जाना है तुमने? गेंद लो और खेलो। अतिमुक्त कुमार कहता है कि माता! मैं जो नहीं जानता उसको जानता हूं और जो जानता हूं उसको नहीं जानता। ये जो पहेली है इस पहेली में सारा सार भरा हुआ है। इसमें तत्त्व-ज्ञान भरा हुआ है और इस ज्ञान को मैंने किससे सुना है, किससे जाना है? भगवान महावीर से जाना है।

"गच्छाचार पइण्णा" में यह बताया गया है कि छह वर्ष की उम्र थी और विजय सेन सम्राट और श्री देवी महारानी की कुक्षि से जन्मे अतिमुक्त कुमार दीक्षित हो जाते हैं और जो बात आपने सुनी, श्रीमद् भगवती सूत्र ऐसा कहता है/उसमें ऐसा बताया गया है कि वर्षा होने पर पानी बहने लगता है। वे मुनि अभी बाल्यावस्था में थे। वे अपने हाथ में रजोहरण और पात्र लेकर निकले और पाल बांधकर अपनी पात्री को छोड़ दिया और क्या बोलने लगा?

'म्हारी नांव तिरे, म्हारी नांव तिरे'

ऐसा खेल वे खेलने लगे। आप सुन गए हो, श्री अंतगडदसाओ और श्री भगवती सूत्र के माध्यम से। श्री भगवती सूत्र का आज एक पाठ आया उसमें

यह बात बताई है। और गच्छाचार पइण्णा में यह बताया गया है कि गौतम स्वामी ही उनको देखने वाले थे और वे उनको पकड़कर लाए कि ये क्या कर रहे हो। मुनि चाहे कोई भी हो और कोई भी पकड़कर लाया हो। जो कुछ भी रहा हो। किंतु स्पष्ट है कि भगवान से जो चर्चा हुई और भगवान ने जो उत्तर दिया उसमें एक बात जो हमारे सामने आती है और गीत के माध्यम से हम गाते हैं–

एवंता मुनिवर नाव तिराई, बहता नीर में,
पोलासपुरी नगरी के राजा विजय सेन सम्राट,
श्रीदेवी अंग उपन्या सरे,
एवंता कुमार जी॥

घटनाएँ कभी की घट गई हैं। किंतु भगवान ने जो कहा उसे ध्यान में लेना है कि किसी की क्रिया-प्रतिक्रिया मत करो। उसने क्या कर दिया, उसने क्या कह दिया ये सब नहीं देखना है। किसको देखना है और किसको देख रहे हो? किसको देख रहे हो? जब तक दृष्टि बाहर रहेगी, हम बाहर के बाहर घूमते रहेंगे और जब ये दृष्टि अंदर आएगी तब हमारा कल्याण हो पाएगा। भगवान महावीर ने स्थविरों से कहा कि ये चरमशरीरी जीव है। इनकी आशातना मत करो। इनका संग्रह करो। इनका संरक्षण करके संगोपन करो। क्या अर्थ हो गया? इसका क्या अर्थ है? इसका अर्थ यह है कि इनका ज्ञान से, दर्शन से, चारित्र और तप से इनका संग्रह करो। इनकी वैयावृत्य करो। इनकी प्रतिक्रिया मत करो। भगवान की एक वाणी को यदि हमने स्वीकार कर लिया तो हमारा जीवन सुखी हो जाएगा। चाहे घर है, परिवार है, समाज है, कहीं पर भी हम किसी की प्रतिक्रिया नहीं करें। 'यह प्रतिक्रिया निम्न होती है।'

क्रिया से प्रतिक्रिया निम्न होती है। क्यों होती है निम्न? क्योंकि विचार उसके शुद्ध नहीं होते। उसमें विचारों में कहीं-न-कहीं द्वेष के भाव होते हैं। कहीं-न-कहीं ईर्ष्या के भाव होते हैं। वह भले ही कहेगा कि मेरा किसी से राग-द्वेष नहीं है। मेरा किसी से ईर्ष्या भाव नहीं है। ईर्ष्या नहीं करता है तो प्रतिक्रिया से तुम्हारा लेना-देना क्या था। क्या मतलब था। मतलब यह कि कहीं-न-कहीं तुम्हारे भीतर वह चीज अटकी हुई है। वह अटकी हुई है इसलिए तुम प्रतिक्रिया कर रहे हो। जो प्रतिक्रिया की गई वह प्रतिक्रिया निम्न होगी। उच्च स्तर की नहीं हो सकती है। इसलिए इस एक बात को यदि हम ध्यान

में ले लें। भगवान की केवल एक बात को स्वीकार कर लें कि हम प्रतिक्रिया नहीं करेंगे। हम जीएंगे। हम जीवन को जीना चाहते हैं। हम जीवन जीएंगे। 'प्रतिक्रिया जीवन जीने की नहीं होती है। जीवन से हटने की होती है।' ऐसी प्रतिक्रिया को हम अपने नजदीक नहीं आने देंगे। हमें उससे प्रेम नहीं करना है। प्रतिक्रिया से दूर रहने का जितना प्रयत्न करेंगे हम अपने जीवन को सुखी बना पाएंगे। प्रतिक्रिया से हटकर हम अपने जीवन को सुखी बना सकेंगे। हम अपने जीवन को शांत बना सकेंगे।

अतिमुक्त कुमार दीक्षित हो गए। भगवान के चरणों में आ गए। संयम जीवन का पालन किया और संयमी जीवन की आराधना करते हुए कितने शास्त्रों का ज्ञान किया? बोलो, कमलजी! क्या सुना है अभी? (प्रत्युत्तर–ग्यारह अंगों का अध्ययन किया) 'सामाइयमाइयाइं...।' मुख्य सामायिक है। उससे प्रारंभ करके ग्यारह अंगों का अध्ययन करते हैं और फिर अंतिम समय में सारे कर्मों का क्षय करके केवलज्ञान-केवलदर्शन से अपनी आत्मा को भावित करते हैं और चरम उच्छ्वास में सारे कर्मों का क्षय करके सिद्ध होते हैं। बुद्ध होते हैं। मुक्त होते हैं। और परिनिर्वाण अवस्था को प्राप्त करते हैं।

बंधुओ! विचार करने की बहुत सारी जगह है। हमारी इतनी उम्र बीत गई जितनी उम्र में एवंता कुमार ने दीक्षा ली। इतने वर्ष भी अब हमारे बीतेंगे या नहीं। कोई अल्प आयु में भी दीक्षा ले सकते हैं। दीक्षा लेने के लिए शरीर और आयु का कोई बंधन नहीं है। एक छोटी-सी बात याद आ गई कि जिस समय संघ ने कुछ संत अलग किए। नानूकंवर जी म.सा. को भी संघ से अलग किया गया। श्री नानूकंवर जी म.सा. को श्री धापू कंवर जी म.सा. ने कहा था कि थूं यों क्यों करे थारे एक पछेवड़ी भी कोई फाड़ेगा या नहीं। और ऐसा ही हुआ। किंतु एक बात है कि क्या भरोसा है जिंदगी का? एक पानी की बूंद अभी पत्ते पर चमक रही है। ओस की बूंद वह पत्ते पर पड़ी हुई है। बड़ी अच्छी लग रही है। एक सूर्य की किरण आती है और उसकी चमक बढ़ जाती है। आहा! आहा! जैसे मोती चमक रहे हैं। बहुत बढ़िया चमक रही है। इतने में एक हवा का झोंका ऐसा आएगा कि सारी बूंदें गिर जाएंगी। बिखर जाएंगी।

मौत की हवा का झोंका एक आएगा,
जिंदगी का वृक्ष तेरा टूट जाएगा।

एक हवा का झोंका आया। वह पत्ता हिला और सारी पानी की बूंदें गिर गईं। क्या पता चला? कितनी देर लगी? देर कितनी लगी? लंबे समय के लिए हमने प्लान बना लिया है। 2020 में क्या करना है, 2021 में क्या करना है, 2022 में क्या करना है। कहां-कहां जाना है। कौन-कौन से देशों में जाना है। घूमने के लिए/पर्यटन करने के लिए जाना है। कुछ चीजें सीखनी हैं। सीखने के लिए जाना है। सारा प्लान बना लिया है। 'आज करे सो काल कर, काल करे सो परसों, फिक्र है किस बात की हम जीयेंगे बरसों' हमें क्या चिंता है? पर ध्यान रखना हम कितना जीएंगे? कुछ कह पाना कठिन है। जीवन का क्या भरोसा है? आज जो चीज तुमने कमाई है। पाई है। कल वह चीज छूटेगी या नहीं छूटेगी?

इसलिए बंधुओ! जो कहा गया है कि सबसे हिलमिल चालिए, नदी-नाव संयोग। सबसे हिल-मिलकर चलो। हिल-मिलकर रहो। संवत्सरी के पर्व पर क्षमा याचना करने का अवसर है। 'दूसरों के साथ मिलकर रहो। किंतु किसी को अपनी जगह दो मत और किसी की जगह घेरो मत।' अर्थात् किसी के साथ अटैचमेंट मत करो। अटैचमेंट करोगे तो आपके दिल की जगह वह घेर लेगा। दूसरे के दिल में भी अपनी जगह मत बनाओ। जगह को घेरो मत। बसेरा नहीं होना चाहिए। विहार हो जाना चाहिए। धर्मशाला में कोई आए तो बस हां सा, हां सा, हां सा। अरे! कितने दिन की बात है? चार तारीख को कौन मिलेगा यहां पर? संवत्सरी का अवसर है और सुबह खमत खामणा कहा और अगले दिन छुक-छुक करके रवाना हो जाने वाले हैं। ट्रेन कैसे रवाना होती है? छुक-छुक। वैसे ही छुक-छुककर सब रवाना हो जाने हैं। परसों तो यहां पर आकर कहेंगे कि बापजी! मांगलिक। बापजी! मांगलिक और तरसों देखेंगे तो यहां पर कोई नहीं है। बस आए और हां सा, हां सा, खमत खामणा, खमत खामणा! कुछ कहा है, सुना है तो और अगले पर्युषण में... (प्रतिध्वनि– मिलेंगे) मिलेंगे? पक्की बात है ना? जैसे ये अपने-अपने रास्ते लेते हैं वैसे ही यहां पर लोग आए हैं। मिल गए हैं। कोई माता-पिता बन गया। किसी से प्रेम हो गया। किसी से दुश्मनी हो जाती है। कोई भाई बन गया। कोई हमारा रागी-रागद्वेषी बन गया। कोई वैरी बन गया। जो आज हमारा भाई है वह कल हमारा दुश्मन था। कभी हमारे बचपन का साथी, जिगरी दोस्त था। वह कभी कट्टर दुश्मन रहा होगा। शत्रु रहा होगा। किसको कहूं अपना? कौन है मेरा?

बंधुओ! इस तत्त्व-ज्ञान को अपने आप में जगाओ और अपनी सारी उलझी हुई गुत्थियों को सुलझाओ। कल महापर्व संवत्सरी आ रहा है। पुरानी बातों को सपमपाट कर लें। राग-द्वेष, कलह को छोड़ हम ब्राह्मण के रूप में अपने आप को उपस्थित करेंगे। ब्रह्मण/माहण जो किसी का भी हनन नहीं करता। किसी को भी अपने भीतर नहीं रखेंगे। मेरे मन में किसी के भी प्रति राग-द्वेष की भावना नहीं होनी चाहिए। मैं किसी को अपनी तरफ से कष्ट नहीं पहुंचाऊंगा। किसी को कष्ट पहुंचे ऐसा काम नहीं करोगे, इरादतन। किसी को तकलीफ नहीं हो ऐसा आप विचार करेंगे तो हम अपने जीवन को धन्य बनाएंगे। अपने जीवन को शांत बनाएंगे। हम सुख में जीएंगे, समाधि में जीएंगे और हमारे पास जो भी है, उसी सुख का वितरण करते हुए धन्य बनेंगे। संयम (दीक्षा प्रवाह नहीं पराक्रम है यह) का ध्यान रखना।

02 सितम्बर, 2019
(पर्युषण पर्व का छठा दिन)

14

सजे आत्म सुसाज

प्रभु मेरा हृदय गुण सिंधु अपरम्पार हो जाए,
सफल सब ओर से पावन, मनुज अवतार हो जाए।

प्रभु! मेरा हृदय गुण सिंधु अपरम्पार हो जाए। सिंधु का अर्थ होता है, समुद्र। मेरा हृदय गुणों का समुद्र बन जाए। उसमें ईर्ष्या और द्वेष का ढूंढ़ने पर भी कोई एक भी चिह्न नजर नहीं आये। दो बातें इसमें कही गई हैं। एक बात है, ये हृदय गुण सिंधु बन जाए और दूसरा कहा कि ईर्ष्या का, द्वेष का चिह्न भी न मिले। बहुत मायने रखती है बात। यदि ईर्ष्या हमारे मन में आएगी। यदि द्वेष हमारे मन में घुसेगा तो वह हमारे हृदय को गुण सिंधुमय नहीं बनने देगा। ईर्ष्या वह घुन है कि जिस अन्न में लग जाए उस अन्न को खोखला कर दे। ईर्ष्या वह दीमक है, जिस लकड़ी में लग जाए वह लकड़ी खोखली हो जाएगी। कमजोर हो जाएगी। वैसे ही ईर्ष्या जिस हृदय में प्रवेश कर जाती है उसका हृदय गुण सिंधु नहीं बन पाएगा। अपितु यों कह दूं कि उसके भीतर रहे हुए गुण भी जलकर भस्म हो जाएंगे। वह खोखला हो जाएगा। राख बन जाएगा। इसलिए कहा है कि ईर्ष्या का, द्वेष का चिह्न भी मेरे जीवन में नहीं आना चाहिए। मेरे हृदय में नहीं होना चाहिए।

'ईर्ष्या बड़ी भयंकर आग है जिसका ताप नहीं लगता। किंतु जीवन को संतापित कर देती है।' जैसे अग्नि तो तपाती भी है और अग्नि जला भी देती है। वैसे ही ईर्ष्या भी अपने गुणों को जलाती है और हृदय को संतापित कर देती है। वह संताप देने वाली होती है। ऐसी ईर्ष्या हमारे जीवन में नहीं आये। किंतु यह बड़ा कठिन काम है। किंतु मैं यह कहूंगा कि ज्यादा कठिन कुछ भी नहीं हैं। यदि तत्त्व को समझ लें, तत्त्व हृदयंगम हो जाए तो कहीं से कहीं तक कोई कठिनाई नहीं होगी। जब तक हमारी दृष्टि बाह्य बनी रहती है। बाहर की

ओर रहती है तब तक व्यक्ति ईर्ष्या को नहीं छोड़ पाएगा क्योंकि दूसरे की बढ़ती देखकर वह चुप नहीं रह पाएगा। इसके पास में इतना धन कैसे बढ़ गया? लोग इसको इतना क्यों पूछ रहे हैं? लोगों में इसकी इतनी प्रतिष्ठा क्यों हो रही है? लोग इसको ज्यादा आदर-सम्मान क्यों दे रहे हैं? इस कारण से वह ईर्ष्यालु बन जाता है। वह ईर्ष्या उससे अकृत्य कराने वाली बन जाती है। बड़ी-बड़ी घातक क्रियाएं उस ईर्ष्या से हो जाती हैं।

कहते हैं कि विश्वामित्र बहुत बड़े ऋषि थे। बहुत बड़े तपस्वी थे। घोर तपस्या करने वाले थे। किंतु उनको ऋषि कहा जाता था– ब्रह्म-ऋषि नहीं। ब्रह्म-ऋषि बनने के लिए उनका मन बेताब हो गया और वे सोचने लगे कि जब तक वशिष्ठ ऋषि मुझे ब्रह्म-ऋषि का विरुद नहीं देंगे तब तक मुझे कोई ब्रह्म-ऋषि के रूप में स्वीकार नहीं करेंगे। किंतु वशिष्ठ ऋषि, उन्हें ऋषि कहते हैं। महात्मा कहते हैं। किंतु ब्रह्म-ऋषि नहीं कह रहे हैं। विश्वामित्र सोचने लगे कि जब तक आदमी अपनी शक्ति नहीं दिखाता है तब तक लोग उसके महत्त्व का आकलन नहीं करते हैं। और उन्होंने दूसरा रास्ता अपना लिया। एक रात्रि कटार लेकर वे वशिष्ठ ऋषि के आश्रम में पहुंच जाते हैं। उनके मन में संकल्प था, विचार था कि आज मैं वशिष्ठ ऋषि को जिंदा नहीं रहने दूंगा। इधर धवल चांदनी चंद्रमा की। उस चांदनी में वशिष्ठ ऋषि अपने शिष्यों को ध्यान करा रहे थे और प्रसंगोपात्त शिक्षा दे रहे थे। उन्होंने अपने शिष्यों से विश्वामित्र के संबंध में कहा कि वे बहुत बड़े तपस्वी हैं। बहुत बड़े ऋषि हैं। इस प्रकार का कथन विश्वामित्र ने सुना और विचार करने लगे कि मैं जिन वशिष्ठ ऋषि को मारने के लिए उद्यत हूं वे वशिष्ठ ऋषि मेरी भी प्रशंसा करने वाले हैं। अपने शिष्यों के सामने मेरी प्रशंसा! और मेरे गुणों, मेरी तपस्या का वर्णन करते हुए शिक्षा दे रहे हैं। मन में पश्चात्ताप का भाव जगा कि धिक्कार है मेरी आत्मा को। मैं ऋषि बना, तपस्या की और ब्रह्म-ऋषि की भूख मेरे से हिंसा करवाने की स्थिति तक मुझे ले आयी!

'पद प्रतिष्ठा की चाह जब आदमी के भीतर पैदा होती है वह उसको निरंकुश बना देती है।' वह क्या करती है? क्या होना चाहिए क्या नहीं होना चाहिए, ये उसके लिए बड़ी भारी विडंबना हो जाती है। राजनीति के क्षेत्र में आए दिन ये दृश्य देखे जा सकते हैं। राजनीति में तो ऐसा कहा जा सकता है क्योंकि राजनीति का अर्थ यह है कि जिसके राज-रहस्य को, गुर को कोई समझ नहीं सके। वहां पर संभव है ऐसी घटनाएं घट जाएं। किंतु धर्म-संघों,

धर्म क्षेत्र में यदि पद-प्रतिष्ठा की चाह और ईर्ष्या प्रवेश कर जाए तो उस धर्म-संघ में हानि के बजाय लाभ होने वाला नहीं है। 'अनायकाः विनश्यन्ति, नश्यन्ति बहुनायकाः', जिस संघ में/संप्रदाय में कोई नायक नहीं होता है वह बिखर जाता है। और जहां बहुत नायक होते हैं वह भी बिखर जाता है। उसके सदस्य कोई किधर कोई किधर। आज हमारे जैन समाज की दुर्दशा क्यों हो रही है?

जिन धर्म के टुकड़े हजार हुए,
कोई इधर गिरा, कोई उधर गिरा। जिन धर्म...

हम बोल सकते हैं कि हमें हजार टुकड़े कहीं नजर नहीं आ रहे हैं। समुदाय हजार नहीं हुई होगी किंतु हमारे श्रावक और साधु मिलकर जो हजारों, लाखों या जो भी हैं—उनमें विचारधारा की दृष्टि से विचार करें तो कितने भिन्न-भिन्न मत-मतांतर हो गए? 'एक मुखिया, सौ सुखिया' एक के निर्णय से चले तो लोग सुखी रहते हैं। और यदि अनेक नायक हो जाते हैं तो सबकी अपनी ढपली होगी, अलग-अलग राग होगी। अलग-अलग संघ होगा। नेतृत्व अलग-अलग होगा। सब अलग-अलग रहेंगे तो वहां पर वैषम्य खड़े हुए बिना नहीं रहेगा और विषमता में धर्म की सही आराधना नहीं हो सकती।

आचार्य पूज्य श्री जवाहरलाल जी म.सा. ने बहुत गहरी निगाह से इसका अनुभव किया और सन् 1984 में उन्होंने संघ में एक सूत्रपात किया कि अब जो भी दीक्षाएं होंगी वे एक आचार्य के नेतृत्व में उनके नेश्राय में होंगी। अलग से कोई शिष्य नहीं बना सकेगा। उस समय साध्वियां अलग थीं। वे आचार्य के नेश्राय में नहीं थीं। उनका नेतृत्व आचार्य के हाथों में नहीं होता था। जो प्रवर्तिनी हुआ करती थी वे ही उन साध्वियों की देख-रेख एवं सार-संभाल किया करती थी। आचार्य श्री ने सन् 1990 के सम्मेलन में संघ सदस्यता की बात को रखा। इसके पीछे स्पष्ट आशय था कि साधु-साध्वियों के संयम की शुद्ध पालना हो। अन्यथा एक संत यदि चार शिष्य बनाता है तो दूसरा भी चाहेगा कि मेरे भी शिष्य बनें और मैं भी स्वतंत्र विचरण करूं। और श्री हजारीमलजी म.सा. जो हमारी इसी परंपरा में हुए, उन्होंने अपनी एक रचना में कहा है कि 'बाग में लगाई आग, चेला जी की चाह सूं' कि संयम बाग में व्यक्ति आग लगा लेता है चेले की चाह से। फिर वह किसी को भी चेला बनाने के लिए प्रयत्नशील होता है और कहेगा कि 'म्हारो चेलो

हो जा झट, बताऊं चित्तौड़गढ़'। वो पीछे चित्तौड़गढ़ वाले हँसने लगे कि चित्तौड़गढ़ की बात आ गई। आप लाओगे तो आ जाएगी बात। दर्शनीय स्थान है चित्तौड़गढ़। क्या कहा है कि मेरा चेला हो जा, मैं यहां घुमाऊंगा, वहां घुमाऊंगा। इधर ले जाऊंगा, उधर ले जाऊंगा।

ये लोभ और लालच देने शुरू हो जाएंगे और बहुत-से साधक चेलों को बनाने की फिराक में रहेंगे—योग्यता, अयोग्यता देखना कम हो जाएगा। शिष्य बढ़ाने का कार्य मुख्य हो जाएगा। आचार्य श्री नहीं चाहते थे कि साधु जीवन में इस प्रकार की धांधलेबाजी हो। इसलिए उन्होंने ये नियम चालू किया और सम्मेलन में भी उन्होंने यह बात रखी कि यदि स्थानकवासी समाज की उन्नति चाहते हैं तो एक ही आचार्य के नेतृत्व में साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविकाएं हों। एक धारणा, एक सामाचारी, एक स्पर्शना, एक प्ररूपण आदि सारी चीजों में एकरूपता आएगी नहीं तो कोई कुछ कहेगा, कोई कुछ कहेगा। कोई कुछ कहेगा। और ये विभिन्नता व्यक्ति को संशय में डालेगी। वह कंफ्यूज रहेगा और लोग बिखरते हुए चले जाएंगे। उस समय उसकी कितनी जरूरत होगी मैं नहीं कह सकता हूं किंतु भविष्य की दृष्टि से उन्होंने विचार किया और वह बात बहुत अरजेंट यानी अत्यंत आवश्यक लग रही है। वह नहीं होने से जैन धर्म की कितनी हानि हुई है? लोग किस प्रकार की मानसिकता को लेकर चल रहे हैं। जैन समुदाय एक छोटा संप्रदाय, उसकी हालत किस प्रकार से विकृत हुई है? बहुत से लोग धर्म स्थानकों में आते ही नहीं होंगे चाहे वे किसी भी समुदाय के हों। धर्म से लेने-देने की बात नहीं रह गई है क्या कारण है? हजारों कारण हो सकते हैं। उसमें एक कारण साधु-साध्वी भी हैं जिनकी चर्या, जिनकी सारी स्थितियां यदि आज देखें तो बड़ी विचारणीय स्थिति उपस्थित हो जाती है। पैसों के अकाउंट होना तो सामान्य बात है। बैंक बैलेंस भी चल रहे हैं कई साधु-साध्वियों के। साथ में साधुओं के पैसे ठिकाने लगाने के लिए श्रावक होते हैं। वे कहते हैं कि यह श्रावक मेरा अपना है। यह श्रावक मेरा निजी है। उसकी देखरख में उनकी करेंसी बढ़ती जा रही है। ब्याज बढ़ता जा रहा है। ऐसी धांधलियां चल रही हैं। ऐसी स्थितियां बन रही हैं और खुली आंखों से देखा गया कि एक भाई जो एक जगह दर्शन करने गया म.सा. के यहां, जहां पर साधु साबुन और सर्फ के नाम पर पांच, पचास, सौ, पांच सौ रुपये लिखवा रहे हैं और ले रहे हैं कि उन्हें सर्फ के लिए पैसे चाहिए। साबुन के लिए पैसे

चाहिए। विचार आता है कि क्या जैन मुनियों को गृहस्थों के घर से ये चीजें मिलनी बंद हो गई हैं?

देवकी महारानी को उस जमाने में चिंता हो रही थी कि साधु उसी के घर पर ही क्यों आ रहे हैं? क्या पूरी द्वारिका नगरी से साधुओं को भिक्षा मिलना बंद हो गई है? देवकी इस बात के लिए चिंतित हो गई थी कि साधुओं को भिक्षा नहीं मिल रही है। आज साधु पैसे मांग रहे हैं तो बड़ी समस्या खड़ी होती है। क्या इन साधु और साध्वियों को साबुन और सर्फ जैन घरों में नहीं मिल पा रहा है? नाम होता है साबुन और सर्फ का तो! बाकी पैसे, बैंक-बैलेंस में या भक्तों के यहां पर इकट्ठे हो जाते हैं। विचार करो कि उसका कल को स्वर्गवास हो गया तो फिर उसका मालिक कौन बनेगा? कौन बनेगा मालिक? एक कहावत आती है कि 'कीड़ी संचे तीतर खाए, पापी का धन पर ले जाए' यानी कीड़ी थोड़ा-थोड़ा भोजन को संचित करती है और उसका भोजन तीतर खा जाता है। उसी प्रकार 'पापी का धन पर ले जाता है' यानी पापी के द्वारा धन का संग्रह किया हुआ होता है और उसका उपभोग कोई पराया ही करता है। यानी दूसरा ही उसको ले जाता है। वह न तो स्वयं भोग पाता है और न ही स्वयं स्वाद ले पाता है। वह उस धन का संग्रह करके सुखी होता है। अपने मन में खुशी मनाता है कि मेरा इतना पैसा, मेरा इतना बैंक-बैलेंस, मेरा इतना सारा धन। संग्रह करके अपने मन में ही खुश हो सकते हैं। किंतु अपने जीवन में कभी खुश नहीं हो पाते हैं। ये बातें सिर्फ आज की ही नहीं है। ये आग आज की नहीं है। ये लोभ और लालच यदि मैं कहूं तो देखने में 80 वर्षों पहले भी ये घटनाएं घटती थीं।

पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री नानालाल जी म.सा. उस समय वैराग्य अवस्था में थे। उस समय भी साधुओं में यह चमत्कार था। अब इसे चमत्कार कहूं या क्या कहूं? यह बीमारी ही मान लो। उस समय यह बीमारी देखी गई और पैसों को लेकर श्रावक और साधु के बीच में झगड़ा हो गया था। ब्याज को लेकर झगड़ा हो गया था कि इतना ब्याज होता है और तुमने ब्याज इतना ही कैसे लगाया? ऐसा कुछ झगड़ा हुआ था और यह बात कानों से सुनी। कैसी-कैसी स्थितियां बन जाती हैं। पैसा तो है ही। इसके अलावा बोलने के लिए माइक; और तो और चलाने के लिए लैपटाप और मोबाइल भी होता है। किसी गृहस्थ के पास एक मोबाइल मिलेगा या दो मोबाइल मिलेंगे। किंतु साधुओं के पास कितने-कितने मोबाइल मिल जाएंगे? एक बात याद आ

रही है मुझे। एक साध्वी जी मोबाइल की दुकान पर आदमी को भेजती है कि तुम मोबाइल लेकर आओ। वह दुकान किसी जैन भाई की थी। उसने वहां पर जाकर बोला कि म.सा. मोबाइल मंगवा रही हैं। बेचारे दुकानदार ने एक मोबाइल दे दिया और वह आदमी लेकर चला गया। साध्वी जी को ले जाकर मोबाइल दिया तो उनको वह मोबाइल पसंद नहीं आया। उसने कहा यह नहीं चाहिए दूसरा मोबाइल लेकर आओ। वह वापस दुकानदार के पास गया और दूसरा मोबाइल लेकर आया। साध्वी जी को दूसरा मोबाइल भी पसंद नहीं आया। आजकल आते हैं ना अलग-अलग मोबाइल, बढ़िया वाले जिसमें बहुत सारे सिस्टम होते हैं (सभा से–एप्पल...) मुझे नहीं पता कि कैसे-कैसे होते हैं मोबाइल!

साध्वी जी को दूसरा मोबाइल भी पसंद नहीं आया। फिर वापस आदमी को भेजा कि वो बढ़िया वाला लेकर आओ। उस आदमी ने जाकर वह मोबाइल मांगा। दुकानदार ने साध्वी जी के पास जाकर कहा कि म.सा.! मैं क्षमा चाहता हूं। मैं छोटा आदमी हूं। इतना कीमती मोबाइल बहराने की मेरी हैसियत नहीं है। साध्वी जी ने कहा कि अरे! बहराने के लिए कौन बोल रहा है तुमको? आलमारी थी उसे दिखाते हुए कहा, खोलो और जितने रुपये चाहिए ले जाओ। उस आलमारी में नोटों की गड्डियां भरी पड़ी हुई थीं और बोले कि मुझे तो बस वो वाला मोबाइल चाहिए। रुपये तुम जितने चाहो उतने ले लो। मुझे तो बस वैसा फोन चाहिए (सभा में किसी ने कुछ इशारा किया) अरे! क्या कह रहे हो आप? क्या हाथ से इशारा कर रहे हो? आप तो नेपाल के श्रावक हो। अभी आप हाथों से कुछ इशारे कर रहे हो। आप तो अभी नेपाल में रहते हो, आपको पता नहीं है कि यहां भारत में क्या-क्या हो रहा है? आपके नेपाल में इतने साधु-साध्वियां मिलते ही नहीं हैं तो आपको देखने के लिए मिला नहीं होगा। इसलिए आप आश्चर्य कर रहे हो। भारत में ऐसा हो रहा है। ये सारे खेल पैसे के हैं। बहुत से लोग इन कारणों से परेशान हो गए हैं। कई लोग, अपने क्षेत्र में ऐसे साधु या साध्वी आ जाएं तो विचार करने लग जाते हैं कि क्या करें? साधु कहते हैं कि इस बार आपके यहां चातुर्मास करने का विचार है। लोग कहते हैं कि बापजी! चातुर्मास करवा देते किंतु लोगों के विचार एक नहीं मिल रहे हैं। लोगों के विचार नहीं बन पा रहे हैं। एकमत नहीं हो पा रहे हैं। कुल मिलाकर यह तो चातुर्मास नहीं कराने का बहाना होता है। मुख्य कारण क्या है? अगर ऐसे संत यहां चातुर्मास करेंगे तो भारी विडंबना

होगी। ये सारी बातें क्यों पैदा हो जाती हैं? ये सारी बीमारी पैदा हुई क्यों? क्योंकि एक सशक्त नेतृत्व नहीं है। जहां पर एक सशक्त नेतृत्व नहीं होगा वहां-वहां पर ये सारी बातें होंगी। वहां ये सारी स्थितियां चलती रहेंगी।

बंधुओ! यह आज क्या प्रसंग आ गया? क्या बातें चल रही हैं? हम संवत्सरी पर्व की आराधना करने के लिए प्रस्तुत हैं। हमने पूर्व वक्ताओं से बहुत सारी बातें सुनी हैं। बहुत सारे विचार हमारे सामने आएं हैं और कई वर्षों से हम संवत्सरी पर्व की आराधना करते आ रहे हैं। 'आता, नाता जो जुड़वाता' यह संवत्सरी पर्व एक बार आता है। 'आता, नाता वो मिलवाता' जो रिलेशन आपस में टूट गए हैं। जिन रिलेशनों के बीच में दीवार खड़ी हो गई। जिन रिलेशनों के बीच में डिवाइडर आ गया है– यह पर्व ऐसा है कि यदि हम अपने दिल को खोल सकते हैं तो वापस पूरे रिश्ते-नाते जुड़े सकते हैं। टूटी हुई कड़ियां जुड़ सकती हैं। संध सकती हैं। रिश्तों को एक आकार मिल सकता है। इसलिए हमारा मन बनना चाहिए। हम तनाव में नहीं रहकर शांति से जीएंगे। तनाव में जीना अच्छा लगता है या तनाव को छोड़कर जीना अच्छा लगता है? बोलो, आपको कैसे जीना अच्छा लगता है? तनाव में जीना अच्छा लगता है या तनाव के बिना जीना अच्छा लगता है? कुछ लोग होते हैं जो तनाव में ही जीते हैं। कोई-कोई व्यक्ति जिसके बी.पी. 190 से 120 रहता है। ऊपर का बी.पी. 190 और नीचे का बी.पी. 120 रहने लग गया है। डॉक्टर के पास जाते हैं तो डॉक्टर कहता है कि आपका बी.पी. नॉर्मल नहीं है। किंतु वह व्यक्ति कहता है कि मेरे को तो कुछ लगता ही नहीं है। मेरे शरीर में कुछ असर ही नहीं है। डॉक्टर दवाई देता है तो दवाई से उन्हें और परेशानी हो जाती है। वे लोग बहुत परेशान हो जाते हैं क्योंकि उनका बी.पी. 120 से 190 में रहने का अभ्यास हो गया। वैसे ही कई लोग तनाव में जीने के अभ्यासी हो जाते हैं। उनको लगता ही नहीं है कि ये तनाव है। वे तनाव को देख नहीं पाते हैं। वे तनाव को जान नहीं पाते हैं। तनाव की तरह चाहे बी.पी. का असर मालूम नहीं पड़े क्योंकि उसने धीरे-धीरे सहनशक्ति को, क्षमता को, शरीर को वैसा तैयार कर लिया है। वह सहनशक्ति तैयार हो गई है। किंतु डॉक्टर ऐसा बताते हैं कि उसके दुष्परिणाम कभी भी आ सकते हैं। व्यक्ति समझ नहीं रहा है। वह कहता है कि मेरे को बी.पी. का कुछ भी अनुभव नहीं होता है। मुझे कुछ अहसास होता ही नहीं है। वैसे ही तनाव में जीने पर उसके दुष्परिणाम से भयंकर कर्मों का बंध होता है। आदमी अनुभव

करे या न करे, दिमाग में खट-खट चालू ही रहती हैं। दिमाग शांत नहीं रहता है। बड़ी अशांति की अनुभूति होती है।

आचार्य पूज्य गुरुदेव श्री नानालाल जी म.सा. ने अपने उपदेशों से ऐसे बहुत से लोगों को, जिनके दिलों के टुकड़े-टुकड़े हो चुके थे उनको सांधने का, जोड़ने का प्रयत्न किया है। इस सभा में भी मेरे खयाल से बीकानेर के मूलचंद जी डागा और सुरेंद्र जी सेठिया मौजूद होंगे। एक टाइम में वे बहुत गहरे दोस्त रहे और किसी बात को लेकर, किसी कारणवश विवाद की स्थिति बन गई। 6 महीने, साल, दो साल तनाव की स्थितियां बनी रही कि मैं किसी भी हालत में क्षमा करने वाला नहीं हूं। मैं किसी भी हालत में माफ करने वाला नहीं हूं। और संयोग से पंकज जी शाह (पिपलिया कलां) की प्रेरणा से दोनों की मित्रता वापस बनी और आज आप उनसे पूछ सकते हैं कि तनाव में आनन्द ज्यादा आया या फिर मित्रता में आनन्द ज्यादा मिला? तनाव में आनन्द ज्यादा मिला या फिर एकजुटता में आनन्द ज्यादा मिला?

हम सोच सकते हैं कि तनाव से किस प्रकार हम सामने वाले के मित्र से दुश्मन बन जाते हैं। हमारे भीतर दुश्मनी पैदा हो जाती है। और दुश्मनी पैदा होने से भले ही दूसरे का नुकसान हो या न हो किंतु हमारे कर्मों का बंध अवश्य होगा। हमारी पवित्रता में कमी आ जाएगी। हमारी मानसिकता खराब होगी। हमारा मन मलीन बनेगा। ऐसी स्थिति क्यों पैदा हो? इसलिए यह संवत्सरी पर्व का दिन ऐसा प्रसंग है जिसमें हमें अपने भीतर की सारी बुराइयों को समाप्त कर देना चाहिए। जैसे कब्रिस्तान में लाश को सुलाया जाता है। कब्र में दफनाया जाता है वैसे ही लाश के समान हमें अपनी दुश्मनी को, सारे तनावों को, सारे दुर्गुणों को, सारी बीमारियों को/जो भी आपसी तनाव की जड़ है, आज यदि उसे दफनाने की हम कोशिश करेंगे तो अपने जीवन को सुखी रूप से जीने के अभ्यासी बन सकते हैं। ये पर्व संवत्सरी हमारी आत्मा को पवित्र करने वाला है–

पर्व पर्युषण राज, आपका स्वागत है।
सजे आत्म सुसाज, आपका स्वागत है।।
पर्व पर्युषण जब भी आते,
प्रेम शांति संदेश सुनाते,
गले मिले सब आज, आपका स्वागत है, पर्व पर्युषण...।

आओ हम सब मिलकर गाएं,
'राम' प्रेम की गंग बहाएं,
आए पर्व सिरताज, आपका स्वागत है, पर्व पर्युषण...।

पर्व पर्युषण राज/सरताज और पर्युषणों का भी ताज संवत्सरी पर्व। इस में भी हम अपने पापों को यदि नहीं धो सके, वैर-वैमनस्य को नहीं धो सके तो हमारे सम्यक्त्व सलिल/सरिता रूपी भावों का प्रवाह कैसे सम्यक् बन पाएगा? हम विचार करें। आचार्य पूज्य श्री जवाहरलाल जी म.सा. जिन्होंने हमारे पर बड़ा उपकार किया है। उन्होंने एक नक्शा बनाया और गणेशाचार्य ने उसकी नींव रखी कि एक आचार्य के नेश्राय में साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका रहें। आचार्य देव श्री नानालाल जी म.सा. ने जो भवन खड़ा किया जिसमें आज हम सुख की सांस ले रहे हैं। जिसमें सुख का आनन्द अनुभव कर रहे हैं। उन महापुरुषों का जितना गुणानुवाद किया जाए जितना उपकार माना जाए वह कम होगा। हम सब छद्मस्थ हैं और छद्मस्थों से कहीं-न-कहीं त्रुटि हो जाती है। कभी जान-बूझकर होती है तो कभी हम नहीं जानते हैं। किंतु अनजान में भी वैसे कुछ प्रसंग बन जाते हैं जिसको सामने वाला व्यक्ति दूसरे रूप में ले लेता है। मेरा भाव वैसा नहीं है। किंतु सामने वाले ने बात को वैसा समझ लिया और वह समझ जैसे ही बदली कि वहां तनाव की स्थिति बन गई।

यदि हम चाहते हैं कि अच्छाइयां हमारे जीवन में बढ़े, हमारे गुणों का संवर्धन हो तो इसके लिए आज हमें पूरी तैयारी कर लेनी चाहिए कि पुरानी जितनी भी बातों के पोटले हैं, किसी की गलती है, किसी की त्रुटि है मेरी गलतियां भी हो सकती हैं। दूसरे की पांच गलतियां हैं, मेरी हजार गलतियां हैं या मेरी पांच गलतियां हैं और दूसरे की हजार गलतियां हो सकती हैं। उन सारी गलतियों को दफना दें। फिर कभी हमारे मुंह में, दिमाग में वह बात नहीं आनी चाहिए। तब तो हम शांति प्राप्त कर सकते हैं। तब तो हम समाधि प्राप्त कर सकते हैं। अन्यथा औपचारिक रूप से यह संवत्सरी मनाएंगे कि एक साल, बारह महीने, 365 दिन में किसी प्रकार के अपराध हुए हैं तो 'मिच्छा मि दुक्कडं'। यह खमत खामणा हम करते ही रहेंगे पर खड़े वहीं के वहीं ही रहेंगे।

गुरुदेव फरमाया करते थे कि एक व्यक्ति पंचों की जाजम पर शिकायत लेकर पहुंचा। उसने पंचों को अपनी शिकायत बताई कि साहब, मेरे पड़ोसी ने अनधिकार परनाला निकाला है। वहां परनाला से पानी मेरे घर की दीवार

के पास गिरता है। मेरी दीवार के पास लगातार पानी गिरता है। यदि इसी तरह पानी गिरता रहा तो एक दिन मेरे घर की दीवार ढह जाएगी। मेरी दीवार टूट जाएगी। मैंने उसको कितनी ही बार समझाने का प्रयत्न किया। किंतु वह बोल रहा है कि परनाला तो यहीं पर रहेगा। इसलिए मुझे आज आप पंचों की शरण में आना पड़ा है। पंचों ने दोनों तरफ की बातों को सुना और फिर फैसला यह किया कि परनाला को बदल दिया जाए ताकि शांति बनी रहे। दोनों पड़ोसी हैं। और मिल-जुलकर रहना है तो दोनों के बीच के वैमनस्य को समाप्त करना पड़ेगा। इसके लिए आपको परनाला दूसरी तरफ करना पड़ेगा। पड़ोसी है तो पड़ोसी धर्म का निर्वाह हो जाए। वह भाई जिसने परनाला लगवाया था वह कहता है कि पंचों का निर्णय सिर माथे पर है किंतु परनाला तो वहीं पर पड़ेगा। वह कहता है कि पंच जो कहते हैं वह मंजूर है। पंचों का निर्णय सिर माथे है। किंतु परनाला वहीं पड़ेगा। क्या हुआ? क्या हो गया?

संवत्सरी पर्व पर मुंह से केवल खमत खामणा कहेंगे तो ऊपर से तो बात हो जाएगी। किंतु वे बातों की गांठें हैं वे तो नहीं खुलेंगी। क्या होगा? नदी बह रही है और डैम बांध दिया गया। पानी रुकेगा या बहेगा? (प्रत्युत्तर– रुकेगा) और जहां पर पानी 365 दिन बना रहेगा वह जगह बंजर बनेगी या फिर उपजाऊ बनेगी? वह जगह बंजर बन जाएगी। निरंतर पानी रहने से वह जमीन बंजर हो जाएगी। वैसे ही निरंतर हमारे भीतर प्रद्वेष के भाव बने रहे और ये गांठें बनी रहीं तो मैं नहीं कह सकता कि क्या-क्या बीमारियां हमारे शरीर में व्याप्त हो जाएंगी? और ऐसी स्थिति में सुख और शांति की हमें सपने में भी आशा नहीं करनी चाहिए। जब तक यह छूटेगा नहीं तब तक जीवन में शांति का संचार होने वाला नहीं है। डैम में यदि पानी ज्यादा इकट्ठा हो गया तो वह कितने को डुबोने वाला हो जाएगा? ऐसे समय में डैम के दरवाजे नहीं खोले गये तो कितने ही गांव डूब जाएंगे। कितने ही लोग डूब जाएंगे और कितने ही गांव जलमग्न हो जाएंगे। वैसे ही हमारे दरवाजे बंद रहे, भीतर ही भीतर दोष बढ़ते चले गए, भीतर ही भीतर ईर्ष्या बढ़ती चली गई तो पता नहीं कितने लोगों को जलाएगी। कितने लोग तबाह हो जाएंगे। शांति और सुख की आशा ही बेकार है।

दरवाजे खोल दें। आज संवत्सरी पर्व पर भीतर के सारे विकारों को बाहर निकाल दें। ऐसी हिम्मत यदि हम कर पाएंगे तो निश्चित रूप से हमारी सम्यक् आराधना हो पाएगी। हम तीर्थंकर देवों की आज्ञा के आराधक बनेंगे।

'जो अवसमइ तस्स होई आराहणा' वस्तुतः, जो उपशम करता है उसकी आराधना होती है। जो उपशम नहीं करता है उसकी आराधना नहीं हो पाएगी। मैं बोल रहा हूं, मैं भी दोषों का पुतला हूं। कई बार हूं। यह यह मनोगत भावों में नहीं है। जानकारी में नहीं है। किंतु अनजान अवस्था में भी कभी किसी प्रकार की अरिहंत भगवान और सिद्ध भगवान् की किसी भी कारण से यदि मैंने अवज्ञा की हो या कोई बात बन गई हो तो मैं क्षमा चाहता हूं। उन अरिहंत और सिद्ध भगवंतों की प्रत्यक्ष उपस्थिति तो नहीं है किंतु परोक्ष है। वे हमारे से प्रत्यक्ष नहीं है किंतु हम उनके प्रत्यक्ष हैं। मैं उनसे भी निवेदन करूंगा कि मेरे द्वारा हुई सारी अवज्ञा क्षमा करें। हमें पता है कि अरिहंत भगवान क्षमाशील हैं और वे हमें अवश्य ही क्षमा करते हैं। हमारे जीवन में सुधार आए ऐसा हम लक्ष्य रखते हैं।

आचार्य सुधर्मा स्वामी से लेकर जो आचार्य परम्परा रही उस आचार्य परम्परा से हमें तीर्थंकर देवों की वाणी आज तक प्राप्त होती रही है। इससे हम साधना की दिशा में गतिशील होते रहे हैं। वह आगम वाणी हमें आचार्य परंपरा से मिलती रही है। उन समग्र आचार्यों से यदि उनकी धारणा, प्ररूपणा, स्पर्शना हम नहीं समझ पाए हों और उससे कुछ विपरीत हमारा कथन हो गया हो, हमारी श्रद्धा में कोई अंतर आ गया हो, हम समझ नहीं पाए हों तो उन सब से क्षमा याचना करता हूं। आचार्य श्री हुक्मीचंदजी म.सा. जिन्होंने अनेक कठिनाइयों को झेला। मान-सम्मान को पीठ दी और अपमान-तिरस्कार के घूंट पीये किंतु शांत रहे और समाधि में रहे। उनका तो एक ही लक्ष्य था आत्मकल्याण करना और जिनकी परम्परा को हम अभी उपाध्याय श्री के मुखारविन्द से सुन गए हैं मैं वापस उसको दोहराना नहीं चाहता हूं। उन समग्र आचार्यों से क्षमा याचना चाहूंगा और पूज्य गुरुदेव श्री नानालाल जी म.सा. जिनके कई अरमान रहे होंगे। जिनकी कई आकांक्षाएं रही होंगी। जिनकी कई भावनाएं रही होंगी। उन्होंने जो मुझे जिम्मेदारी सौंपी थी मैं उसका कितना निर्वाह कर पाया। क्या कर पाया, क्या नहीं कर पाया? एक छोटी-सी कड़ी के माध्यम से मैं कहना चाहूंगा।

नाना तेरे गुण गुलशन में खिल रहे पुष्प महान,
गौरव गाता सकल जहान।
ज्ञान-क्रिया के शुभ संगम से पूर्ण हुए अरमान,
जन-जन करता तव यश गान॥

आचार्य देवों के जो अरमान रहे हों, मैं जितना समझ पाया, जो मेरी समझ, मेरी बुद्धि में मैं ला पाया उसके अनुकूल व्यवहार करने का लक्ष्य रहा है। 'ज्ञान क्रिया का संगम' जो इस संप्रदाय की मुख्य पहचान रही, उस दिशा में वैसा ही प्रयत्न रहा–संयम की शुद्ध पालना और सम्यक् आराधना हेतु साधु जीवन को स्वीकार करना। साधु जीवन स्वीकार करना आसान है। किंतु साधु जीवन स्वीकार करने के बाद उसकी पालना करना जटिल होता है। जोश-जोश में तपस्या कर लेते हैं किंतु पारणा जटिल होता है। वैसे ही कोई साधु जीवन भावुकता से ले लेता है किंतु पालना करने के समय फिर इधर-उधर बगलें झांकने लग जाता है। आचार्य पूज्य श्री जवाहर लाल जी म.सा., आचार्य पूज्य श्री गणेशलालजी म.सा. और आचार्य पूज्य नानेश ने जो सपना संजोया था, उनके बताए पदचिह्नों पर चलने का प्रयत्न किया और आज जन समुदाय अनुभव कर रहा है। इसलिए जहां तक विश्वास है कि हम आचार्य श्री के विचारों से अलग नहीं बढ़े होंगे। कदाचित् उनके अरमान के या उनकी विचारधारा से मेरा कोई कदम आगे-पीछे बढ़ा हो तो, मैं उन सभी आचार्य भगवन्तों के चरणों में क्षमा याचना करना चाहूंगा।

अभी पूज्य महासती श्री मंजुलाश्रीजी म.सा. बोल ही गए कि 'अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता है।' साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका चारों तीर्थ एक आज्ञा, एक आदेश और एक स्वर में स्वर मिलाकर तैयार हैं। महासतीजी ने अभी बताया था कि राजा ने कहा कि जो पलंग पर सोयेगा उसे मंत्री बना दिया जाएगा। किंतु रातभर पांच-सौ व्यक्ति लड़ते रहे तो आपस में लड़ते ही रह गए। हो सकता है ऐसा भी, क्योंकि जब मोठ और मूंग आता है तो उसमें कोरडू मिल सकता है। एक-दो बोरे मूंग आए हैं तो कोरडू मिल सकता है। वह तो हो सकता है। यह साधुमार्गी संघ श्रद्धा की दृष्टि से एक आज्ञा, एक निर्देश के अनुसार चलने वाला है। किंतु एक बात कहूंगा कि उत्क्रांति को क्यों नहीं स्वीकार कर रहे हैं? होना चाहिए। हो सकता है वह उनकी समझ में नहीं आया। या यों कहें कि कर्मों का वैसा क्षयोपशम नहीं बन पाया। सच्चे मायने में विचार करें तो भगवान महावीर ने देशना दी उस समय कितने व्यक्ति साधु बन गए? कितने श्रावक बन गए? सारे लोग साधु-साध्वी और श्रावक-श्राविका नहीं बन गए। सारे लोग 12 व्रती श्रावक नहीं बन पाए। जिसका सामर्थ्य होगा वे स्वीकार करेंगे और हमारा भी लक्ष्य बने। हम समझें। क्या कठिनाई आ रही है, क्या तकलीफ हो रही है? किसी को जानकारी करना

है उत्क्रांति के क्षेत्र में कि उत्क्रांति के विषय में हमको यह कठिनाई आ रही है। यह समस्या खड़ी हो रही है। पांच सितारा होटल आदि जो भी तो आप संजय मुनि जी से संपर्क कर सकते हैं।

यदि सचमुच ही हकीकत में हम स्वीकार करना चाहें तो संतों का समय लें। यदि स्वीकार नहीं ही करना है तो संतों का समय लगाने में कोई मतलब नहीं है (सभा–तहत्ति) अभी आवाज कहां से उठी? दक्षिण के लोग कहते हैं, दक्षिण में धर्म रहेगा। भद्रबाहु स्वामी ने कहा कि दक्षिण में उठी हुई धर्म की लहर उत्तर, पूर्व और पश्चिम में फैलाएंगे। ये दक्षिण वालों की जिम्मेदारी है। दक्षिण वाले ज्यादा आवाज लगाते हैं तो उनको ही यह कहना है। आप सोच लेना कि क्या करना है आपको? मेरा कोई रोल नहीं है। अभी महासती जी ने कहा था कि हर बात मुझे क्यों बोलनी पड़े? इस चतुर्विध संघ में जहां तक विचार करता हूं मैं, तो बहुत कम मेरा पुरुषार्थ रहा है। मेरा ज्यादा परिश्रम नहीं है। आप देख ही रहे होंगे कि दिन में एक मांगलिक प्रार्थना में बोलता हूं और एक मांगलिक व्याख्यान सुनाने के समय बोल देता हूं। दोपहर में वाचनी के समय कभी-कभार बोल देता हूं और कभी रात्रि में हो सके तो प्रश्नोत्तरी में भाग ले लेता हूं। सारे साधु स्वयं में सक्षम हैं। मुझे कुछ करने की आवश्यकता ही नहीं पड़ती है। कुछ भी मुझे बोलने या करने की आवश्यकता ही नहीं रहती क्योंकि सभी साधु और साध्वियां सारे कार्यों को करने में सक्षम हैं। ये सारे अपने काम में निपुणता रखते हैं। सभी गुणवान हैं। मैं क्या निर्देश दूं? इसलिए एक कड़ी अभी गाई कि 'नाना तेरे गुण गुलशन में खिल रहे पुष्प महान्'। ये एक से एक बढ़कर हैं।

ये पुष्प खिल रहे हैं और सारे पुष्पों की महक, सुगंध है। इस बगीचे की ये सुगंध पूरे जैन समाज को सुगंधित कर रही है। यहां के श्रावक और श्राविकाएं भी आज्ञाकारी, निष्ठावान व कर्मठ हैं। एक ही इशारे में और एक इशारे के साथ तत्पर हो जाते हैं। हजारों हजार लोग आज भी सकारात्मक कार सेवा से इस प्रकार से जुड़े हैं और इस प्रकार अपनी शक्ति का उपयोग कर रहे हैं। यह चतुर्विध संघ श्रावक-श्राविकाएं, साधु-साध्वियां उन सबसे कभी तीखे स्वभाव या कभी रूखे स्वभाव से कुछ कहा हो या मैंने इस स्वभाव के कारण कइयों के दिल दुखाये हों तो उन सभी साधु-साध्वियों से क्षमा याचना करना चाहूंगा। उसी प्रकार से जोधपुर संघ और बाहर से पहुंचे हुए अनेक संघ, साधुमार्गी संघ के जितने भी श्रावक-श्राविका हैं जो जितनी

अपेक्षा और अरमान रखते हैं किंतु पिछले कुछ वर्षों से उतना सम्पर्क नहीं हो पाता। अपने कार्यों में व्यस्त रहता हूं इसके बावजूद आप जैसी श्रद्धा भक्ति बनाकर जिस प्रकार से आप अपनी उपस्थिति दर्ज कर रहे हैं। अपनी भक्ति प्रस्तुत कर रहे हैं उन सारी स्थितियों में मेरे से अपेक्षा रही होगी। किसी भी कारण से यदि किसी के दिल में किसी प्रकार के भाव पैदा हुए हों। कई स्थानीय घरों में साधु-साध्वियों का गोचरी-पानी हेतु नहीं पहुंचना हो पाया हो तो आप सभी अपने दिल को बड़ा करेंगे। उदार करेंगे और हृदय से वह क्षमा की भावना प्रवाहित करेंगे।

क्षमा के गीत सब गाओ, संवत्सरी पर्व आया है, संवत्सरी पर्व आया है।

संवत्सरी पर्व आज आया है। आज यदि हम क्षमा नहीं कर पाए, आगम वचन के अनुसार 15 दिन में यदि साधु खमत खामणा नहीं करे तो उसको शांति और समाधि नहीं मिलेगी और चार महीने में श्रावक खमत खामणा करके अपने दिल को शुद्ध नहीं बनाये तो उस श्रावक के व्रतों की आराधना कठिन है। और सम्यक् दृष्टि भाव, जो बड़ा दुर्लभ है, जिसके बिना मोक्ष का कोई रास्ता नहीं है। सबसे पहले सम्यक् दृष्टि भाव आवश्यक है। यदि सालभर में संवत्सरी के समय में हमारा मन हलका नहीं हुआ, हमारी गांठें नहीं खुलीं और द्वेष बना रह गया और जिस किसी भी कारण से तनाव बना हुआ है, उस तनाव को नहीं हटा पाए तो हमारा सम्यक्त्व भी सुरक्षित रह पाएगा या नहीं रह पाएगा? नहीं कहा जा सकता। इसलिए प्रयत्नशील बनें कि आज हमारी धुलाई हो जाए। हमारी आत्मा और हमारा चरित्र पवित्र हो जाना चाहिए। हम एक भी जर्म्स नहीं रखें। अगर एक भी जर्म्स अंदर रह गया तो कैंसर की बीमारी कितनी फैल जाएगी? इसलिए सारे कीटाणुओं को, सारे जर्म्स को हटाकर हम अपने चरित्र को साफ करने का प्रयत्न करेंगे और उदार दिल रखकर, उदार बनकर हम साधु-साध्वियों को क्षमा करने का प्रयत्न करेंगे।

मेरे कानों में एक बात पड़ी थी। वह सच है या झूठ मैं नहीं कह सकता हूं। किंतु इतना अवश्य है कि यदि किसी परिवार में कोई भी बात हो तो आप विचार करो। गजसुकुमाल के 99 लाख भव पहले क्या हुआ था? गजसुकुमाल के सिर पर जलती हुई बाटियां छोड़ दी थी। वह पाप नहीं धुला। कितने समय के बाद वे उदय में आए? 99 लाख भव के बाद उदय में आए। शास्त्र कहता है कि अनेक लाख भव और कहानियों में कहते हैं कि 99

लाख भव। हमारे मन में भी किसी प्रकार की, किसी से भी, परिवार वालों से भी यदि कोई बात हो गई है तो यह पर्युषण-पर्व/महापर्व संवत्सरी का हमें अवसर मिला है। हम उन सभी से क्षमा याचना कर लें। सामने वाला क्या प्रतिक्रिया करता है? वह भी क्षमा याचना करता है या नहीं करता है यह बाद की सोच है। किंतु इतना अवश्य हो कि जो मैल हमारी सोच पर, हमारे मन पर लगा हुआ है वह आज धुल जाना चाहिए। हमारे मन की चद्दर धुल जानी चाहिए। मैली नहीं रहनी चाहिए। हम यदि ऐसा ही सोचते रहे कि हां करूंगा, बाद में करूंगा, वो पहले क्षमा याचना कर ले तो अच्छा है और इन सब बातों में जिंदगी चली गई तो वह मैल हमारी आत्मा पर रह जाएगा। यदि वह हमारी आत्मा पर रह गया तो कितने जन्मों तक वह हमारे साथ में रहेगा? यह हम विचार करेंगे। चाहे छोटे हों या बड़े हों सभी को माफ करने का भाव हम रखें। यदि कोई छोटा हमें चांटा भी लगा दे तो बड़े बनकर, बड़प्पन रखकर हम माफ करने का भाव रखें। हम जिनशासन के रक्षक बनें। हम जिनशासन की सेवा के लिए अपने प्राणों का उत्सर्ग करने के लिए तैयार रहें। हमारे भीतर में जो पकड़ है। जो विकार है उसको क्यों नहीं हम छोड़ सकते हैं? हम सारे पुराने विकारों को छोड़ेंगे। ऐसी ही भावना हम हमारे भीतर रखेंगे। ऐसी ही भावना हमारे भीतर में रहनी चाहिए तो हम धर्म की आराधना की दिशा में आगे बढ़ेंगे।

03 सितम्बर, 2019
(पर्युषण पर्व का सातवां दिन)

15

ऐसी हो अन्तर की आवाज

महावीर भगवान देना सद्ज्ञान जी,
मैं तो हूं नादान प्रभु, तेरी ही संतान जी॥
कर्मों ने घेरा छाया घोर अंधकार है,
राह दिखाना प्रभु तेरा ही आधार है,
तू ही माता पिता तू ही मेरे प्राण जी॥ मैं तो...

विषयों की गलियों में भमा दिन रैन हूं
बहुत लुभाया पर पाया नहीं चैन हूं,
पुद्गल प्रीत करना मेरा ही अज्ञान जी॥ मैं तो...

माया मद क्रोध मुझे लोभ ने सताया है,
बहुत रुलाया बहुविध से जलाया है,
भूला शक्ति चेतना की किया न सन्धान जी॥ मैं तो...

मोह भंवर घिरा चेतन चहुं ओर है,
चला तो बहुत पर हुई नहीं भोर है,
पृच्छा नहीं प्रेक्षा नहीं राह अनजान जी॥ मैं तो...

चर्चाएं आत्मा की करी रसदार है,
आत्मा की राह पर चलना असिधार है,
'राम' रमाया नहीं रहा अनजान जी॥ मैं तो...

पैर में कांटा गड़ गया हो। उसमें पीप पड़ गई हो तो चलना दुरूह हो जाता है। वही कांटा निकाल दिया गया। पीप निकाल दी गई तो घाव भर गया। उसके बाद कैसी अनुभूति होगी? जिसको पीड़ा हुई है, जिसको कांटा चुभा है और वह निकाला है, वह उसका अनुभव कर सकता है कि कांटा

गड़े रहने पर क्या तकलीफ होती है और कांटे के निकल जाने के बाद कैसा अच्छा लगता है। करोड़ों का कर्ज सिर पर हो तो कितना बोझ लगता है? और सारा कर्ज उतर जाए तो कैसे आनन्द की अनुभूति होती है? शरीर में कोई बीमारी आ गई और यथा योग्य इलाज-उपचार से वह बीमारी दूर हो जाए तो कैसी अनुभूति होती है? वह जैसी अनुभूति होती है वैसे ही क्षमा के माध्यम से भी हमें बहुत हलकेपन की अनुभूति होनी चाहिए।

कांटे के रूप में तीन शल्य होते हैं जो हमारे को निरंतर चुभते रहते हैं। उन शल्यों का उद्धरण/उन शल्यों को निकालने का कार्य क्षमापना के माध्यम से होता है और क्षमापना की बात कल मैं बोल गया कि हमारी जितनी भी बुराइयां/हमारी जितनी भी टेंशन है, जितने भी तनाव हैं उन सब को कब्र में डाल दें। कब्र में गाड़ दें। यदि हम उस स्थिति में पहुंचे होंगे तो निश्चित ही हमें एक अलग ही अनुभूति होगी। क्षमा शब्द के अर्थ पर जब विचार करते हैं तो इसमें दो अक्षर हैं 'क्ष और मा', 'क्ष' का अर्थ होता है क्षरण और 'मा' का अर्थ होता है मत करो। अर्थात् आत्मा के सद्गुणों का ह्रास मत करो। क्षरण मत करो। उसे नष्ट मत होने दो। आत्मा के सद्गुण कैसे नष्ट होते हैं? कैसे उनका दुरुपयोग होता है? कैसे हम संसार में कर्मों का बंध और उपार्जन करने वाले बन जाते हैं? राग-द्वेष, कषाय, विषय, आसक्ति; ये सारे आत्मा के सद्गुणों का क्षरण करते हैं। इनके द्वारा आत्मा के सद्गुण बह जाते हैं। जैसे मिट्टी बहती है पानी के साथ, वैसे ही राग-द्वेष और कषायों के साथ आत्मा के सद्गुण, वे बह जाते हैं। उस क्षरण को रोका जाए। जैसे जमीन के क्षरण को रोकने के लिए वृक्षारोपण का कार्यक्रम होता है ताकि उस वृक्षारोपण से जमीन का कटाव, जमीन का क्षरण रुकेगा।

वैसे हैं यह पर्व। चाहे पर्युषण-पर्व है चाहे चातुर्मास पर्व है— ये पर्व हमारे आत्म गुणों के क्षरण को रोकने के लिए उपस्थित होते हैं। इन पर्वों की सम्यक् आराधना यदि हमारे द्वारा संपन्न होती है तो हम अपने गुणों के क्षरण को रोकने में समर्थ हो सकते हैं। अन्यथा द्रव्य रूप से हमारी पर्व आराधना हो जाएगी किंतु भावों से जो लाभ हमें मिलना चाहिए वह लाभ हम नहीं उठा पाएंगे। मैं कई बार, कुंडेरा-श्यामपुरा की एक बात कहता हूं जो पूज्य गुरुदेव के वहां विराजने पर हुई थी। प्रायः करके जहां लंबा रुकना होता था, गुरुदेव विहार के पूर्व क्षमा याचना की बात फरमाते थे। उसी दौरान गुरुदेव ने कहा कि किसी भी परिवार में आपस में कोई भी तनाव की बात हो, कोई आपसी

क्षरण की बात बन गई है, कोई गांठ बंध गई हो तो मेरी झोली में डाल देना। मैं साधु हूं और हम साधु विहार करने वाले होते हैं। घुमक्कड़ होते हैं। विहार करते हैं और विहार में चलते हुए किसी जगह परठ देंगे। आप हलके हो जाएंगे और आप शांति और समाधि का अनुभव करेंगे। किसी ने कहा कि दो भाइयों में अनबन है। गुरुदेव ने बात की तो ज्यादा कुछ लगा नहीं। लोगों ने कहा कि गुरुदेव! भाइयों में इतनी बात नहीं है। इनकी जड़ें गहरी हैं और झगड़े की जड़ों के रूप में बहिनें हैं। देवरानी और जेठानी में जब तक यह चीज दूर नहीं होती है भाइयों का अलगाव बना रहेगा। गुरुदेव ने एक भाई की साक्षी से बात की। वह देवरानी जो थी उससे बात की तो वह सरलता से तैयार हो गई। जेठानी से बात की तो जेठानी कहने लगी कि म.सा./गुरुदेव! आप कहो तो तेला कर लूं, बेला कर लूं। आप कहें तो अठाई कर लूंगी। आप कहो तो तपस्या कर लूंगी। किंतु देवरानी के मोढ़े पर तो नहीं चढ़ूंगी। देवरानी के दरवाजे पर पैर नहीं रखूंगी। आप चाहो तो बेला करा दो। आप चाहो तो तेला करा दो। आप फरमायेंगे तो तप कर लूंगी। किंतु देवरानी के दरवाजे पर नहीं चढ़ूंगी।

अभीचि कुमार का एक वर्णन आता है जिसने उदायन मुनि से वैर की गांठ बांध ली। वह श्रावक के 12 व्रत की आराधना कर रहा है। संवत्सरी के समय प्रतिक्रमण करते हुए कहता है कि भगवन्! उदायन मुनि को छोड़कर बाकी सारे मुनियों से मैं क्षमा याचना करता हूं। एक गांठ उसके मन में बनी रह गई। एक कसक उसके मन में बनी रह गई। उस गांठ के कारण वह आराधक नहीं बन सका वह विराधक हो गया। सोच सकते हैं कि 12 व्रत की पालना ही नहीं, वह साधु भी बन जाए किंतु यदि उसकी गांठ नहीं खुले तो वह साधु बना हुआ रहेगा लेकिन आराधक नहीं हो पाएगा।

स्कूल में पढ़ने वाला छात्र, छात्र तो होता है। किंतु एक कक्षा में एक साल, दो साल, तीन साल रहता है तो ऐसा नहीं है कि वह छात्र नहीं है। पढ़ाई की बात अलग है। पढ़ाई की बात जब हमारे सामने आती है तो हमें स्पष्ट दिखाई देता है कि हर वर्ष विद्यार्थी-छात्र को अगली कक्षा में जाना चाहिए। यदि अगली कक्षा में नहीं जा पाता है तो उसे भी अच्छा नहीं लगता है। अरे! तू फेल हो गया? अरे! तू फेल हो गया? उसको भी अच्छा नहीं लगता है। दूसरी जगह भी ऐसी चर्चाएं हो जाया करती हैं। वह विद्यार्थी है किंतु अनुत्तीर्ण विद्यार्थी है। उत्तीर्ण नहीं हो पाया है। हमने इतना समय लगाया पर्युषण की आराधना में, तपस्या में, सामायिक में, पौषध में फिर भी यदि

हमारी गांठें बनी रहे तो हम छात्र तो बने रहेंगे पर उत्तीर्ण नहीं हो सकेंगे। तो यह पढ़ाई कितनी कारगर हो पाएगी? प्रत्येक विद्यार्थी या उसका अभिभावक, यह चाहेंगे कि उत्तीर्ण हो जाए। वैसे ही चाहे साधु हो, चाहे श्रावक हो; उसके मन में आराधना की ललक होनी चाहिए कि मैं आराधक बनूं। आराधक बनेगा वह मोक्ष में जाएगा। विराधक बनने वाला संसार में भटकेगा।

अब हमें निर्णय करना है कि हमें आराधक की श्रेणी को प्राप्त करना है या विराधक की श्रेणी में जाना है। विराधक का बैज लेकर घूमना चाहेंगे या आराधक का बैज लेकर घूमना चाहेंगे? आराधना को वरना चाहेंगे या विराधना को? हम आराधना की श्रेणी को वरना चाहेंगे। आराधक के रूप में उत्तीर्ण होना चाहेंगे। मुक्ति के शाश्वत सुख की प्राप्ति की आकांक्षा है तो हमें अपने आपको आराधक बनाना चाहिए। आराधना के शिखर पर हमें आरूढ़ होना चाहिए और उसके लिए एक ही मार्ग है कि सारी बीती हुई बातों को हम समाप्त कर दें। बीती हुई बातें चाहे कितनी भी भीतर में कष्टदायी रही होंगी किंतु एक दिन तो उन्हें हमें भूलना ही पड़ेगा। जब तक नहीं भूलेंगे, जब तक उनको निरस्त नहीं करेंगे वह बनी रहेगी। तब तक हमारे संसार की जड़ें बनी रहेंगी। जिसको संसार की जड़ को हरी रखना है उसके लिए उपदेश कारगर नहीं है। उसके लिए उपदेश की आवश्यकता नहीं है। किंतु जो संसार की जड़ को हरी नहीं रखना चाहते हैं और मुक्ति की दिशा में प्रयाण करना चाहते हैं—मुक्ति की दिशा में गतिशील होना चाहते हैं उनके लिए एक ही बात है कि वे अपनी उपशमना करें। अपने दिल को हलका करें। अपने दिल को साफ-सुथरा करें और जो कुछ भी हो गया है किसी के साथ, किसी के द्वारा—उन सब बातों को निरस्त करें। 'मिच्छा मि दुक्कड़ं' कहते हुए हम क्षमा याचना का सही स्वरूप उपस्थित करेंगे तो हम अवश्यमेव आराधक बनेंगे। आराधना के शिखर पर आरूढ़ होंगे और हम मुक्ति को वरेंगे। चाहे एक भव, दो भव, चार भव, पांच भव, सात भव और अधिकतम 15 भवों में हम मुक्ति को प्राप्त करने में समर्थ हो जाएंगे। ऐसी आराधना की श्रेणी में/शिखर पर आरूढ़ होने के लिए कटिबद्ध बनें और हमारे भीतर उस प्रकार की शक्ति जगे कि हम अपने भीतर के सारे वैर को समाप्त कर दें। अपने आप को धन्य बना लें। इतना ही कहते हुए अपनी वाणी को विराम देता हूं।

04 सितम्बर, 2019
(संवत्सरी पर्व)